UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180643
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81.6/C49Pa Accession No. G.H. 650

Author चतुर्वेदी, जगन्नाथ प्रसाद।

Title पद्यमालिका। 1934.

This book should be returned on or before the date last marked below

पद्यमाला

अर्थात्

स्फुट पद्यों का संग्रह

अनेक पुस्तकों के रचयिता, द्वादश हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन
के सभापति, हास्य-रसावतार

स्वर्गीय पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी

साहित्य-भूषण-रचित

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९३९

प्रथम संस्करण] [मूल्य ।।।)

Printed and published by K. Mittra, at
The Indian Press, Ltd.
ALLAHABAD

समर्पण

त्वदीयं वस्तु गोविन्द
तुभ्यमेव समर्पये ।

श्रावण शुक्ल १५ | केवल तुम्हारा ही
संवत् १९९६ | जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी

विषय-सूची

प्रसून विषय		पृष्ठ
१—ईश-वन्दना	... ...	१
२—भारत-वन्दना	... ...	७
३—हिन्दी-गुणगान और साहित्य-सङ्कल्प	... ...	१६
४—ऋतु-वर्णन	... ...	२४
५—नीति और उपदेश	... ...	२९
६—शोकोक्तियाँ	... ...	३६
७—स्वागत-गान !	... ...	४२
८—हास-परिहास	... ...	४८
९—विविध	... ...	११०

पद्यमाला

प्रथम प्रसून

१—ईश-वन्दना

दोहा

जय महेस करुनायतन, जय जय जय सुखकन्द।
जय गिरिजापति संभु की, जयति सच्चिदानन्द ॥ १ ॥
गंगा सोहति सीस पै, कर डमरू उर माल।
बसै सदा मेरे हिये, संकर परम दयाल ॥ २ ॥
(सं० १९५०)

सिद्धिसदन बारनबदन, विघ्नहरन सुखकन्द।
लम्बोदर गनपति सदा, दमन करौ दुख दन्द ॥ ३ ॥
सुन्दर रानी राधिका, सुन्दर हैं नँदलाल।
सुन्दर काज सँवारिहैं, वेई कृष्ण कृपाल ॥ ४ ॥
अरुन-बदन लोचन-कमल, पवन तनय हनुमान।
रामचरन - पंकज - मधुप, करहु सदा कल्यान ॥ ५ ॥
(सं० १९५३)

अलख अगोचर अकथ जो, अगम अनूप अनन्त।
सोई अज व्यापक प्रभू, मंगल नित्य करन्त ॥ ६ ॥
(सं० १९५४)

गिरिजा गिरिजानाथ जुत, बानी अरथ समान।
जिनके सुमिरत होत है, सब्दारथ कौ ज्ञान ॥ ७ ॥

(सं० १९५६)

जाहि देखि चाहत नहीं, कछु देखन मन मोर।
बसै सदा मेरे द्वगन, सोई नन्दकिसोर ॥ ८ ॥

(सं० १९६५)

जन्मभूमि जननी जनक, जह्नु-सुता जगनाथ।
दुर्लभ पंच जकार हैं, इनहिं नवाओ माथ ॥ ९ ॥

(सं० १९६८)

नन्द-नँदन सोभा-सदन, कमल बदन अभिराम।
नैनन में नित ही नचै, सोई नटवर स्याम ॥१०॥

(सं० १९७३)

जसुदा जी की गोद में, जो खेलत इतराय।
नन्द-तनय सोई सदा, मेरी होय सहाय ॥११॥

(सं० १९७२)

करत जु पालन अन्न सों, यह सगरो संसार।
सोई कृष्ण किसान कों, बन्दौं बारम्बार ॥१२॥

(सं० १९८२)

विपद-विदारन दुख-दलन, सुख-संपत-दातार।
बन्दौं सीताराम के, पद-पंकज-प्रतिवार ॥१३॥
जो निज भक्तन कौ करत, साँचौ सदा सुधार।
सोइ सुधारक कृष्ण कों, बन्दौं बारम्बार ॥१४॥

(सं० १९८७)

प्रकृति नटी नट है पुरुष, रंगभूमि संसार।
नाटक नित व्यवहार सब, प्रभु ही देखनहार ॥१५॥

(सं० १९८०)

रोला

जो कुंदेन्दु तुषार हार सम सुन्दर सोहति।
धवल कमल आसीन सदा सुरगन मन मोहति,
सादर सीस झुकाय सारदा सुमिरौं सोई;
विमल विवेक विचार बुद्धि जाके बल होई।
बीना-पानी बानि करौ बानी कल्यानी;
ललित मनोरम भाव भरी औ नवरस सानी॥

(सं० १९७९)

विनय-प्रार्थना

(१)

दीनबन्धु दीननाथ दीनन-हितकारी।
करुनामय अति उदार,
लेत भक्तजन उबार,
सुनि कै उनकी पुकार
तीन-ताप-हारी।
जनम मरन दुःख घोर,
काम क्रोध मोह जोर,
दिवस रैन साँझ भोर
छाई अँधियारी।
यह भवसागर अपार
सूझत नहिं वार पार
जगन्नाथ के अधार
सुनिए गिरिधारी॥

(सं० १९७५)

(२)

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
छोड़ और जगत् काम,
लोभ मोह वाम दाम,
यहाँ नाम आठ जाम
सभी ठाम जपा करे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
(सं० १९७४)

प्रार्थनापंचक

त्रिभंगी

(३)

बन्दौं प्रभु-चरना, संकट-हरना, असरन-सरना, सुखदाता ।
जग-नाटक-नायक, दीन-सहायक, आश्रय-दायक, भयत्राता ।
हरि का गुन गाया, अद्भुत माया, पार न पाया, विनय करूँ ।
सक्ती अब दीजै, भक्ती लीजै, मुक्ती कीजै, चरन धरूँ ॥
(सं० १९८०)

(४)

जय जय रघुनन्दन, असुर-निकन्दन, रावन-मर्दन, विश्व-विभो ।
हम सरन तुम्हारी, विपदा भारी, विनय हमारी, सुनो प्रभो ।
हे सीता-स्वामी, अन्तरजामी, खगपति-गामी, कृपा करो ।
सुर-मुनि-मन-रंजन, भव-भय-भंजन, कल्मप-गंजन, दुःख हरो ।
भवसिन्धु अपारा, अति विस्तारा, नहिं निस्तारा, जात बहो ।
जगनाथ विचारा, कहत पुकारा, तन मन हारा, हाथ गहो ॥

(५)

जै जै हनुमाना, सब गुन-खाना, कृपा-निधाना, बीर बली।
अतुलित बलशाली, खल-दल-घाली, छटा निराली, लगत भली।
जै पवनकुमारा, रामपियारा, सिया-दुलारा, निसकामी।
जै जै कपिराजा, सहित समाजा, राखहु लाजा, अब स्वामी॥

(६)

हे नन्ददुलारे, राधा-प्यारे, मुरली-धारे, बनवारी।
गोबरधनधारी, कुंजबिहारी, जन-हितकारी, सुखकारी।
हे कृष्णमुरारे, जसुदावारे, प्रभो हमारे, दया करौ।
विनती यह मेरी, विपत घनेरी, करौ न देरी, वेग हरौ॥

(७)

जै जै अविनासी, पापविनासी, कासीवासी, सिवसंकर।
हर गंगाधारी, गरलअहारी, मंगलकारी, ससिसेखर।
भूसन अहिमाला, जटा विसाला, परमकृपाला, त्रिपुरारी।
जगनाथ पुकारत, अति ही आरत, है सरनागत, अघहारी॥

(८)

(मुंगेर—मलेपुर की बोली में)

अबै छथीं एगो बूतरू मटूक धैलैं।
पीतांवर के भगवा पिन्हलें हाँथैं बंसी लेलैं॥
सभे गोरखिया पाछू दौगन्ति आवै धूर उडैलैं।
गाय चरैलें दूध दुहैलें चुकड़ी के लटकैलैं।
जगन्नाथ घर ऐलखीं कान्हा रसें रसें मुसकैलैं॥*

* एक बूतरू यानी बालक सिर पर मुकुट धरे आ रहा है। पीताम्बर पहने है, हाथों मे बंसी है। सब ग्वाल-बाल धूर उड़ाते पीछे पीछे दौड़े आ रहे हैं। गाय चराता, दूध दुहाता, दुहनी हाथ में लटकाये है। कन्हैया मन्द मन्द मुसकराता जगन्नाथ के घर आया है।

(९)

(नामकीर्त्तन)

ओम शिवाशिव श्यामा श्याम ।
गौरीशंकर सीताराम ।
राधावल्लभ सुन्दर श्याम ।
जानकिजीवन जय श्रीराम ।।
हरे कृष्ण हरे राम ।
राधामाधव सीताराम ।।

(सं० १९८७)

(१०)

जयशक्ति !

सपने में था देखा तुझको ।
दर्शन आज मिले हैं मुझको ।
क्या है शान्त मनोहर सुन्दर ।
रूप अलौकिक घोर भयङ्कर ।
शोभित कर युग अमित वरा भय ।
जन होते हैं जिनसे निर्भय ।
दायें बायें कमला वानी ।
राजे गनपत और सेनानी ।
प्रबल सिंह के ऊपर राजें ।
आठों कर में अस्त्र विराजें ।
पद प्रहार से असुर गिराया ।
भक्तिहीन का हृदय कँपाया ।
फूल उछालें बारंबार ।
करें देवगण जय जयकार ।।

(सं० १९६७)

द्वितीय प्रसून

२—भारत-वन्दना

(१)

कान्हरा-चौताला*

जय जय जय जन्मभूमि, जननी मम प्यारी।
जल की जहँ बहति धार, डोलति सीतल बयार,
गिरिवन सोभा अपार, अनुपम छवि वारी।
उपजत जहँ विपुल धान, केसर फल फूल पान,
पंछीगन करत गान, हरषित नर नारी।
सिल्पकला जहँ प्रचार, तसर, पाट, सूत, सार,
बनति वस्तु बेसुमार, सुन्दर सुखकारी।
प्रगटे जहँ जनकराय, त्रिभुवन जस रह्यो छाय,
है विदेह सब विहाय, ज्ञानी अति भारी।
चन्द्रगुप्त नृप महान, चानक सम नीतिमान,
भये जहाँ गुननिधान, जाऊँ बलिहारी॥

(सं० १९६९)

* यह कलकत्ते के तृतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन मे गाया गया था।

(२)

विहाग

धन धन भारतभूमि पुनीत ।
पूरन ब्रह्म प्रगटि जहँ खायौ, माँगि माँगि नवनीत ॥
जन्म भयौ जहँ सिल्पकला कौ, साहित अरु संगीत ।
सभ्य बने भू-मंडलवासी, सीख जहाँ की रीत ॥
होति जहाँ बहुरंगी रितु है, गरमी बरसा सीत ।
फूट बैर की बान त्यागि के, बनौ परस्पर मीत ॥
(सं० १९६२)

(३)

सब मिलि भारत कौ गुन गाऔ ।
पुन्य भूमि यह सुन्दर पावन, याकों सीस नवाऔ ॥
भये यहाँ औतार अनेकन, सबकों यह समझाऔ ।
सब देसन कौ गुरु यही है, यह विश्वास जमाऔ ॥
आपुस में करि प्रेम एकता, बैर विरोध मिटाऔ ।
आलस नींद दीनता त्यागौ, नव उत्साह दिखाऔ ॥
तजौ विदेसी लेव स्वदेसी, वस्तु जहाँ लों पाऔ ।
सुन्दर अवसर आन मिलो है, मिलें परस्पर आऔ ॥
(सं० १९६७)

(४)

मालकोस

हरि हो ऐसौ दिन कब ऐहै ।
भारत कौ धन भारत रहिहै, कबहुँ विदेस न जैहै ॥
सिल्पकला नित नूतन बढ़ि बढ़ि, दुख दारिद्र भगैहै ।

कोउ नहिं करन गुलामी चहिहै, उद्यम करि करि खैहै ॥
सारी बस्तु देस में मिलिहै, कोउ न विदेसी लैहै ।
बढ़िहै प्रेम एकता दिन दिन, फूट बैर विनसैहै ॥
ईर्षा द्वेष कलह करि अपुनो, कोउ नहिं समय बितैहै ।
जैसो नाम रह्यो भारत को, फिरि वैसो वह पैहै ।
जगन्नाथ तजि और प्रपंचहिं, तुम्हरो गुन नित गैहै ॥
(सं० १९६४)

(५)

भैरवी

अहो फिर भारत के दिन आये ।
वासर बहुत विपद के बीते, आँसू अमित बहाये ॥
बीती ताहि कबहुँ मत सोचौ, होत कहा पछताये ।
को तुम, कौन धरम है तुम्हरौ, सोचौ किन के जाये ॥
नैन खोलि निज दसा निहारौ, रहौ न अब अलसाये ।
त्यागि भीरुता गहौ वीरता, धावौ धजा उठाये ।
तन मन धन जन अरपन करिके, राखौ मान बचाये ॥
आय गयौ औसर यह सुन्दर, रहौ न वदन छिपाये ॥

(६)

सोहनी*

बन्दौं भारतभूमि सुहावनि ।
सजल सफल श्यामल थल सुन्दर, मलय बयारि चलति मनभावनि ॥
हिमकर निकर प्रकासित रजनी, कुसुमितलता ललित छविवारी ।

*"वन्दे मातरम्" की छाया पर ।

दिनमनि उदित मुदित मन पंछी, विकसित कमल नयन सुखकारी।
तीस कोटि सुत जाके गरजत, दुगुन करन करवाल उठाये
कौन कहत तोहि अबला जननी, प्रबल प्रताप चहुँ दिशि छाये।
धर्म्म कर्म्म अरु मर्म्म तुही है, शक्ति मुक्ति दैनी जयकरनी
तू जननी आराध्य हमारी, बहुबल धारिनि रिपुदलदरनी।
तू दुर्गा दस आयुध धारिनि, तू ही कमला कमलविहारिनि
सुखदा, वरदा, अतुला, अमला, वानी, विद्यादायिनि, तारिनि।
सुस्मित, सरला, भूषित, विमला, धरनी, भरनी, जननी, पावनि
जगन्नाथ कर जोरे बन्दत, जय जय भारतभूमि सुहावनि।

(सं० १९६२)

(७)

परज*

बन्दहु सब मिलि हिन्दुस्थान।
पूर्व समय को साँचो गौरव, करे गिरा मम सुन्दर गान।
धन, बल, बुद्धि विपुल यश गाथा, मगन होय सुनि सभा महान
वंग, बिहार, अयोध्या, गुर्जर, बम्बे, उत्कल, राजपुतान।
सिक्ख, पारसी, जैन, इसाई, हिन्दू, आरज, मुगल, पठान
सब भाषन में सब मिल गावहु, जय जय प्यारे हिन्दुस्थान।

(सब मिलकर)

हर हर हर हर हिन्दुस्थान।
दादर हुरमज हिन्दुस्थान।
अल्ला अकबर हिन्दुस्थान।
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान॥

*सरलादेवी चौधरन बी० ए० के "नमो हिन्दुस्थान" की छाया पर।

एक होयँ सब भारतवासी, फूट बैर की छोड़ैं बान।
रहें परस्पर प्रेमभाव सों, दुख सुख सबमें एक समान।
वंग बिहार, अयोध्या, गुर्जर, बम्बे, उत्कल, राजपुतान ॥

(सब मिलकर)

हरे मुरारे हिन्दुस्थान।
जय जिहोवा हिन्दुस्थान।
अल्ला अकबर हिन्दुस्थान।
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान ॥

साहस औ उत्साह बढ़ै नित, हों उत्तेजित जन मन प्रान।
आलस निद्रा त्यागि उठहु सब, करहु देश कौ अब कल्यान।
वंग, विहार, अयोध्या, गुर्जर, बम्बे, उत्कल, राजपुतान ॥

(सब मिलकर)

ब्रह्मरूप है हिन्दुस्थान।
अलख निरंजन हिन्दुस्थान।
अल्ला अकबर हिन्दुस्थान।
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान ॥

(सं० १९६१)

(८)

(द्विजेन्द्रलाल राय के प्रसिद्ध गीत "आमार देश" की छाया पर।*)

हे जननी, हे जनक हमारे, हे प्रिय भारत देश।
युगल नैन क्यों सजल हुए हैं, क्यों यह रूखे केश ?
क्यों मिट्टी में बैठी तू है, क्यों यह मैला वेश ?
तीस कोटि सन्तान तुझे, जब कहते अपना देश।

* स्वयं राय महाशय ने इसे गाया था। —सं०

क्यों तू इतनी दीन हुई है, क्या तुझको है क्लेश ?
क्यों लज्जा से सिर है नीचा, क्यों दुख का है लेश ?

लेकर जन्म बुद्ध ने खोला, जहाँ मुक्ति का द्वार ।
जिसको शीश झुकाता अब भी, है आधा संसार ।

सागर तक अशोक की छाया, कीरति जहाँ विशेष ।
है जननी उनकी ही तू तो, औ उनका ही देश ।

क्यों तू इतना दीन हुआ है, क्या तुझको है क्लेश ?
क्यों लज्जा से सिर है नीचा, क्यों दुख का भी लेश ?

जाकर किया सैन्य ने जिसके, लंका पर अधिकार ।
सेतु बनाकर जिसने लाँघा, सागर अगम अपार ।

तिब्बत, चीन, जपान, जिन्होंने, अपने किये निवेश ।
उनकी मा मिट्टी में लोटै, करके मैला वेश ।

क्यों तू इतनी दीन हुई है, क्या तुझको है क्लेश ?
क्यों लज्जा से सिर है नीचा, क्यों दुख का है लेश ?

जहाँ कंठ से तानसेन के, निकली मीठी तान ।
धर्म्म-सुधार किया शंकर ने, तुलसी ने जहँ गान ।
जहाँ प्रताप शिवाजी जूझे, धन्य धन्य वह देश ।
हम भी धन्य रक्त का उनके, है हममें यदि लेश ।

क्यों तू इतना दीन हुआ है, क्या तुझको है क्लेश ?
क्यों लज्जा से सिर है नीचा, क्यों दुख का है लेश ?
मुख-मंडल को यद्यपि तेरे, लिया तिमिर ने घेर ।
तो भी तेरी नूतन गरिमा, चमक उठेगी फेर ।

करें कालिमा दूर अगर हम, तो मनुष्य, नहिं मेष ।
हे देवी, हे देव हमारे, हे प्रिय भारत देश ॥

(सं० १९७१)

(९)

देशानुराग*

है ऐसो कोउ मनुज अधम जीवित जगमाँहीं।
जाके मुख सों वचन कबहुँ निकस्यौ यह नाहीं॥
"जन्मभूमि अभिराम यही है मेरी प्यारी।
वारौं जापै तीन लोक की संपत सारी॥"
सात समुन्दर पार विदेसन सों करि विचरन।
भयो नाँहि घर चलन समय हरषित जाको मन॥
जौ ऐसो कोउ होय वेग ही ताको देखौ।
भली भाँति सों वाके सब लच्छन को पेखौ॥
चाहे पदवी वाकी होय बहुत ही भारी।
वाको नाम बड़ो कर जाने दुनिया सारी॥
इच्छा के अनुकूल होय वाके अगनित धन।
कविता वाके हेत तऊ नहिं करिहैं कविगन॥
केवल स्वारथपन में ही सब समय गँवायो।
मन स्वदेश-हित-साधन में कबहूँ न लगायो॥
धरी रहति सब धन, बल, पदवी एक किनारे।
सिर पै, जम के आय बजत हैं जबहिं नगारे॥
सुठि सुन्दर सुख्याति नाँहि जीवन में पैहै।
जा माटी तें बनो फेरि वामें मिलि जैहै॥
सुमिरन, सोक, सुकाव्य मरे पै कोउ न करिहै।
करमहीन हत भाग मौत दुहरी सों मरिहै॥

(सं० १९६२)

* Scott के Love of Country की छाया पर।

(१०)

नवोत्साह

भक्ति-सहित निज इष्टदेव कौ करि आराधन।
उठौ उठौ सब लोग करौ भारत-हित-साधन॥
त्यागौ बैर विरोधहिं नव-उत्साह दिखाओ।
परै विपत जब भारी तब जिन अश्रु बहाओ॥
बहुत दिनन लों गये धाये अब जिन रोओ।
लम्बी चादर तानि सुस्त ह्वै अब जिन सोओ॥
धन, बल, गौरव, मान, सुजस सब भये तिरोहित।
आरज कुल की गरिमा केवल अजहुँ प्रकासित॥
आर्य्य बंस सन्तान अजहुँ हम लोग कहावत।
आर्य्य बंस कौ रक्त अजहुँ नस नस में धावत॥
वही वेद उपनिषद वही सब ग्रन्थ पुरातन।
अजहुँ वही षट दर्शन जापै मोहित सब जन॥
वही विन्ध्य गिरिराज वही हिम सैल सुहावन।
वही गंग अरु जमुन वही सरजू जल पावन॥
पृथवी वही पवित्र वही नभ-मंडल तारे।
फिर हम सब क्यों रहें हीन बल मन कों मारे॥
करि करि नव-उत्साह उठौ सब भारतवासी।
मिलौ परस्पर धाय मिटाओ दुख की रासी॥
सर्यो न जो सब काज आज लों रोये गाये।
सो अब सरिहै सहजहि नव-उत्साह दिखाये॥
तजौ विदेसी वस्तु स्वदेसी कों अपनाओ।
पुतलीघर अरु कलें देस में तुरत बनाओ॥
तजौ विदेसी नोन खाँड़ अरु दियासलाई।
सिलपकला विस्तारि करौ निज देस भलाई॥

(सं० १९६४)

(११)

राष्ट्र-सन्देश

जिस हिन्दू के है नहीं हिन्दी का अनुराग।
निश्चय उसके जान लो फूट गये हैं भाग॥

जिसको प्यारी है नहीं निज भाषा, निज देश।
वह सूकर-सा डोलता धरे मनुज का भेस॥

अपनी भाषा है भली भलो आपुनो देस।
जो कछु अपनो है भलो यही राष्ट्र-सन्देस॥

जो हिन्दू हिन्दी तजैं बोलें इँगलिश जाय।
उनकी बुद्धी पै परयो निहचय पाथर आय॥

जाको अपुनी जाति कौ नहिं नेकहु अभिमान।
कूकर सम डोलत फिरै वह तो वृथा जहान॥

कुल कुपूत करनी निरखि धरनी के उरदाह।
धधकि उठति सोई कबहुँ ज्वालागिरि की राह॥

निरखि कुचाल कुपूत की धरनी होति अधीर।
नैनन निरभर सों भरत यानें तातो नीर॥

हिन्द भलो सब देस में हिन्दी भाषन माँहि।
जातिन में हिन्दू भली और भली कछु नाँहि॥

जग सुख जो हैं चाहते जपैं नित्य यह मंत्र।
सदा दुखी परतंत्र हैं सब विधि सुखी स्वतंत्र॥

(सं० १९७३)

तृतीय प्रसून

३—हिन्दी-गुणगान और साहित्य-संघर्ष

(१)

प्रार्थनापंचक

मिटै हीनता हिन्द की, हिन्दु उठावें सीस।
भाषा भारतवर्ष की, हिन्दी हो जगदीस॥
भारतवासी भीरु बन, अब न निकालें खीस।
भाषा भारतवर्ष की, हिन्दी हो जगदीस॥
मिले रहें हिन्दू जवन, बनें कोटि तेंतीस।
भाषा भारतवर्ष की, हिन्दी हो जगदीस॥
हम स्वराज्य लेकर हटें, बात रहे इक्कीस।
भाषा भारतवर्ष की, हिन्दी हो जगदीस॥
बना रहे भारत सदा, कौंसिल से छत्तीस।
भाषा भारतवर्ष की, हिन्दी हो जगदीस॥

(सं० १९७९)

(२)

आसावरी

मन हिन्दी हिन्दी कहु रे।
अँगरेज़ी उरदू कौं तजिकैं अपनी भाषा गहु रे॥
दीन हीन हिन्दी भाषा है यह कलंक मत सहु रे।
निज भाषा की सेवा करिकैं 'जगन्नाथ' जस लहु रे॥

(३)

बानी हिन्दी भाषन की महरानी।
चन्द सूर तुलसी से जामें कवी भये लासानी॥
दीन मलीन कहत जो याकौं है सो अति अज्ञानी।
या सम काव्य छन्द नहिं देख्यौ है दुनिया भर छानी॥
का गिनती उरदू बँगला की भरे अँगरेजिहु पानी।
आजहु याकौं सब जग बोलत, गोरे तुरुक जपानी॥
है भारत की भाषा निहचै हिन्दी हिन्दुस्थानी।
'जगन्नाथ' हिन्दी भाषा कौ है सेवक अभिमानी॥
(सं० १९७२)

(४)*

भक्ति-सहित निज इष्ट देव कौ करि आराधन।
उठौ उठौ प्रिय बन्धु करौ हिन्दी-हित-साधन॥
हम हिन्दी के पुत्र हमारी हिन्दी माता।
हिन्दू हिन्दी हिन्द नाम कौ निरखौ नाता॥
हिन्दू हिन्दी त्यागि बनत जो इँगलिस दासा।
सो निज हाथन करत आपु हैं अपुनौ नासा॥
कुल मरजादा लखौ और निज रूप निहारौ।
कटि कसिकैं बस उठौ वेगि हिम्मत मत हारौ॥
करि करि नव-उत्साह उठौ सब हिन्दी-भाषी।
हिन्दी कौं अपनाय मिटावौ दुख की रासी॥
बहुत दिनन लौं भूले-भटके अब जिन भूलौ।
करि त्रिसंकु की नकल बीच में अब मत झूलौ॥
खड़ी पड़ी औ अड़ी गड़ी बोलिन कौ रगरौ।
करौ न कबहूँ भूलि जानि यह झूठौ झगरौ॥

* लाहौर के द्वादश हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में पठित।

हिन्दू आरज नामन कौ झगरौ मत ठानौ ।
जगन्नाथ की कही भला इतनी तौ मानौ ॥
नाम माहिं कछु नाहिं काम करिकैं दिखराऔ ।
हिन्दी कौ परचार हियाँ पै तुरत कराऔ ॥
वीरभूमि पंजाब माँहिं हिन्दी है आई ।
पंजाबिनकौं उचित अवस वाकी सेवकाई ॥
भये उपस्थित आज हियाँ पै जो सब भाई ।
करैं प्रतिज्ञा अटल यहाँ निज भुजा उठाई ॥
हिन्दी में हम लिखैं पढ़ैं, हिन्दी ही बोलैं ।
नगर नगर में हिन्दी के विद्यालय खोलैं ॥
हिन्दी के हित-चिन्तन में नित ही चित दैहैं ।
भूलि कबहुँ नहिं इँगलिस कौ हम नामहुँ लैहैं ॥
हिन्दी की अब तन मन धन सों सेवा करिहैं ।
विघ्न विपद औ बाधा सों हम नैकु न डरिहैं ॥
यह पन पूरौ करै सदा माधव मंगलमय ।
हमहुँ कहैं हिन्दी जय, हिन्दी जय, हिन्दी जय ॥

(स० १९७१)

(५)

अभिभाषण*

वाक अर्थ इव युक्त हैं, गिरिजा गिरिजानाथ ।
शब्दारथ के ज्ञान हित, तिनहिं नवाऔं माथ ॥

हिन्दी सिर ऊँचौ भयौ, जिन कवियन कों पाय ।
पद-पंकज तिनके प्रथम, बन्दौं सीस नवाय ॥

* श्री वैद्यनाथधाम गुरुकुल महाविद्यालय के १७वें वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत कवि-सम्मेलन के सभापति चतुर्वेदी जी का अभिभाषण ।

हिन्दी के जो कवि हियाँ, भये सुसोभित आय ।
पुनि प्रनाम तिनकौं करौं, भक्ति-सहित हरखाय ॥

समारोह निरखत हिये, होत अनन्द अपार ।
धन्यवाद यातें हुलसि, अरपत बारंबार ॥

हौं लेखक तौ गद्य कौ, नहीं काव्य सों काम ।
कविपति बनिवेकौं तऊ, आयौं बाबा धाम ॥

कहा कहौं, कैसे कहौं, समुझि परत कछु नाहिं ।
मौन रहे हू बनत नहिं, असमंजस मन माहिं ॥

पटना कालिज में दयौ, जो भासन इक बार ।
काटि छाँटि कै पढ़त हौं, वाही कौ कछु सार ॥

"टूटी टाटी वीन" है, फूटौ सौ है ढोल ।
बजति बाँसुरी बेसुरी, "अंतस्तल" में पोल ॥

"यौवन प्याला शुष्क है", बढ़त बुढ़ापौ जोर ।
आँखें मूँदे जात हैं, सब "अनन्त की ओर" ॥

नहिं छूयी 'छाया' कबहुँ, 'माया' सों नहिं मेल ।
नहीं 'निराली' चाल है, बेतुक औ बेमेल ॥

कोयल कौ सौ कंठ नहिं, नहीं सुरीली तान ।
ज्ञान नहीं सुरताल हैं, नाच कूद औ गान ॥

"हाला","प्याला" हू नहीं, 'आला बाला' नाहिं ।
आवाजाई नहिं कबहुँ, है 'मधुशाला' माहिं ॥

व्याकरनहु बंदी बन्यौ, छन्द गयौ है छूट ।
पिंगल की नहिं पूछ है, अलंकार सों फूट ॥

'कंज', 'मंजु', 'मंजुल', 'रसिक', नहिं 'मधुकर' कौ चाव।
अब तो कवि 'कंटक' बने, 'बेढब' औ 'बेताब'॥

कल्पति कविता-कामिनी, भूसन-वसन-विहीन।
कविगन कल्पित कष्ट तें, बनत दुखी अति दीन॥

रोनी कविता करत हैं, रोनो रूप बनाय।
रोअन ही के सुर पढ़त, रोदन प्रिय कविराय॥

हृद तंत्री हू बजति नहिं, टूट गयौ है तार।
जा दिन तें हँसिवौ गयौ, भयौ जु बंटाढार॥

छाया माया वाद के, वादी विविध प्रकार।
"ठाकुर"* हू के ठाठ में, पार भये द्वै चार॥

नहीं काम कौ त्याग है, नहीं राम कौ ध्यान।
छायावादी करत हैं, कविता तऊ महान॥

व्रज चौरासी कोस की, मथुरा पुरी प्रधान।
मथुरा की भाषा मधुर, मोहे मुगल पठान॥

व्रजभाषा भाषा भली, कहत सकल संसार।
हिन्दी के साहित्य कौ, व्रजभाषा आधार॥

खड़ी करौ बोली खड़ी, जासों कछु नहिं हान।
पै व्रजभाषा कौ करौ, मत कबहूँ अपमान॥

हिन्दी की संपत्ति है, जाई भाषा माँहि।
साँची मानौ बात यह, झूठी भाखौं नाहिं॥

* रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

तुलसी, केसव, सूर ने, देव, बिहारीलाल।
जाई भाषा में करी, रचना रुचिर रसाल॥

पदुमाकर, हरिचंद, पति*, घनानन्द, रसखान।
सूदन, भूषन, दास कवि, हिन्दी के हैं प्रान॥

ब्रजभाषा साहित्य में, नहिं केवल सिंगार।
नवहु रसन की धार है, देखौ आँख पसार॥

ग्राम-गीत चाहे पढ़ौ, चाहे छायावाद।
ब्रजभाषा मत छोड़ियौ, रखियौ वाकी याद॥

ब्रजभाषा बोली खड़ी, हिन्दी के दोउ हाथ।
करौ विभूषित प्रेम सों, दोउन कौं इकसाथ॥

अपनी भाषा, भाव अरु, भोजन, भाई, भेस।
बिना प्रेम इनसों किये, होत न उन्नत देस॥

हिन्दी की उन्नति किये, देसहु उन्नत होय।
अपनाऔ अब आज ही, हिन्दी कौं सब कोय॥

जौ निज भाषा कौ करौ, आदर औ सम्मान।
तौ हिन्दी-साहित्य कौ, वेगि होय कल्यान॥

हिन्दी कौं भूषित करौ, चुनि चुनि कला नवीन।
जासों छवि निरखत बनै, कहि न सकै कोउ दीन॥

आयौ सो भाख्यौ हियाँ, अपनी मति अनुसार।
भूल चूक जो होय कछु, लीजौ सुजन सुधार॥

हित हिन्दी-साहित्य कौ, करौ जानि कर्त्तव्य।
जगन्नाथ कौ बस यही, सानुरोध वक्तव्य॥

(सं० १९९३)

* सेनापति।

शंकर का सोच *

"शंकर रुद्राकार हो", या हो क्षुद्राकार ।
"रंडा गर्भ रहस्य से", जग में है सत्कार ॥
"शंकर" भोलानाथ बन, बैठा तान त्रिशूल ।
देखि ज्योति जगनाथ की, गयी सिटल्ली भूल ॥
"हिन्दी का व्याकरण है, "अभिभाषण के साथ" ।
"जग" से "नाथ" निकाल कर, "नाथू" बना अनाथ ॥
"मौजी मौज समास है", अति अचरज का धाम ।
सिद्ध हुआ "जगनाथ" मे, देखो "नाथूराम" ॥
(सं० १९७९)

---

* लाहौर के द्वादश हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन मे सभापति-पद से चतुर्वेदी जी ने जो अभिभाषण किया था उस पर स्वर्गीय पं० नाथूराम शंकर शर्मा ने "मौजी की मौज" शीर्षक मे नीचे लिखे दोहे, कवित्त लिखे थे । यह उन्ही का उत्तर है ।

हिन्दी का व्याकरण है, अभिभाषण के साथ ।
मौजी* मौज समास मे, सिद्ध हुआ जगनाथ ॥

(कवित्त घनाक्षरी)

शंकर सदुन्नति सदादर की कामना को,
बोरे सदानंद में सदक्षर कहा करे ।
सभ्य सदाचारी बने भक्त सदुदारता का,
सिद्ध सदुपाय मे सदुद्यम गहा करे ।
पूजा करे जननी जनक जगनाथ जी की,
जन्हु-तनया-सा जन्मभूमि पै बहा करे ।
पंचक जकारों का सदष्टक के साथ सदा,
हिन्दी भाषी हिन्दुओ के हिन्द मे रहा करे ।

(उपसंहार)

शंकर रुद्राकार हो, उठ त्रिशूल ले हाथ ।
तेरे वृष की देख तो, काट रहा जगनाथ ।

शंकर-शंका-भंग *

शंकर अब सठिया गया, लुप्त हुआ है ज्ञान।
जगन्नाथ के भात का, करता है अपमान ॥

भस्मासुर ने जब किया, शंकर को हैरान।
सानुग्रह जगनाथ ने, तुरत बचाई जान ॥

संकरता को छोड़ दे, और मिथ्या अभिमान।
जगत्बन्धु 'जगनाथ' का, कर आदर सम्मान ॥

शंकरत्व को त्याग मत, शठता से मुँह मोड़।
हरिशंकर को दाद दे, 'तुक्कड़पन' को छोड़ ॥

राम-रूप को देखकर, भूला अपना रूप।
बुड्ढे को बुढ़भस लगा, लाया स्वांग अनूप ॥

"चमर पंच" तो बन गया, "कविता कामिनि कन्त"।
"रंडा जननी" प्रसव का, देखो सुफल तुरन्त ॥

"कविता कामिनि कन्तकी", ले देखो करतूत।
अपने मुँह मिट्ठू बना, रहा ऊत का ऊत ॥

(सं० १९७९)

* यह शंकर जी की "तुक्कड़ तान तरंग" नामक लम्बी कविता का संक्षिप्त उत्तर है।

चतुर्थ प्रसून

४—ऋतु-वर्णन

(१)

शरत्

दोहा

सरद समागम होत ही, फूले कास कपास ।
घन गर्ज्जन वर्ज्जन भयौ, निर्ज्जल अमल अकास ॥
निमल नीर नदियन बहै, सरवर कमल खिलन्त ।
विकसीं कैरव की कलीं, निरखि चन्द निज कन्त ॥
चक्रवाक चातक सुआ, कोकिल मंजु मराल ।
चहकत चहुँ दिसि चाव सों, जानि सरद यहि काल ॥
दिव्य दिवाकर दिधित सों, दीपित दसों दिसान ।
नूतन किसलय अरु लता, भासित स्वर्न समान ॥
पंक रहित पृथिवी भई, सरितन सलिल समान ।
निज निज प्यारी सों मिलन, पथिकन कीन्ह पयान ॥
खंजन मन रंजन करन, गंजन मृग चख मान ।
आवत गुंजन कों चँगत, चंचलता की खान ॥
मन्द मन्द मारुत चलै, सीतल सुखद महान ।
खेतन में झूमत खड़े, धानन के बिरवान ॥
हरे हरे कोऊ पके, झुके सबै फल भार ।
जगत-पिता की करत हैं, विनती बाँध कतार ॥

सारदीय ससि की सुधा, बरसति चारों ओर।
करि दरसन निज बंधु के, प्रमुदित होत चकोर॥
कदम करौंदा केतकी, कुसुमित बेर मकोय।
निरखत ही तिल के सुमन, मन आनन्दित होय॥
स्वच्छ सरद की सरसता, को करि सकै बखान।
सैनन में समुझत मरम, जो है रसिक सुजान॥

(सं० १९५७)

(२)

वर्षा*

धूर दबी गरमी मिटी, चल्यौ सुसीतल पौन।
रुकी चढ़ाई नृपन की, फिरे बिदेसी भौन॥

चकवा सों चकवी मिली, मानस चले मराल।
जान चलत नहि पंथ में, बूँद परै सब काल॥

बिखरे बादर गगन में, कहुँ तम कहुँ परकास।
सोहै थिर सागर सरिस, कहुँ गिरि ओट अकास॥

बहत बेग सों कदम लै, नदियन गदलो नीर।
बोलत हरखित मोरगन, बैठे दोऊ तीर॥

नाग रसीले खात हैं, जामुन अलि सम स्याम।
टपकत भू पै वायु सों, पाके बहु विधि आम॥

बकमाला दामिनि सहित, ऊँचे सैल समान।
गरजत कारे मेघ इमि, जिमि गजेन्द्र बलवान॥

---

* वाल्मीकि के आधार पर।

घास बढ़ी, केकी नचे, मेघ चुके झरलाय।
सन्ध्या कों या विपिन की, सोभा अधिक लखाय॥

जलधर जलधारन किये, बकदल सों सरसात।
ऊँचे परवत शृङ्ग पै, गरजत ठहरत जात॥

बकपाँती घन चाह सों, उड़ती परम सुहाय।
पुंडरीक माला मनहु, घन हित दई बनाय॥

बीरबहूटी घास में, सोभा देत अपार।
मनहुँ भूमि दुलही नयी, बैठी चूनर धार॥

निद्रा हरि, बक मेघ ढिग, सरिता सागर माँहि।
काम सताई कामिनी, निज नायक ढिग जाँहि॥

फूली डार कदम्ब की, वृषभ गये ढिग गाय।
कानन नाचत मोर गन, तृन सों भूमि सुहाय॥

घन बरसत, सरिता बहति, गरजत मत्त गयन्द।
बन सोहत, नाचत शिखिन, चुप है बानरवृन्द॥

सूँघि केतकी गन्ध गज, मत्त होय हरखात।
वन झरना कौ शब्द सुनि, मोरन सँग चिल्लात॥

लटकि कदम के फूल अलि, मधु पीवत मस्ताय।
पै बूँदन की चोट सों, मस्ती सब झरि जाय॥

क्वैला सो कारौ बड़ौ, फल रस भरो सुहाय।
मानों जामुन डार पै, बैठे मधुकर आय॥

सोभित विज्जु धुजान सों, गरजत बादर घोर।
मानों रन उत्साह सों, कपि धावत करि सोर॥

घनरव करि रव जानि कै, मतवारो गजराय।
लड़न चल्यो पाछें फिर्‌यो, नहिं जब कोउ लखाय॥

कहुँ गुंजत है भौंर-दल, कहुँ नाचत हैं मोर।
कहुँ झूमत करि राजवन, सोभित भाँत करोर॥

अरजुन रंभा कदम तरु, सोहत साल रसाल।
पूरित है मधु बारि सों, वन धरती यहि काल॥

नाचत बोलत मत्त ह्वै, अति मयूर हरखाय।
सुरापान के भवन सो, कानन परत लखाय॥

मोती सो निर्मल सलिल, गिरत पात में आय।
भींगे प्यासे विहगगन, पीवत मोद बढ़ाय॥

अलिगन बीन बजावहीं, बानर गावैं गीत।
मेघ मनहुँ मिरदङ्ग लै, करत विपिन संगीत॥

कबहुँ बैठि तरुवर सिखर, कबहुँ नाँचि करि मोर।
मनहुँ गान वन में करत, बड़ी पूँछ के मोर॥

घनरव सुनि कपि उठत जो, रहे देर लों सोय।
करत नाद बहु रूप सों, बूँदन घायल होय॥

एक तीर सों लपटि के, दूजो तीर विहाय।
निजपिय सागर सों मिलन, नदी चली इतराय॥

जल सों पूरे नील घन, सटे एक सों एक।
झुलसे मनो दवागि के, गिरिवर जुरे अनेक॥

वीरबहूटी रेंगती, कूकत माते मोर।
फैली गन्ध कदम्ब की, गज घूमत चहुँ ओर॥

धोये वारिद बूँद सों, कमलन कों तजि देत।
केसर सहित कदम्ब के, मधु कों मधुकर लेत॥

मुदित गवेन्द्र, गजेन्द्र मद, माते बली मृगेन्द्र।
रम्य नगेन्द्र, नरेन्द्र चुप, घन सों सुखी सुरेन्द्र॥

गरजत बरसाऊ जलद, रहत गगन में छाय।
नदी बावली कूप महि, भरत वारि बरसाय॥

बूँद परति है बेग तें, वायु चलति झकझोर।
पथ छाँड़ति तोड़ति तटन, नदी बहति अति जोर॥

दयौ इन्द्र लायौ पवन, घन गागरि में तोय।
ह्वै अभिसिक्त नगेन्द्रवर, नृप सम सोभित होय॥

तारा भानु न दीसते, छाये मेघ अकास।
भूमि तृप्त नभ लिप्त है, होत न कहूँ प्रकास॥

मोतिन की माला सरिस, झरना झरत सुहात।
तासों धोये गिरि सिखर, सुन्दर अधिक लखात॥

(सं० १९६२)

पंचम प्रसून

५—नीति और उपदेश

(१)

विश्व-प्रेम*

पूजनीय गुरुजनन कौं, करिकैं विनय प्रनाम।
विश्व-प्रेम बरनन करौं, उर धरि सीताराम॥
जगत-पिता के पूत हैं, हम तुम औ सब कोइ।
हिलमिल रहिए प्रेम सों, भेद किए अघ होइ॥
हिन्दू जवन समान हैं, जापानी, क्रिस्तान।
जरमन, रसियन, पारसी, हबसी, और पठान॥
मूरख धनी दरिद्र अरु, लोभी परम उदार।
पंडित ज्ञानी वीर-बर, सर साहिब सरदार॥
बंगाली उड़ियान महँ, मत राखौ कछु भेद।
अपुनो भाई जानिकै, हरौ सबन कौ खेद॥
ऊँच नीच नीके बुरे, निगुनी गुनी सुजान।
भाई समुझौ सबन कों, तजिकै निज अभिमान॥
बरबर और अमेरिकन, कोल भील संथाल।
जैन बौध औ सिक्ख सों, मिलौ जाय तत्काल॥

* इस रचना पर मुंगेर के "बेली-पोइट्री-प्राइज़-फंड" से सन् १८९७ ई० में रचयिता को प्रथम पारितोषिक मिला था।

मीठी बोली बोलिए, मिलिए सब सों धाय।
आव-भगत करिए सदा, उर में प्रेम बढ़ाय॥
उनके गाढ़े दुःख में, जातिय भेद बिहाय।
तन मन धन जन वचन सों, रहिए सदा सहाय॥

जीवन है दिन चार कौ, कीजै कबहुँ न वैर।
यह भवसागर अगम है, हिलमिल जइए तैर॥
लड़िबो भाई-बन्धु सों, भलो कहत नहिं कोय।
बन्धु वैर रावन मर्‍यो, बालिहु करिके सोय॥

इरसा द्वेसहिं त्यागि के, कीजे सबसों मेल।
सुख यातें होइहै, बहुत, जिन जानौ एहि खेल॥
सबको दाता एक है, एकहि है करतार।
एकहि के हम तुम सकल, पसु पँछी तरु भार॥

आँख नाक सब एक हैं, जनम मरन सब एक।
तब अन्तर काहे लखत, समुझौ मन महँ नेक॥
मेरो तेरो कहत हैं, जिनकौ नीच विचार।
वसुधँहि जानत कुटुम सम, जिनके चरित उदार॥

धन-मद जन-मद त्यागि के, मन सों कपट निकाल।
नम्रभाव सों बोलिए, साँझ भोर सब काल॥
असन वसन धन-धान्य सों, तन-मन वरु है प्रान।
अपुने भाई-बन्धु की, रच्छा करत सुजान॥
पंडित ज्ञानी चतुर वह, वही गुनी विद्वान:
मिलजुल करि जो रहत हैं, सब कौं भाई मान॥
ऐसे नर नारीन कौ, होत जगत में मान।
सुख सों वेई रहत हैं, यह निहचै करि जान॥
विद्या बुद्धि विवेक सों, करिके गूढ़ विचार।
पंडित परम सयान जो, देत यही निरधार॥

जौ चाहत तुम होन कों, सुखी सदा संसार।
तौ भाई समझौ सबन, और करौ सत्कार॥
सर्व्वव्यापी ब्रह्म है, कहत सास्त्र अरु वेद।
ब्रह्महि मे सब जीव हैं, जीव ब्रह्म नहिं भेद॥
जोगी जती महान जे, करिकै ब्रह्मविचार।
सुखी होत सब भाँति सों, लहत अनन्द अपार॥
मन के कपट कुभाव कों, छाँड़ि देहु गुनवन्त।
जातें सुख लहिहौ अमित, कहत साधु अरु सन्त॥

सोरठा

सब सज्जन कौ दास, जगन्नाथपरसाद हौं।
करिकै मनहि हुलास, विश्व-प्रेम बरनन कर्‌यो॥
नहिं विद्या नहि ज्ञान, नहिं पिंगल मेरो पढ़ो।
धरि संकर कौ ध्यान, पद्य माँहि रचना करी॥
विनय करौं कर जोरि, गुनग्राहक सज्जनन सों।
छमहु कृपा करि मोरि, भूल चूक जो बन परी॥
संवत विक्रम भूप, उनइस सौ तिरपन विदित।
विरचित छन्द अनूप, जेठ अधिक गुरु दूज कों॥

(सं० १९५३)

(७)

सुखमय जीवन*

है विद्या अरु जन्म धन्य धरती पै तिनकौ।
पराधीनता माँहि कटत नहिं जीवन जिनकौ॥

*Sir Henry Wotten कृत The Happy Life की छाया पर।

धर्म, पवित्र विचारन के जिनके अति सुन्दर।
सरल सत्य सों मिली निपुनता के जो आकर॥

बुरी वासना जिनके मन में कबहुँ न आवति।
रूप भयंकर धारि मृत्यु नहिं जिनहिं डरावति।
जगत-जाल में बँधे करत नहिं जतन हजारन।
गुप्त प्रगट निज नाम सदा विस्तारन कारन॥

जिनहिं ईरषा होति नाँहि पर-उन्नति देखे।
चाटुकारि अनजान वस्तु है जिनके लेखे।
राजनीति को तत्त्व करत नहिं चित आकरसन।
धर्म्मनीति के ऊपर वारत जो तन मन धन॥

भयो कलंकित नाँहि कबहुँ जिनको यह जीवन।
विमल विवेचन बुद्धि विपत में बनत निकेतन।
खुशामदी नहिं खाँय उड़ावें जिनकी संपति।
अरु सत्रुन कों प्रबल करति नहिं जिनकी अवनति॥

परमेश्वर को भजन करत जो साँझ सबेरे।
हरि सेवा कों छाँड़ि चहें नहिं सुख बहुतेरे।
धर्म्म-ग्रन्थ अवलोकन में ही समय बितावत।
साधुन के सत्संग बैठि हरि-कथा चलावत॥

नहिं उन्नति की इच्छा अरु नहिं अवनति को डर।
आशा बन्धन काटि भये निरद्वन्दी सो नर।
वसुधा सासन भूलि करत हैं मन को सासन।
यद्यपि सो अति सुखी कहावत तऊ "अकिंचन"॥

(सं० १९६०)

(३)

आज और कल*

जौ विधना अनुकूल फूल मारग छितरावै।
तौ तू होइ प्रसन्न आज ही ताहि उठावै॥

जौ कहिं भौंह चढ़ाइ दुःख वह आगत भाखे।
चिन्ता वाकी आज करे नहिं कल कों राखे॥

अपकारी उपकार चहै निज चूक सकारे।
आजहि वाकी सुनै और सब दोस बिसारे॥

उग्र न्याय बस इच्छा हो जदि दुष्ट-दमन की।
करै व्यवस्था कल ही तिनके दंड करन की॥

जिनतें रिन है लयौ दये बिन होत अकाजा।
तिनतें आजहि उरिन होइए मेरे राजा॥

रिन लैके जो अपनी हीन दसा दिखरावे।
रुपये सोध करे नहिं केवल बात बनावे॥

तिनकी भङ्ग प्रतिज्ञा कल्लहि सोचो भाई।
जगन्नाथपरसाद बात यह कहत बुझाई॥

समय बैठि है नाहिं काम नीके के काजहिं।
जो कछु है कर्तव्य मित्र सो कर ले आजहिं॥

रोष द्वेष अरु चिन्ता सकल बुरी ये बातें।
है उत्तम इन सबको करिबो काल्हिहि यातें॥

(सं० १९६०)

* Today and Tomorrow की छाया पर।

(४)*

राजा पंडित सम नहीं, देखौ करिकै गौर।
राजा पुजत स्वदेश में, पंडित सबही ठौर॥

पसु पेखत हैं गन्ध सों, चर सों नृपति सुजान।
चख सों देखत अपर जन, पंडित सास्त्र पुरान॥

संपद में नहिं हरख जेहि, विपद विसाद न होय।
जनती है ऐसो तनय, बिरली जननी कोय॥

परदारा माता सरिस, पर धन धूरि समान।
अपनौ जानत और कों, पंडित वही सुजान॥

विद्या धन अरजन करौ, छन कन समुभि महान।
छनत्यागी विद्या कहाँ, कनत्यागी कहँ धान॥

गुनी पूत एकै भलो, नहिं मूरख दस बीस।
तारागन तम ना हरैं, पै एकहि रजनीस॥

प्रियवादी दुरजनन कौ, मत कीजो विश्वास।
रहत जीभ पै मधु सदा, हिये हलाहल वास॥

दानी करत न दान में, ऊँच नीच को ख्याल।
चन्द न रोकत चाँदनी, लखि आलय चंडाल॥

अभय होत है धरम सों, धरमहि सों सुख ज्ञान।
यातें सरबस त्यागि कै, करत धरम विद्वान॥

कन्या चाहति रूप कों, माता धन, पितु ज्ञान।
कुल के इच्छुक बन्धुगन, अपर लोग मिसटान॥

(सं० १९५२)

---

*संस्कृत से।

(५)

क्या तन माँजता रे एक दिन माँटी में मिल जाना।

कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, मल मल धोयी काया।
छाया के पीछे तू धाया, नाहक जनम गँवाया॥
क्या तन माँजता रे एक दिन माँटी में मिल जाना।

हुंडी पुरजा मोटर शेअर, यहीं धरे रह जावें।
जम के सोटे पड़े पीठ जब, काम नहीं कुछ आवें॥
क्या तन माँजता रे एक दिन माँटी में मिल जाना।

पाप पुन्य तेरे सँग जाते, और नहीं कुछ जाता।
झूठी सेखी करके बन्दे, क्यों नाहक इतराता॥
क्या तन माँजता रे एक दिन माँटी में मिल जाना।

अपनी तिरिया घर में रोवे, पर-तिरिया रँग राता।
गो-माता से नाक सकोरे, कुत्ते पाल अघाता॥
क्या तन माँजता रे एक दिन माँटी में मिल जाना।

साँझ सवेरे माला जपता, गंगा जी है न्हाता।
कपट करे औ परधन हरता, झूठी कसमें खाता॥
क्या तन माँजता रे एक दिन माँटी में मिल जाना॥

(स० १९८०)

षष्ठ प्रसून

६–शोकोक्तियाँ

(१)

हा केशव !*

हमहिं छाँड़ि कहँ उठि गये, हा केशवपरसाद ।
टूक टूक हिय होत जब, आवति तुम्हरी याद ॥
कहाँ जाय तुमने करयो, अपुनो नयो निवास ।
जा दिनसों तुम बीछुरे, मन अति रहत उदास ॥
तव मुखदरसन हित रहत, निस दिन व्याकुल नैन ।
श्रवन श्रवन करिबो चहैं, तुम्हरे मीठे बैन ॥
कहाँ गये ? कहँ दुरि रहे ? कस नहिं आवत धाय ।
आश्रौ आश्रौ बेगि प्रिय, अब जिन रहौ लुकाय ॥
ऐसी हँसी न कीजिए, जाते दुख अति होय ।
इनको धीरज दीजिए, मरत नैन जो रोय ॥
अहो मित्र ! मानी नहीं, चले गये कैलास ।
बहुत कही, आये नहीं, टूटी सिगरी आस ॥

* पण्डित केशवप्रसाद मिश्र "बड़ा बाजार लाइब्रेरी" के संस्थापक और मंत्री थे । चित्र के अभाव में आपके नाम का Tablet (शिला-खंड) लाइब्रेरी में स्थापित किये जाने के दिन यह कविता पढ़ी गई थी । कलकत्ता कारपोरेशन के चेअरमेन मिस्टर जी० आर० श्रोअर आई० सी० एस० ने यह शिला-खंड स्थापित किया था ।

बिन केसवपरसाद के, चित्त उठो अकुलाय।
कहाँ जाउँ, कासों कहूँ, सूझत नाहिं उपाय॥
हाँ उपाय सूझौ बहुरि, करिके बहुत विचार।
केसव की तसबीर कों, निरखों बारंबार॥
यही हेत ढूँढ़त फिरों, केसव की तसबीर।
मिली नहीं, खोजी बहुत, तब मन भयौ अधीर॥
खोजत खोजत हौं चलो, लाइबरेरी हाल*।
हुआँ चित्र होइहै अवस, मन में आयो ख्याल॥
यह विचारि आयौ हियाँ, नव उत्साह बढ़ाय।
हाय दैव, कीजै कहा, चित्र मिल्यो नहि हाय॥
ह्वै निरास मन में जबै, करन लग्यो पुनि गौर।
कारे परदा सों ढक्यो, कछु देख्यो इक ठौर॥
है भीतर याके कहा, कहौ तनिक समुझाय।
'असमारक यह मिश्र कौ', बोल्यो जन इक आय॥
"असमारक का होत है, हौं कछु जानत नाहिं।
परदा नेक हटाइए, संसय सब मिट जाहिं"॥
सो बोल्यो पुनि आयके, यह नहिं होनो आज।
परदा खोलन के निमित, जुरिहै बड़ो समाज॥
मिस्टर ग्रीअर खोलिहैं, निज कर-कमल बढ़ाय।
तादिन तुमहू देखियो, यह असमारक आय॥
यही आस आयौ बहुरि, देख्यो साज समाज।
मिस्टर ग्रीअर ने झपटि, परदा खोल्यो आज॥
हाय हाय यह का भयो, छवि नहिं परत लखाय।
कहा यही तसबीर है, यही चित्र समुदाय॥
नहीं नहीं यह है नहीं, नहीं नहीं यह नाँहि।
यह तो कछु अच्छर खुदे, उजरे पत्थर माँहि॥

* Library Hall

हाय दई कैसी करों, मिलती नाहिं तसबीर।
बिरथा ही मेरी गई, यह सारी ततबीर॥
कहा कहीं मिलती नहीं, केसव - छवि संसार।
तो कैसे दरसन मिलें, अब यह होत विचार॥
खैर कछू चिन्ता नहीं, करिहों अब इक ढङ्ग।
जातें प्यारे मित्र कों, निरखों सहित उमंग॥
मित्र तिहारे गुनन की, छवि है मेरे हीय।
वाही कों अवलोकिके, करिहों सीतल जीय॥
सिला-खंड ह्व पै खुदो, तुम्हरो सुन्दर नाम।
ताही कों नित भोर ही, करिहों आय प्रनाम॥

(स० १९५९)

(२) ❀

घंटा धीरे बजत मनहुँ दिवसान्त बतावत।
गौ रँभात भइं खेतन सों निज घर दिसि धावत॥
हलवाहे अति थके मंद गति गृहकों आवत।
तिमिर रास और मेरे पासहि जगहिं पठावत॥
नहिं दीसत अब दृश्य भूमि कौ जगमग सुन्दर।
सन्नाटौ सब ठौर चलत नहिं वायु भूमि पर॥
कहूँ कहूँ गुबरीलनु की धुन भन भन आवति।
औंघत पशु घंटी कहुँ मेपन ठोंकि सुवावति॥
वुह देखो! इक बूर्ज इश्कपेंचासों छायो।
तामें बैठे घुघ्घू ने है सोर मचायो॥

❀ Thomas Grez's Elegy की छाया पर।
प्रथम विलियम ने एक क़ानून बनाया था जिससे घंटा बजने पर सन्ध्या के आठ बजे सब रोशनियाँ और आग ठंढी कर दी जाती थीं। वह घंटा करफ़िउ (curfeus) कहलाता था।

कातर ह्वै जनु करत चन्दसों नालिस उन पर।
कुंज पुरानी में घुसि ताहि सतावत जो नर॥
बड़े बड़े जहँ "एल्म" "यू"* के ठाढ़े तरवर।
उखरी सूखी घासन कौ है ढेर जहाँ पर॥
वहीं पड़े कहुँ गहरी सकरी भूमि मँझारन।
सोये हैं निहचिन्त किसानन के पुरखा-गन॥
सीतल मन्द सुगन्ध पौन नित भोरे डोलत।
अबाबील्हू तृन छायी कुटियन महँ बोलत॥
नरसिंगा नित बजत करत कुक्कुट करकस रव।
तोरि सकत नहिं अब कृषकन की निद्रा ये सब॥
उन कृषकन के हेतु नहीं अगिहानौ जरिहै।
साँझ समय घबराय काम नहिं घरनी करिहै॥
'बापू आये' कहत अटपटे शिशु नहीं गेहैं।
आगे मिट्टी देन होड़ अब नाँहि लगैहैं॥
उन कृषकन ने काट्यो है कितनी फसलनकों।
जोत्यो है कितने ही अति बंजर खेतनकों॥
कैसे मोद भरे हाँकीं जोड़ी बधियन की।
काटि गिरायी है अवली कितनी बिरछन की॥
जसलोलुप उपहास करें जिन सुखद स्रमन को।
तिनके सरल हुलास और भोंड़े भागन को॥
दीनन की संछिप्त सधारन सुष्क कहानी।
सुनि के घिन जिन करें धनी अतिसै अभिमानी॥

(अपूर्ण)

(स० १९५९)

*विलायती वृक्षविशेष।

हा गुप्तजी !*

(३)

हा हा ! बालमुकुन्द गुप्त हा वैश्य-प्रभाकर।
हा भारत कौ रत्न समुज्ज्वल सकल गुनाकर॥
हा हा शीलनिधान मान मर्य्यादा सागर।
रसिक, धीर, गंभीर, परम नीतिज्ञ, उजागर॥
देशभक्त अनुरक्त, परम सज्जन, अनुरागी।
धर्म सनातन कौ अवलंबी, स्वारथत्यागी॥
सत्यशील, कर्त्तव्यपरायन, निहछल, नेमी।
हा हा कट्टर हिन्दू, परम वैष्णव, प्रेमी॥
हा हा सीधो, सरल, सौम्य, हा साधु महाजन।
हा आडम्बररहित, हास्यप्रिय, सदा मुदित मन॥
अनुपम "भारतमित्र" पत्र कौ हा सम्पादक।
हा हा कार्य्यकुसल, अनुभवी, चतुर संचालक॥
हा हा हिन्दी-भाषा कौ अति सुन्दर लेखक।
पच्छपात सों शून्य, परम तीखो आलोचक॥
हिन्दी कविता-नभ-मंडल को तारौ रूरो।
हा उरदू-भाषा कौ कवि, आलिमहू पूरो॥
बात बात में हँसी मजाक निकारनवारो।
सुरपुर गयौ सिधार हाय सोइ मित्र हमारो॥
अहो गुप्त सुखधाम ! कहाँ तुम धाम बनायो ?
कहाँ जाय किन लोगन सों अब नेह लगायो ?

*"भारतमित्र"-सम्पादक बाबू बालमुकुन्द गुप्त के परलोक-गमन पर।

अपने "भारतमित्र" पत्र सों क्यों मुख मोर्‍यो ?
क्यों सुत, दारा, भ्रातागन सों नातौ तोर्‍यो ?
क्यों हिन्दी की ममता तुमने नाहक त्यागी ?
क्यों स्वदेश की सेवा सों ह्वै गये विरागी ?
कहै मित्र समझाय कहा तुम्हरे मन आई,
सब लोगन को त्यागि रमे सुरपुर में जाई ?
को अब "भारतमित्र" पत्र की उन्नति करिहै ?
कैसे अब सब कारज वाको तुम बिन सरिहै ?
को लिखिहै हिन्दी कौ अब इतिहास अनूपम ?
औ चिट्ठा सिवसंभू सर्मा को सुन्दरतम ?
बात बात में हम लोगनकों कौन हँसैहै ?
समय समय पर नीकी बातें कौन बतैहै ?
तुम्हरे दरसन हेत रहत मन व्याकुल निस दिन ।
करि करि तुम्हरी याद फटति है छाती छिन छिन ॥
तुम्हरो विसम वियोग हमें अब बहुत सतावत ।
लिखि न सकत कछु और अश्रु आँखिन में आवत ॥

(स० १९६४)

सप्तम प्रसून

७—स्वागत-गान !

(१)

आसावरी *

दयानिधि सुनियो विनय हमारी ।
दीन दयालु दया के सागर, दीनबन्धु दुखहारी ॥
उदय होय विज्ञान विभाकर, भारत-गगन-मझारी ।
मिटै सकल अज्ञान अविद्या, निशा घोर अँधियारी ॥

शक्तिमान कौं सब जग पूजत, शक्तिहीन को ख्वारी ।
शक्ति बढ़ै भारतवासिन की, शक्तिरूप हम नारी ॥

होंय गुनवती हमहूँ वैसिहि जैसी भई अगारी ।
वीर-वधू औ वीर-नंदिनी वीर सुअन-महतारी ॥

कलि में संघशक्ति की महिमा लिखी पुरानन भारी ।
यातें उन्नत होय नित्य ही महिला-समिति हमारी ॥

(सं० १९७२)

* प्रयाग की महिला-समिति के पाँचवें वार्षिकोत्सव के लिए ।

(२)

थियेटरी धुन*

("मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूँघरवाले" की चाल पर)

विनती सुनियो बारंबार जगत के नाथ कहानेवाले।
नैया आन पड़ी मँझधार,
नहिं कोउ पार लगावन हार,
महिमा तेरी अपरंपार
सब पर दया दिखानेवाले।

नारीगन की सुनो पुकार,
है अबला सब विधि लाचार,
हर लो उनका कष्ट अपार,
दुख को दूर भगानेवाले।

है नारी पर दारमदार,
इनसे ही भारत-उद्धार,
होगा, विद्या करो प्रचार,
सुनियो धरम सिखानेवाले॥

आगे बढ़ता है संसार,
हम फिर क्यों बैठें मनमार,
आओ बहनो हों तैयार,
प्रभु हैं राह बतानेवाले॥
(सं० १९७२)

* प्रयाग की महिला-समिति के लिए।

(३)

स्वागत-गान *

स्वागत करती हैं हम आज
सविनय हे हिन्दी-हितकारी।

तज कर काम काज को सारे
हिन्दी-प्रेम हृदय में धारे
यहाँ पर हैं जो आप पधारे
सह कर कष्ट राह के भारी।

हिन्दी है हम सबकी माता
है सुखदायी कैसा नाता
यश इसका है भारत गाता
सिन्धी, कच्छी, वंग, बिहारी।

जैसी बेटी बेटा वैसा
शिक्षा में फिर अन्तर कैसा
नहिं आदेश धर्म का ऐसा
अनपढ़ रह जावें सब नारी।

हम ही हैं पुरुषों की शक्ती,
करो हमारी सच्ची भक्ती
बिना हमारे नहिं है मुक्ती,
एक हाथ नहिं बजती तारी।

* जबलपुर के सप्तम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में महिलाओं ने इसे गाया था।

हमें मिलै अब हिन्दी-शिक्षा,
गृह-कारज की सुन्दर दिक्षा,
यही हमारी सबसे भिक्षा,
दे दो कीरत बढ़ै तुम्हारी।

भारत के सिर की यह बिन्दी,
भारत के घर की यह इन्दी,
है प्यारी यह भाषा हिन्दी,
इसकी हम जावें बलिहारी।

स्वागत करती हैं हम आज,
सविनय हे हिन्दी-हितकारी॥

(स० १९९३)

(४)

शहाना *

स्वागत प्रिय भ्राता, हिन्दी-त्राता,
भाग्य - विधाता, दया करो।
हम मारग जोहत, आसन सोहत,
विश्व विमोहत, चरण धरो।
हिन्दी - हितकारी, पर - उपकारी,
हे व्रतधारी, बन्धुवरो।
आओ इत भाई, अति हरषाई,
सोच विहाई, पूज्य नरो।

* इन्दौर के आठवें हिन्दी-साहित्य सम्मेलन की स्वागत-समिति के लिए लिखा गया।

धनि भाग हमारे, भये सुखारे,
दरस तुम्हारे, पाय अभी।
जुग पद-रज दीजै, जग जस लीजै,
नेक न छीजै, नेह कभी।
पुलकित हम ठाढ़े, आनँद बाढ़े,
वचन न काढ़े, अश्रु बहे।
पूरी अभिलाषा, तिमिर विनासा,
प्रेम प्रकासा, नित्य रहे।
इन्दौर-निवासी, और प्रवासी,
होय हुलासी, विनय करें।
आतिथ सत्कारा, नहिं विस्तारा,
भक्ति अपारा, चित्त धरें।
निज ओर निहारो, चूक बिसारो,
उर मत धारो, त्रुटि सारी।
गांधी गुन गाओ, मातु मनाओ,
श्रम-फल पाओ, नर नारी॥

(सं० १९७८)

(५)

भीम पलासी—तीनताल*

स्वागत आज तुम्हारा भाई,
स्वागत आज तुम्हारो।
स्वागत तुम्हरो करन हेत है,
समारोह यह सारो।

*कलकत्ते के तृतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में स्वर्गीय विष्णु दिगम्बर-द्वारा गाया गया।

अहो भाग्य है आज हमारो,
पायो दरस तिहारो।
तुम सुपूत हिन्दी माता के,
जस छायो दिसि चारो।
भूसन बसन अनूपम लै लै,
वाको - रूप सँवारो।
होय राष्ट्र की भाषा हिन्दी,
बानी यही उचारो।
मत देखैं तुम चूक हमारी,
अपनी ओर निहारो।
पत्र-पुष्प श्रद्धासों अर्पित,
कीजै ग्रहन हमारो॥

(सं० १९६९)

अष्टम प्रसून

८—हासपरिहास

(१)

रामायण

होलीकांड

जेहि सुमिरत सिध होय, माल खवावे पेट भर ।
छानहु नित ही सोय, भंग सदा सुखदायिनी ॥
मूक होहि वाचाल, पंगु चढ़ै ऊँचे महल ।
जासु पिये तत्काल, होली अति नीकी लगै ॥
जामवंत के वचन सुहाये । खेलन फाग सकल जुरि आये ॥
नाचत कूदत पढ़त कबीरा । कुंभकरन आवत रनधीरा ॥
आगे चले बहुरि रघुराई । पाछे लरिकन धूरि उड़ाई ॥
हरिजन जानि प्रीति अति बाढ़ी। अबिर गुलाल मल्यो धरि डाढ़ी ॥
अगर उलीचो पानी मैला । भागो तरत तजो यह सैला ॥
निज कबीर केहि लागि न नीकी । सरस होइ अथवा अति फीकी ॥
अबिर गुलाल रंग बहु नाना । भरि भरि भार कहारन आना ॥
ढोल, धमार, झाँझ, ढफ, नारी। होली में अति लागत प्यारी ॥
घुस बैठो सबके घर माहीं । मूँदहु आँख कतहु कोउ नाहीं ॥
औरहु करहु अनेक प्रसंगा । नाच कूद हुल्लड़ अरु दंगा ॥
राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ।
जी में आवे सो बको, मुँह से खोलि लगाम ॥

नाच कूद धन फूकैं सारा। तुरत होंहि भवसागर पारा ॥
कोट बूट पतलून पिन्हाई। सबहिं नचावत राम गुसाईं ॥
उछली पगिया हाथ न आई। चले राम धरि सीस रजाई ॥
कारन कवन नाथ नहि आये। कहँ धँधर में राह भुलाये ॥

सेठानी रानी बनन, बोली चख करि लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग, जनु विधु मंडल डोल ॥

फटिक सिला बैठे दोउ भाई। अतर गुलाल अबीर लगाई ॥
चले कबीर पढ़त इतराई। जहँ तहँ निरखत लोग लुगाई ॥
बिन होली सुनु राखि खगेसा। मिटहि न जीवन केर कलेसा ॥
बनै न बरनत नगर निकाई। है अबीर चारिहुँ दिसि छाई ॥
धनिक वनिक वर धनद समाना। बैठे सकल उड़ावें ताना ॥
चौहट सुन्दर गली सुहाई। गावें जहँ तहँ लोग लुगाई ॥
तेहि अवसर आये दोउ भाई। साथ लये अपनी भौजाई।
विश्वामित्र निकट बैठाये। ध्रुपद धमार खयाल वह गाये ॥
जो राउर अनुसासन पाऊँ। नाचूँ कूदूँ मौज उड़ाऊँ ॥
कहहु सखी अस को पनधारी। होली जाको लगत न प्यारी ॥
होली खेलहु अति हरखाई। वृथा मरहु जनि गाल बजाई ॥

सब मंचनि ते मंच इक, सुन्दर विसद विसाल।
पिचकारी अरु रंग लै, बैठे तहाँ भुआल ॥

राजकुँवर तेहि औसर आये। लड़कन सब स्वागत को धाये ॥
पुनि पूरब दिसि गे दोउ भाई। लरिकन ने तहँ धूम मचाई ॥
जहँ बैठी देखहिं पुर नारी। मारत दौड़ि तुरत पिचकारी ॥
देखी जनक भीर यह भारी। लागे देन सबन को गारी ॥
लखन कहा हँसि हमरे जाना। पुरुष नारि सब एक समाना ॥

छरे छबीले छैल सब, सूर सुजान प्रवीन।
मदमाते गाते चले, चुन चुन गीत नवीन ॥

जो परलोक यहाँ सुख चहहू । छानहु भंग मस्त नित रहहू ॥
सबहि विचार कीन्ह मनमाँही । बिना भाँग भलमनसी नाहीं ॥
सुन्दर सुखद सकल गुनरासी । पीवहु भंग घोट के खासी ॥
करहु जाय जा कहँ जोइ भावा । खान पान अरु सोर सराबा ॥
भाँग छान औ धूर उड़ाई । भाइन सहित चले रघुराई ॥
रामहिं निरखि ग्राम नर नारी । डारत रंग बजावत तारी ॥

मंगलमय निज निज भवन, लोगन रचे बनाइ ।
मुजरा नाच करावहीं, वेश्यन को बुलवाइ ॥

मदिरा ढालत बीती राता । चलहिं न चरन सिथिल सब गाता ॥
दादा पोता नाती नाना । मुदित करहिं कल मंगल गाना ॥
जाहिं बगीचे मिलि सब भामिनि । सुख से बीतति सारी जामिनि ॥
कोकिन पान तमाखू खाये । स्रग सुगन्ध भूपित छवि छाये ॥
रघुकुल रीत सदा चलि आई । दिन दिन दूनों टिकस लगाई ।
पुत्रवती जुवती जग सोई । गौर भक्त जाको सुत होई ॥
नाम बड़ो अरु कर्ज सदाहीं । प्रभु प्रताप कछु दुर्लभ नाहीं ॥
अस विचार जे परम सयाने । चन्दा देत सदा मनमाने ॥
रघुबंसिन में जहँ कोउ होई । पहिले चन्दा देवे सोई ॥
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं । लड़त मुकदमा कोरट माहीं ॥
नाथ वड़न कर सहज सुभाऊ । सब सों लेत देत ना काऊ ॥
जो नहिं पूजों हाकिम गोरा । भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा । बिन खिताब यह व्यर्थ शरीरा ॥
हैं खिताब बिनु जे नर नारी । तिन्हें विलोकत पातक भारी ॥

सुनि लछमन बिहँसे बहुरि, नैन तरेरे राम ।
रायबहादुर होन हित, लागे खरचन दाम ॥

(सं० १९५७–१९६२)

सुन्दर, सुघड़, सुशील सुनैना,
पतिवरता, जुवती, गुन ऐना,

ऐसिहु तिय कर किये मनमाना,
पुरुष पाव जमपुर दुख नाना ॥

(सं० १९९४)

(२)

होली

होली है भाँग छने पट्टे होली है।
बे फिक्रे रल मिल कर बैठे,
खड़कें खूब सिला बट्टे।
छानछूनके रंग लगाके
पीवें सब हट्टे कट्टे।
रंग बिरंगी होली गावें
जी भर उड़ें हँसी ठट्टे।
होली को जो करे महर्रम
उनके दाँत करो खट्टे।
मनमौजी की तान निराली
करने नित्त नये रट्टे होली है।

(सं० १९५६)

(३)

हाय प्लेग!

"जब से आवा है प्लेग हाय उड़ा होश मोरा।
रोवै के चाही हँसी ठीठी ठठाना कैसा।"
(प्रेमघन)

रोओ सब मुँह बाय बाय। हय हय प्लेग हाय हाय!
क्या कहें कहा न जाय। कहे बिना रहा न जाय।
हैजा प्लेग आय आय। भारत को विनसाय हाय।
रोओ सब मुँह०॥

बरिस पाँच अब बीते आय। अबहूँ नहिं यह जाय हाय।
बंबई को बिनसाय हाय। करांचि आदि में पहुँचा धाय।
लाखन को मरवाय हाय। तबहूँ नहिं अघाय हाय।
रोओ सब मुँह०॥

कुरनटीन❀ बनवाय हाय। चौसा† में रुकवाय हाय।
डाक्टर सों नुचवाय हाय। इज्जत मान गँवाय हाय।
उजुर माजरा लाय हाय। सौ सौ साहें खाय हाय।
तबहूँ नहिं पतियाय हाय। तुरतै टिकट छिनाय हाय।
रोओ सब मुँह०॥

चाहे धरम रहे या जाय। चाहे बाप मरे या माय।
घर की चाहे संपति जाय। राज पाट चाहे बिक जाय।
तीरथ बरत सबै कुछ जाय। ब्याह जनेऊ भी टल जाय।
पर चौसे से जान न पाय। देखो यह कैसो अन्याय।
रोओ सब मुँह०॥

भोजन को दुख हाय हाय। पानी को दुख हाय हाय।
रहिबे को दुख हाय हाय। परिवे को दुख हाय हाय।
रोगी को दुख हाय हाय। चंगे को दुख हाय हाय।
कुटियाँ सारी सड़ी गँधाय। मानो घुसी छछुन्दर जाय।

❀ Quarantine.

† ई० आई० आर० का एक स्टेशन जहाँ मुसाफ़िरों की डाक्टरी परीक्षा होती थी। जिस पर प्लेग का सन्देह होता वह रोक लिया जाता और कुरनटीन में रखा जाता था।

बात कहाँ लों कहों बनाय । जाने वही वहाँ जो जाय ।
भीतर आवे न बाहर जाय । बिना दोष के कैदी हाय ।
गोओ सब मुँह ०॥

कहँलों गाऊँ हाय हाय । कहलों रोऊँ हाय हाय ।
कोउ सुनतौ नाहीं हाय । डाक्टर करैं सो होवै हाय ।
कहाँ की आफत पहुँची आय । हक्की बक्की गई भुलाय ।
बारह मास में फागुन आय । देवी देउता आदि मनाय ।
तेरह बरिस बिदेसहिं छाय । घर को चले जब छुट्टी पाय ।
टिकट खरीद्यो अति हरषाय । धक्का मुक्का हंटर खाय ।
रोओ सब मुँह ०॥

जब फाटक पर पहुँचे जाय । रोके साहब डाँट बताय ।
पैसा दे के डण्डे खाय । यह अँधेर को कौनि उपाय ।
हाथ जोड़ औ हाहाखाय । गाड़ी में जा बैठे धाय ।
जब ही गाड़ी चौसा आय । होस हवास सबै उड़ जाय ।
डाक्टर पूछै "कहाँ से आय" । कहै मुसाफिर मनहिं डराय ।
'कलकत्ता या मुगलसराय' । सुनतहिं रोकै दस दिन हाय ।
रोओ सब मुँह ०॥

मन की आसा मनहिं बिलाय । ज्यों बुलबुला जलहिं समाय ।
प्लेग-केम्प के कैदी हाय । होली हो ली यों ही हाय ।
सब कोउ नाचें गावें हाय । कुमकुम और अबीर लगाय ।
कैदी रोवें आँसु बहाय । हय हय प्लेग हाय हाय ।
पढ़त कबीर कोऊ इतराय । डफ खंजरी अरु ढोल बजाय ।
प्यारिहिं चूमत कंठ लगाय । खेलत होली अति हरखाय ।
कोउ रंडी अरु भाँड़ नचाय । लाखन रुपिया देत लुटाय ।
कोउ रोवें मुँह बाय बाय । हय हय प्लेग हाय हाय ।
बड़े लाट उर दया बसाय । जगन्नाथ अब कहै सुनाय ।

नहिं सूझत अब आन उपाय । छाती पीट कहौं चिल्लाय ।
हरो क्लेश अब सारो आय । संकर पितु औ गौरी माय ।
रोओ सब मुँह बाय बाय । हय हय प्लेग हाय हाय ॥
(सं० १९५५)

(४)

शरद्वर्णन *

बिदा हुई है रितु बरसाती ।
आया है अब समय सरद का ।
प्रकृति ने पहना उजला कपड़ा ।
स्वेत हुई है पृथ्वी सारी ॥
सुन्दर फूले कास कपासा ।
निर्मल जल नदियों में बहता ।
सरवर में फूले अब पंकज ।
दिव्य हुई दीधित दिनकर की ॥
अब आती है देवी पूजा ।
हुए मगन परदेसी सारे ।
घर जाने का मौका आया ।
छन छन बीते वर्ष बराबर ॥
छुट्टी के दिन गिनते गिनते ।
छाले पड़ गये उँगली ऊपर ।
मात पिता की आई याद ।
भाई बन्द सहोदर अपने ॥
शत्रु, मित्र और पाड़ पड़ोसी ।
एक साथ ही याद पड़े सब ।

* खड़ी बोली छोर वर्णका अन्द ।

प्यारी की वह भोली सूरत।
नाचे हरदम सम्मुख आकर॥
काम काज से हुआ विराग।
ज्ञानी को जैसे संसार।

रोने धोने आयी छुट्टी।
बन्द हुई इसकूल, कचहरी॥
कालेज, बंक, रेलवे दफ़तर।
हाउस, हाट, वगैरह आँफिस।

घर जाने की हुई तयारी,
बाबू फिरते धूर उड़ाते॥
लगे खरीदने इत्र, फुलेला।
चूड़ी, साड़ी, दरपन कंही।

टिकुली, सेंदुर, रङ्ग, मसाले।
कत्था, चूना, पान, सुपाड़ी॥
साबुन बढ़िया, पोमेटम।
केला, नरियल, सेब, मिठाई।

और कहाँ तक नाम गिनावें।
गट्ठर लेकर पहुँचे हबड़े॥
टिकट खरीदे धक्के खाये।
कुली आय कर रङ्ग जमावे।

अपनी पूजा पहले माँगे।
पहले हुई बहुत ही हुज्जत॥
पीछे सौदा पक्का ठहरा।
यदि कुलियों से करो ढिठाई।
वजन होयगा माल तुम्हारा।
और लगेगा भाड़ा तिगुना॥

इससे कुलियों की ही पूजा।
करना है सब भाँत से अच्छा।
रुपया, धेली जो कुछ माँगे।
देकर अपना काम निकालो॥
ब्राह्मण, क्षत्री, बनिया, सुद्दर।
हैं गाड़ी में चारों दरजे।
फस्ट, सेकेंड की भारी इज्जत।
क्योंकि उनमें चढ़ते गोरे॥
इंटर की है थोड़ी थोड़ी।
थर्डक्लास की कुछ मत पूछो।
पैसे देकर डंडे खाय।
त्राहि माँ! यह कैसी बात!
राम राम कर गाड़ी मिली।
एक डब्बे में पन्द्रह घुसे।
ले ले दे दे होने लगी।
घंटा बोला सीटी बजी॥
गाड़ी हुई रफूचक्कर तब।
बाकी खड़े खड़े मुँह देखें।
मानो लुट गई सम्पद इनकी।
घर को लौटे महा उदास।
जिनकी गाड़ी छूटी आहा॥

(सं० १९५८)

(५)

वसन्त-वर्णन

शेष हुआ जाड़े का मौसम,
आया है अब समय वसन्ती।

मुग्ध हुए सारे नर नारी,
लता, वृक्ष, पशु, पक्षी कोयल ॥
सारी दुनिया मस्त हुई है,
मानों सबने छानी गहरी।

हुआ प्रकृति का रूप निराला,
अहा! क्या अच्छी है शोभा॥
है आकाश स्वच्छ अति सुन्दर,
सूरज भी अब तेज हुआ है।

नहिं सर्दी, नहिं गर्मी ज्यादा,
ओ हो क्या प्यारी हैं रातें॥
बौरे आम अधिक सुखदायी,
कुहू कुहू है कोयल करती।

मन्द मन्द वायू है चलती,
लिये गन्ध अति भीनी भीनी॥
फूले सेमा ढाक विपिन में;
पर केवल है रंगत अच्छी।

है नहिं इनमें गन्ध तनिक भी,
नाम बड़े और दर्शन छोटे॥
रूप देख आये बहु पक्षी,
पर लौटे अपना मुँह लेकर।

इससे कवि कहता है भाई,
जो कुछ चमके सो नहिं सोना॥
गेंदा और गुलाब, गुलतुरी,
हुए सकल इक साथ प्रफुल्लित।
गुंजत मधुकर मधु की खातिर,
भूमि हुई गुलशन का टुकड़ा॥

रहे वृक्ष जो लुंड मुंडे,
उनमें भी अब पत्ते निकले।

कलकत्ता

कलकत्ते का ढङ्ग निराला,
उलटी बहे जहाँ पर गङ्गा।
यहाँ न दाल किसी की गलती,
चाहे हो वसन्त का बाबा।
नभमंडल में धूआँ धूसर,
भरी कीच-सी सारी सड़कें।
बड़ा बाजार मुहल्ला मैला
कर क्या सके वसन्त विचारा।
हाँ क्वाटर जो हैं अँगरेजी
वह हैं बारह मास वसन्ती।

होली

अब होली की सुनिए गाथा
परम पवित्र, विचित्र, मनोहर।
झाँकी बलदाऊ की बाँकी
तल्ला बाँस गली में है जो।
भाई जी* की ताना री री
क्या अद्भुत है रस टपकाती।
मुखिया खड़े लिये पिचकारी
मारें ताक लगाय निशाना।
जिस नारी पर पड़ती बूँदें
धन्य धन्य अपने को कहती।

* बलदेव जी के मन्दिर के प्रधान कीर्त्तनियाँ।

खैर, चलो अब याँ से हटकर
औ देखो गलियों की शोभा।
सेठानी लहँगा फटकारे
छोड़ रही ऊपर से पानी,

नीचे खड़े सेठ मतवाले
गाते गीत बड़े बेढङ्गे।
क्या खासी होली की सूरत,
वह देखो ! यह अभी बनी है।

नीचे सेठ ऊपर सेठानी,
खूब हुई है छीछालेदर।
लड़कों ने क्या धूम मचायी,
बाबू का मुँह काला किया;

पहनाई जूते की माला,
और लगाया रबर का छापा।
क्या उमदा होली का भड़ुआ,
अभी बनाया सबने इसको।

आओ चलें सिंदुरिया पट्टी,
जहाँ लगी है हुस्न की मंडी।
रंग बिरंगी साड़ी पहने,
ताक रहे महताब के टुकड़े।

रस की नदी यहीं बहती है,
जै वैतरनी पार उतरनी।
नहीं वृथा है जन्म तुम्हारा
होली है भई ! बुरा न मानो।

(सं० १९५९)

(६)

राय बदली*

किसी धरम पर जब नहिं भक्ती,
हुई मेम से तब अनुरक्ती।
ईसा पर विश्वास जमाया,
क्रिस्तानी से नेह लगाया॥
आय पिता ने लात जमाई,
फिरी राय तब मेरी भाई।
है मौका जब ऐसा आता,
बदल विचार सभी का जाता॥

फिर 'समाज'—को देखा-भाला,
नहीं जहाँ कुछ और कसाला।
केवल आँखें करके बन्द,
खाओ पीओ करो अनन्द॥
विधवा से लेने की शिक्षा,
हुई चित्त में मेरे इच्छा।
पर क्वारी से हुई सगाई,
फिरी राय तब मेरी भाई॥
है मौका जब ऐसा आता,
बदल विचार सभी का जाता॥

मिलकर नास्तिकों के संग,
इसपेनसर का देखा ढङ्ग।

---

* गीत नं० ६-७-८ डी० एल० राय के "हासिरगान" की छाया पर।

खुला मांस मदिरा का द्वार.
दीं ईश्वर ने कन्या चार।
धन चिन्ता तब आगे आई.
फिरी राय तब मेरी भाई॥
है मौका जब ऐसा आता।
बदल विचार सभी का जाता.

इस्पेनसर का छोड़ा ध्यान.
छोड़ा बिसकुट बीफ निदान।
जब कुछ हिन्दु धर्म्म का सार,
लगा समझने खूब विचार.
थियासफी का देखा जाल.
उलझ गया उसमें तत्काल।
मन में बात और कुछ आई,
फिरी राय तब मेरी भाई।
है मौका जब ऐसा आता.
बदल विचार सभी का जाता।

थियासफी का ईश्वर कैसा,
परब्रह्म या भूतों जैसा,
थे करते जब यहीं विचार,
हो गइ तब लीला विस्तार।
फाँसी डाल ले चले यम,
रहा विचार न बाकी हम।
है मौका जब ऐसा आता,
बदल विचार सभी का जाता।

(स० १९६३)

(७)

नया काम कुछ करना

नया काम कुछ करना साधो
नया काम कुछ करना।
लड्डू पेड़े पापड़ छोड़ो, घास पात अब चरना।
कान कटाना नाक छटाना, उलटे होकर चलना।
इत्र गुलाब लवंडर छोड़ो, तेल किरासन मलना।
उछलो, कूदो, दौड़ो, फाँदो, फुदक फुदक कर धाओ।
घोड़ा छोड़ो गाड़ी छोड़ो, भैंसों पर चढ़ जाओ।
दाल भात तरकारी छोड़ो, छोड़ो मौसी मामा।
धोती कुरता चादर छोड़ो, पहनो एक पजामा।
रल मिलकर सब कोई दौड़ो, पहुँचो टाउन हाल।
हिन्दूपन पर लेकचर झाड़ो, गाओ ताल बेताल।
कलम चलाओ बात बनाओ, गला फाड़ चिल्लाओ।
हिन्दू धरम प्रचार करो भइ, होनोलूलू जाओ।
यदि अधीर तुम होते भाइ, तो अब मूँड़ कटाओ।
पर्वत पर से कूदो अथवा, जल में गोते खाओ।
नये ढङ्ग से जीना अथवा, नये ढङ्ग से मरना।
नया काम कुछ करना साधो, नया काम कुछ करना।

(सं० १९६३)

(८)

नहीं होता है

नहिं होता है हम जो चाहें,
है विधना की उलटी राहें।

(क)

हम चाहें जब बरसे पानी,
तब तो मरे इन्द्र की नानी।
हम चाहें जब निकसे घाम,
पानी बरसे तब सब ठाम।
कम दामों में दामी माल,
लेकर रहें सदा खुशहाल।
हम तो चाहें ऋण के दाता,
कभी न देखें अपना खाता।
हँसते ही बन जावे काम,
पड़े न देना एक छदाम।
नहिं होता है हम जो चाहें,
है विधना की उलटी राहें॥

(ख)

नारी मिले रूप गुन खान,
खाकर मार करे सनमान।
बेटा ज्यादा बेटी कम,
हों पैदा यह चाहें हम।
कम खरचे में लड़की ब्याहें,
लड़के दायज खूब उगाहें।
हम चाहें हैं सदा जवानी,
बनी रहे ताकत मरदानी।
धन कुबेर के होय बराबर,
कामदेव-सा रूप मनोहर।
नहिं होता है हम जो चाहें,
है विधना की उलटी राहें।

(ग)

अक्ल हमारी हो कुछ तेज,
बीबी करे सदा परहेज।
मिले सदा सुख हमें घनेरा,
घर से दुख का उठे बसेरा।
गुण गावे हमरा जग सारा,
दुश्मन जावें ठाकुरद्वारा।
जब ट्रेनों पर हों असवार,
गोरे करें शिष्ट व्योहार।
आफिस में भी साहब लोग,
मधुर वचन का करें प्रयोग।
हम चाहें हैं वस्तु अनेक,
मिलै न लेकिन हमको एक।
इससे हम कहते हैं साधो!
चाहे पकड़ो चाहे बाँधो।
नहिं होता है हम जो चाहें,
है विधना की उल्टी राहें।

(स० १९६६)

(९)

वैयाकरण दम्पती

प्रियवर, प्रियतर, प्रियतम प्यारे।
फागुन में क्यों बैठे न्यारे?
हम तुममें कब सन्धी ह्वैहै?
शुद्ध रूप हमरो ह्वै जैहै?
हम प्रत्यय तुम धातु विलच्छन,
तुमसों मिलि सफल मम जीवन।

हम व्यंजन तुम स्वर स्वाधीन.
तुम बिन हम हैं अति ही दीन।
अलंकार तुम, कविता हम हैं.
बिना तुम्हारे हम बेदम हैं।
अपादान कारक नहिं चहिये.
द्वन्द समास यहाँ बनि रहिए।
करौ क्रिया कछु कर्त्ता होई.
जासों कर्म्म प्रगट हो कोई।
"स्यतिस्यनः" कब होइहैं दूर.
"निपतम्" को चलिहैं दस्तूर।
भयौ यहाँ पर छन्दोभंग.
करौ आय शोधन को ढङ्ग।

तुम्हारी
भगवती

उत्तर

हे भगवती! प्राण की प्यारी:
पाई चिट्ठी आज तुम्हारी।
पाती पढ़ी तुम्हारी जा छन
भूले सकल लिंग अनुशासन।
पुनि पुनि कोप निहार्‌यो जाई।
अर्थ भाव तब पर्‌यो लखाई।
तुम अधिकरणरूप हो प्यारी।
हमें भरोसो तुम्हरो भारी।
है हलन्त तुम्हरे बिन प्यारी,
दिन दिन बाढ़त व्यथा हमारी।
याद तुम्हारी जब ही आवे,
हमको लुप्ताकार बनावे।

सहि नहिं सकत सन्धिविच्छेदन,
कर्तृवाच्य को है परयोजन।
साधत रूप औ धातु निकालत,
विरह-व्यथा तुम्हरी है सालत।
बिन्दु विसर्ग तनिक नहिं जानत
टिड्ढाणं तुमको ही मानत।
सर्व्वनाम तुम्हरो ही योग्वत,
करि अव्यय निज मन को पोषत।

तुम्हारा
भगवान।

(स० १९३४)

(१०)

होली है।

खाओ पीओ मजे उड़ाओ। होली है भई होली है॥
घर भीतर या होटल जाओ। होली है भई होली है॥
इसमें कुछ भी मत शरमाओ। होली है भई होली है॥
देसी बिसकुट केक मँगाओ। सुरा स्वदेशी अथवा लाओ॥
देसी की रट खूब लगाओ। होली है भई होली है॥
पीओ पीओ फिर फिर पीओ। जब तक जीओ तब तक पीओ
इसे उधेड़ा उसको सीओ। होली है भई होली है॥
ग्रामोफोन रेकर्ड हों ताजा। जिन्हें खरीदें बाबू राजा॥
खाली पेट बजाओ बाजा। होली है भई होली है॥
कलकत्ते में बड़ी बहार। धड़ धड़ दौड़ें मोटरकार॥
हुआ स्वदेशी खूब प्रचार। होली है भई होली है॥
राजा राव देश के सारे। हुए स्वदेशी से सब न्यारे॥
कठपुतली हैं बने विचारे। होली है भई होली है॥

अपना नहीं उन्हें हथियार । औरों का लेने लाचार ॥
पोलो खेल बने होशियार । होली है भई होली है ॥
जब से हुआ स्वदेशी जारी । मनचेस्टर की हुई खुआरी ॥
भूखों मरे विलायत मारी । होली है भई होली है ॥
जियें बाप से दंगमदंगा । मुए बाप पहुँचावें गंगा ॥
खुल गई धोती हो गये नंगा । होली है भई होली है ॥
पिता पुत्र से चली लड़ाई । हाईकोर्ट की पड़ी दुहाई ॥
घर के भीतर हुई सफाई । होली है भई होली है ॥
सब से वही पक्ष है आला । जो गाली की जपता माला ।
कहे बाप से मां का साला । होली है भई होली है ॥
पंच पधारे हाईकोर्ट । खर्च किये कितने ही नोट ॥
गई नहीं पर दिल की चोट । होली है भई होली है ॥
सेठानी मिठने जब गावें । गुप्त प्रकट सब खोल दिखावें ॥
सेठ बैठ के कान हलावें । होली है भई होली है ॥
अब के सर्दी ज्यादा पड़ी । इससे हुई न कांग्रेस खड़ी ॥
टूट गई है उसकी लड़ी । होली है भई होली है ॥
नरम गरम में हुआ विवाद । सूरत में हो गया फसाद ॥
हुई कांग्रेस तब बरबाद । होली है भई होली है ॥
गरम कहें हम आगे चलें । नरम कहें हम नांहीं हलें ॥
हाथ बैठ अब दोनों मलें । होली है भई होली है ॥
नरम गरम दोनों होशियार । करते हैं भारत-उद्धार ॥
चली खूब जूती पैजार । होली है भई होली है ॥
जान मार्ली भोले भाले । फिलासफी के किये निवाले ॥
रहें सदा पतलून सम्हाले । होली है भई होली है ॥
मिंटो ने जब तान लगायी । जान मार्ली के मन भायी ॥
तब रिफ़ौर्म की पड़ी दुहाई । होली है भई होली है ॥
हुआ रिफ़ौर्म बहुत ही आला । सबको पकड़ जेल में डाला ॥

बन्द किया ऊपर से ताला । होली है भई होली है ।।
हुई कमीशन शाही जारी । इसमें भी कुछ है अय्यारी ।।
देखो अब क्या करे मदारी । होली है भई होली है ।।
एंड्रू फ्रेजर छोटे लाट । बने पुलिस के पूरे भाट ।।
ऐब दोष सब जाने चाट । होली है भई होली है ।।

(सं० १९६४)

(११)

होली है

गई दिवाली, आई होली । घर घर में है मची ठठोली ।।
भर भर लाओ रंग की झोली । होली है भई होली है ।।
मिंटो गये हार्डिंज आये । नये नये हैं फूल खिलाये ।।
बंगाले में बजे बधाये । होली है भई होली है ।।
आये राजा, आई रानी । चली गई दिल्ली रजधानी ।।
कलकत्ते की मर गइ नानी । होली है भई होली है ।।
बंगाले के दोनों पाट । जोड़ गये देखो सम्राट ।।
बने सुरेन्द्र पूरे भाट । होली है भई होली है ।।
घोष महाशय मोतीलाल । हुआ अजब है उनका हाल ।।
नाचें नाँच सभी बेताल । होली है भई होली है ।।
गया उड़ीसा, गया बिहार । मचा बंग में हाहाकार ।।
बाबू रोये जार बेजार । होली है भई होली है ।।
पटने पर आई है रंगत । मुसलमान की बैठी पंगत ।।
बंगाले की छूटी संगत । होली है भई होली है ।।
सबसे बड़ा लंठ है दादा । भोला भाला सीधा सादा ।।
जैसा कीचड़ वैसा कादा । होली है भई होली है ।।

(सं० १९६८)

(१२)

गई दिवाली, होली आई। लड़कों ने तब धूम मचाई॥
बनते हैं ब्राह्मण अब नाई। होली है भई होली है॥
जागा है हिन्दू-संसार। महिमा जिसकी अपरंपार॥
खम्भ बने चारों सरदार। होली है भई होली है॥
सबसे बड़ा सनातन धर्म। बिरला समझे उसका मर्म॥
जय जय बोलो होकर गर्म। होली है भई होली है॥
'भारतमित्र' बदल कर रूप। सागर से बन बैठा कूप॥
चलनी लेकर छोड़ा सूप। होली है भई होली है॥
गांधी जी बैठे मन मार। नेहरू बाबा करें पुकार॥
दो खेवे में बेड़ा पार। होली है भई होली है॥
सत्यदेव का सच्चा बोल। हिन्दू-सभा का पीटें ढोल॥
लम्बोदर के भीतर पोल। होली है भई होली है॥
सम्मेलन वृन्दावनवाला। डाल चुका कितनों पर पाला॥
सत्यदेव का हुआ कसाला। होली है भई होली है॥
कवि-सम्मेलन हुआ अनूठा। तुक्कड़ चाटें पकड़ अँगूठा॥
अश्लीलता का दावा झूठा। होली है भई होली है॥
नागर ने सम्मेलन छोड़ा। मंत्रीगण को मारा कोड़ा॥
बहुत दिनों का फूटा फोड़ा। होली है भई होली है॥
टण्डन जी बैठे चुपचाप। कूद पड़े मतवाले आप॥
सिर पर चढ़ बोला है पाप। होली है भई होली है॥
पंडित नेहरू मोतीलाल। नाचे नाँच बड़े बेहाल॥
जाते हैं जल्दी ननिहाल। होली है भई होली है॥
मुसलमान हिन्दू का मेल। हुआ हवा या रेलमपेल॥
नागड़ दिन्ना नागर बेल। होली है भई होली है॥
एक नहीं हैं हिन्दू आरज। साटन सूर्य नहीं है सारज॥
हसन निजामी हैं आचारज। होली है भई होली है॥

जब तक रही खिलाफत जारी । तब तक सोये मियाँ मदारी ॥
गई खिलाफत मिटी बीमारी । होली है भई होली है ॥
हिन्दूगण में एका भारी । मन्दिर में भी पिटें पुजारी ॥
पंडित जी की है बलिहारी । होली है भई होली है ॥
रीडिंग जाते उड़ हैं आते । अपना अपना शंख बजाते ॥
साम्हर जा साम्हर बन जाते । होली है भई होली है ॥
पतितों का कर दो उद्धार । समझ बराबर विप्र चमार ॥
हो रोटी बेटी व्योहार । होली है भई होली है ॥

(सं० १९८७)

(१३)

दिवाली के बताशे

वर्षा बीती सरदी आयी । घरघर में अब हुई सफायी ॥
देह साफ पर मन है मैला । बाहर साधू भीतर छैला ॥
चिल्लमफोड़ की हुई पुकार । मनटेगू ने किया सुधार ॥
बदल दिया कौंसिल का रूप । गड्ढे में बनवाया कूप ॥
कूएँ में गिरने को मेंढक । लगे कूदने लेकर सहनक ॥
हुआ कूप पर जमघट भारी । लगे झाँकने बारी बारी ॥
हुए बहुत-से उम्मीदवार । आपस में करके तकरार ॥
मुसलमान हिन्दू से भिड़े । ब्राह्मण से अब्राह्मण लड़े ॥
सिख ईसाई साधू सन्त । सबने खूब निपोरे दन्त ॥
जब से हुई खिलाफत जारी । खोला सूथन पहनी सारी ॥
अली बंधु और गांधी बाबा । जैसी काशी वैसा काबा ॥
तीनों ने मिल तीर चलाये । कांग्रेस को वह अति ही भाये ॥
ननकपरेशन पास हुआ है । देखो खाली रहा कुआँ है ॥

कूद पड़े मेंढक बरसाती । लगा सनीचर साढ़ साती ॥
सूखा कुआँ न पानी उसमें । घर से लाकर भर दो उसमें ॥
मेम्बर बने कूपमंडूक । खाली कर अपना सन्दूक ॥
मोहन मदन मालवी प्यारे । रहते हैं गांधी से न्यारे ॥
पिता पुत्र में हुई मल्लाह । इस किश्ती के हमीं मलाह ॥
पिता रहे कुछ पीछे हटके । पर बेटे जी पहुँचे डटके ॥
खापर्डे दादा जी साहब । रहे तिलक के सदा मुसाहब ॥
कुएँ में वह भी गिरते हैं । लाख कहो पर नहिं फिरते हैं ॥
है सुरेन्द्र की खैंचातानी । मिनिस्ट्री का पीटें पानी ॥
मारवाड़ पर छींटे पड़े । देवीगम वहीं पर अड़े ॥
पोतदार की पड़ी दुहाई । गंगा किरिया राम दुहाई ॥
लारड सिंहा बने गवरनर । कांग्रेस के होकर वह सर ॥
बंगाली कुप्पा बन बैठे । मन में भी हैं अपने ऐंठे ॥
हमने आगे बाजी मारी । अब तो बातें सुनो हमारी ॥
हम साहब तू मत्तू खोर । मेड़आबादी मत कर शोर ॥
आई दिवाली हुआ दिवाला । घर दर का हो गया कबाला ॥
लगे जुए में राजा बाबू । जिन पर नहीं किसी का काबू ॥
है बजार शेअर का ढीला । हुआ रंग बहुतों का पीला ॥
कलकत्ता अब हुआ 'स्वतंत्र' । पढ़ता है गांधी पर मंत्र ॥
काशी भूली कल और परसों । 'कहे आज' चाहे हों बरसों ॥
है हड़ताल नया ही रोग । लगता है सबको ही भोग ॥
ट्राम गैस औ कुली मजूर । मेहतर औ साईस हुजूर ॥
सबने मिलकर छोड़ा काम । खाना पीना हुआ हराम ॥
खोलो टेंट करो विश्राम । बोलो भाई सीताराम ॥

(सं० १९७७)

(१४)

अनामिका*

(समालोचना)

आई "अनामिका" अद्भुत,
धन्यवाद देता हूँ।
करूँ क्या आलोचना मैं,
और दूँ क्या सम्मति भी।
देखा, पढ़ा, सोचा, किन्तु,
समझ में न आया कुछ।
अद्भुत है आविष्कार,
रचना भी नई है।

कविता है

छन्दोबद्ध किन्तु नहीं,
गद्य है न पद्य है।
दोनों का मिश्रण है,
अजब अनूठी यह अकथ कहानी है।
रम्य है बेतुका छन्द,
बोली बोलचाल की भी।
किन्तु असमार्जनीय है,
छन्दच्युत पदावली।
स्वेच्छाचार अनुचित है,
आदर के योग्य नहीं।
नियम-विरुद्ध कार्य्य
नूतन भी निषिद्ध है। (सं० १९८१)

---

* पं० सूर्य्यकान्त त्रिपाठी निराला-लिखित निराले छन्दों का यह संग्रह है। इसकी आलोचना भी इसी छन्द में की गई है।

(१५)

वाह तेरी माधुरी*

मोहती है, मोहती है, जोहती है मग, वाह तेरी माधुरी।
कूजती है, गूँजती है, पूजती है जग, आह तेरी माधुरी।
डोलती है, बोलती है, खोलती है मुख, वाह तेरी माधुरी।
खेलती है, पेलती है, ठेलती है दुख, आह तेरी माधुरी।
दौड़ती है, धूपती है, हाँफती है अब, वाह तेरी माधुरी।
कूदती है, फाँदती है, नाचती है जब, आह तेरी माधुरी।
देखती है, भालती है, झाँकती है फिर, वाह तेरी माधुरी।
ठोंकती है, पीटती है, कूटती है सिर, आह तेरी माधुरी।
तोड़ती है, फोड़ती है, मोड़ती है गिन, वाह तेरी माधुरी।
चाटती है, चूमती है, काटती है दिन, आह तेरी माधुरी।
नापती है, जोखती है, तोलती है कन, वाह तेरी माधुरी।
माँगती है, जाँचती है, बाँटती है धन, आह तेरी माधुरी।
गरजती है, बरसती है, चमकती है नित, वाह तेरी माधुरी।
लटकती है, फटकती है, मटकती है इत, आह तेरी माधुरी।
लरजती है, गरजती है, बरजती है यों, वाह तेरी माधुरी।

---

* लखनऊ की "माधुरी" के पहले अंक में श्रीयुत लाला मैथिलीशरण गुप्त की लिखी 'माधुरी' नाम की कविता छपी थी जिसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं--

"पिक कूजते, अलि गूँजते, द्रुम फूलते हैं आह तेरी माधुरी।
सब फूल खिल खिलकर डालियों पर झूलते हैं वाह तेरी माधुरी।
हाँ धधकती है, भभकती है आग जल जल आह तेरी माधुरी।
कलकल विकल जल उछलता है चपल पल पल वाह तेरी माधुरी।"

इन्हीं पंक्तियों को सामने रख यह लिखी गई है।

फड़कती है, कड़कती है, भड़कती है ज्यों, आह तेरी माधुरी।
तानती है, मानती है, जानती है सब, वाह तेरी माधुरी।
गेरती है, फेरती है, टेरती है अब, आह तेरी माधुरी।
राम की है, काम की है, नाम की है वह, वाह तेरी माधुरी।
सुप्त की है, लुप्त की है, गुप्त की है यह, आह तेरी माधुरी।

आह तेरी माधुरी, वाह तेरी माधुरी।
चाह तेरी माधुरी, राह तेरी माधुरी॥

(सं० १९७९)

रघुनन्दन जदुनन्दन दोनों बैठे पूरी खाते हैं।
माता उनकी पान लगावे खड़े बाप जी गाते हैं॥*

(सं० १९७०)

---

* एक बार दोनों लड़के (रघ्घो जद्दो) पूरियाँ खा रहे थे और उनकी माता पान लगा रही थीं। मैं वहीं खड़ा एक मित्र से व्रजभाषा और खड़ी बोली के सम्बन्ध में बातें कर रहा था। मेरे मुँह से निकला कि व्रजभाषा से खड़ी बोली में पद्य बनाना सहज है। इस पर मित्र आश्चर्य्य के साथ बोल उठे कैसे ? मैंने कहा ऐसे। बस तुकबन्दी तैयार हो गई।

(सं० १९७०)

(१६)

तिलहर-कवि-सम्मेलन के निमन्त्रण-पत्र का उत्तर

(१)

आया निमन्त्रण-पत्र,
कविता-सम्मेलन का।
बैठक को बाकी जब
रहे दिन चार ही।
लिखता कविता पर,
आई नहीं बुलाने से।
भारती भवानी भी॥

(२)

धन्यवाद बार बार,
देता हूँ कृपा के हेतु।
कीजिए क्षमा, पहुँचा
नहीं तिलहर जो।
कीजिए सुकाव्य पर,
छन्द का न लेना नाम।
भाषा का भी श्राद्ध कर,
कचूमर निकालिए।
रसालंकार का॥

(३)

आप कविकिंकर हैं,
हम हैं निराले कवि।
कविता निराली भली,
साक्षी मतवाला है।

छायावाद, मायावाद,
कायावाद, जायावाद,
आयावाद खोज खोज ।
हिन्दी में धकेलिए ॥

(४)

मानो या न मानो बात,
देखो "छविछायी* है" ।
"भामिनी* उदार की",
"करते* हैं" स्वागत औ ।
जोड़ते समस्या भी,
करते कामना और
देते हैं दुआ भी राज,
सफल हो सम्मेलन ।
कविता विचारी का ॥

(सं० १९८७)

(१७)

नया नखशिख†

(१)

जिसके उरोज फुटबौल के बराबर हों,
सरच लाइट के समान ही नजर हो ।
जमुना ब्रिज पिलर के-से हों नितंब मोटे;
स्वेज की नहर मेखला-सी जिस पर हो ;

* समस्यायें ।

† सन् १९३० ई० की फ़रवरी के "विशाल भारत" में पं० रामनरेश त्रिपाठी जी के दो कवित्त उक्त शीर्षक से छपे थे । उन्हें देखकर ही यह

त्रिपाठी के दिल में दिमाग में दिखावे में भी,
ब्रजभाषा की हित कामना-सी कमर हो।
ऐसी नायिका का प्रवेश रामनरेश करें,
खड़ी बोली के सुकवियों के घर घर हो॥

समस्यापूर्ति की गई है। त्रिपाठी जी ने अतिशयोक्ति तथा हीन उपमाओं से काम लिया है पर मैंने वैसा नहीं किया है। हाँ यतिभंग की नकल ज़रूर की है। त्रिपाठी जी के वे दोनों आदर्श कवित्त यों हैं--

(१)

जिसके उरोज मिस्र देश के पिरामिड हों,
रेडियो के विद्युत तरङ्ग-सी नजर हो।
भारी भारी भूधर समान हों नितम्ब मोटे,
चीन की दीवार मेखला-सी जिस पर हो।
साहब के दिल में दिमाग में दिखावे में भी,
हिन्दी की भलाई के खयाल-सी कमर हो।
ऐसी नायिकाओं का निवास भगवान करे,
हिन्दी के कवित्तप्रेमियों के घर घर हो॥

(२)

भाल हो अरोरा बोरिएलिस समान और,
ध्रुव की निशा-सी केशराशि सिर पर हो।
चश्मा-समेत दोनों आँखें साइकिल-सी हों,
ऊँट ऐसी गति हो सुमति में सिफर हो।
लाल लाल चीकने टोमेटो ऐसे गाल लाल,
गाजर-सी नाक रक्तमूली-सा अधर हो।
ऐसी नायिकाओं का निवास भगवान करे,
हिन्दी के कवित्तप्रेमियों के घर घर हो॥

अब पाठक ही विचार लें कि किसकी उपमायें स्वाभाविक और ·दर हैं।

(२)

भाल हो विशाल जैसे मरुभूमि सहरा की,
अलकतरे-सा काला केस सिर पर हो।
ऐनक-सहित आँखें रेलवे सिगनल-सी,
इंजिन जैसी गति औ मति में कुफर हो।
लाल लाल चीकने हों सेब जैसे गाल दोनों,
घुइया-सी नाक लाल स्याही-सा अधर हो।
ऐसी नायिका का प्रवेश रामनरेश करे,
खड़ी बोली के सुकवियों के घर घर हो॥

(सं० १९८७)

(१८)

कबीर

अररररर भैयन मोर कबीर।
काली जी काली भली, सोभा अपरम्पार।
हाथ खड्ग खप्पर लसे, फल चारों दातार॥
प्रथम तिन काली को सिर नावत हों।
पहन कोट पतलून को, मुँह में चुरुट दबाय।
चाखैं बिसकुट बीफ अरु, मदिरा होटल जाय॥
भला ये मिस्टर हो गये बाबू से।
लंडन में मिस्टर बने, लाये संग में मेम।
कहैं फूल माँ बाप को, तजि के हिन्दू-नेम।
भला यह देखो मौज विलायत की।
विधवा ब्याह चलाइहों, स्वामी जी की आन।
जाति बखेड़ा दूर करि, बाभन सुद्र समान॥
भला हम कट्टर देश-हितैषी हैं।

देखहु आँख पसारि के, एक तमाशा आज।
बाप न मारी पीदड़ी, बेटा तीरंदाज॥
भला यह सच्चे मुर्गी मेजर हैं।
बबूर पात की दोनियाँ, तामें तनक पिसान।
लाला जी लागे करन, कबों कबों यह दान॥
हाँ हाँ बड़ा कलेजा इनका है।
(सं० १९५५)

(१८)

नहीं किसी से डरना बाबा।
नहीं किसी से डरना॥

खाओ पीओ मजे उड़ाओ, मन आवे सो करना। बाबा०
छुआछूत को धता बताओ, भूलो कच्ची पक्की।
मेज मेज से काम चलाओ, फेंको चूल्हा चक्की। बाबा०
बाग बगीचा घर को बेचो, पीटो लीक पुरानी।
न्योछावर में होड़ लगाओ, छान भंग मनमानी। बाबा०
चौक काज में बेला बाँटो, बड़ी बरातें लाओ।
घर बैठे लोगों की भी तुम, पहरावन ले आओ। बाबा०
वेद शास्त्र का पढ़ना छोड़ो, छोड़ो सन्ध्या-वन्दन।
फक फक धुआँ उड़ाने भाई, दौड़ो सीधे लन्दन। बाबा०
गो-सेवा को दूर भगाओ, पालो घोड़े कुत्ते।
यारों की अब करो पार्टी, पितरों को दो बुत्ते। बाबा०
कन्या को वर बूढ़ा ढूँढ़ो, जुवती को वर छोटा।
खोज खोज कर विधवा ब्याहो, मार मार कर सोटा। बाबा०
दे तलाक ब्याही बीबी को, बन जाओ सब मिस्टर।
पालागन व्योहार पुराना, छोड़ो मादर सिस्टर। बाबा०

खीर और लपसी को छोड़ो, कलिया केक उड़ाओ।
लँहगा लुगरा चीर फाड़कर, गाउन ही पहनाओ। बाबा०
जूट पाट का करो फाटका, हाथ रहे नहिं खाली।
बच्चों को कलकत्ते भेजो, जिसमें करें दलाली। बाबा०

(सं० १९८८)

(२०)

विनती

सालिगराम[1] सुनौ मम विनती,
यह वरदान दया करि पाऊँ।
छुआछूत का भूत भगाऊँ,
मन भावे तहँ खाऊँ।
तोड़ूँ लीक पुरानी सारी,
नूतन चाल चलाऊँ।
परदा फाड़ूँ राज सिनेमा,
बीबी को ले जाऊँ।
विजया छोड़ूँ चाय उड़ाऊँ,
जनटलमैन कहाऊँ।
फेरि सगाई आठ बरस की,
धनिओं को अपनाऊँ।
विधवाओं का ब्याह कराऊँ,
महासभा गुन गाऊँ।
नहिं बरात में जाऊँ कबहूँ,
पै पहरावनि पाऊँ।

(सं० १९९३)

---

(१) द्वादश माथुर चतुर्वेदी महासभा के सभापति रायबहादुर चतुर्वेदी शालिग्राम जी पाठक M. A. रिटायर्ड कलक्टर और मजिस्ट्रेट।

(२१)

माघ सुदी सातें दिन, एतवार तीन बजे।
कलकत्ता नगरी में, भीड़ भड़कन्त है।
सम्भूनाथ मल्लिक की, गली नम्बर एक के।
भवन सुभव्य माँहि, तबला ठुकन्त है।
बसन्त कौ पतौ लेन, आये कवि पंडितहू।
कोऊ ट्राम, मोटर पै, पैदल चलन्त है।
चश्मा लगाय आय, देखौ कैसे ठाठनसों।
बानक बनाय बैठो, बबुआ बसन्त है।*
(म० १९३१)

(१)

टेसू†

(क)

टेसू अब के रंग रँगीले। टेसू अब के छैल छबीले॥
बंग देश का कव्वा काला। मेरठ में टेसू ने पाला॥
पढ़-लिख के जब हुआ सयाना। खोली सुन्दर एक दुकाना॥
हुई सुरा की बिक्री खासी। बन बैठा पीछे संन्यासी॥
छोड़ सकल जग के दुख-दन्द। मस्त हुआ तब कागानन्द॥

---

* कलकत्ते के एक वसन्तोत्सव के सभापति प० गांगेयनरोत्तम-शास्त्री जी थे जिनके सिर पर लम्बे, लम्बे घूँघरवाले बाल हैं। सुरमा, टीका लगा सभापति के आसन पर आसीन थे। समस्या थी "बसन्त" इसी की पूर्त्ति यह है।

† मथुरा, आगरे की तरफ़ आश्विन में लड़के-लड़कियाँ "टेसू झेंझी" के ब्याह का खेल खेलते और मनमाने गीत बना बनाकर गाते हैं, जिनका कुछ अर्थ नहीं होता है।

अगम निगम की बोलै बात। दौड़ा फिरै लगाये घात॥
मथुरा जाय जमाया अड्डा। किया खूब फिर गड्डमगड्डा॥
हुए नृपतिगण उसके चेले। केसर भंग छने भर बेले॥
हंसराज के पंख लगाकर। कव्वा चला वहाँ से उड़कर॥
पहुँचा पहले राजपुताना। दिल्ली काशी फिर मुलताना॥
रूप देख बहु पक्षी आये। सबने उसको शीश झुकाये॥
जगन्नाथ के करके दर्शन। पहुँचा आय कालिका पत्तन॥
सबने उसे यहाँ पहचाना। वह भी मन में कुछ शरमाना॥
गली नहीं कुछ दाल यहाँ पर। भागा अपना-सा मुँह लेकर॥
खाओ पीओ करो अनन्द। धन्य धन्य तुम कागानन्द॥
धर्म्म भवन को सुनो कहानी। है टेसू की सच्ची बानी॥
जब से हम इस जग में आये। धर्म्महि से सब काम चलाये॥
धर्म्मध्वजी है नाम हमारा। धर्म्म तत्त्व है प्राण हमारा॥
धर्म्महि की है यह सब माया। धर्म्महि से यह पाली काया॥
धर्म्महि से यह पेट बढ़ाया। तेल फुलेला आदि चलाया॥
धर्म्महि है रुजगार हमारा। बिना धर्म्म के नहीं गुजारा॥
धर्म्म-दुहाई देकर भाई। माँगें रुपये लाख अढ़ाई॥
धर्म्म करेगा भला तुम्हारा। कर्म्म भवन बन जाय हमारा॥
यद्यपि शुद्र हमारी जात। तो भी भिक्षा माँगें प्रात॥
धर्म्मभवन की नीव खुदाई। लाओ लाओ चन्दा भाई॥
अब देखो दुनिया का रंग। क्या अच्छा है इसका ढङ्ग॥
देना है सो देते जाओ। लेने का मत नाम चलाओ॥
मिले लाख हमको पैंतीस। हुए जल्द हम लक्षाधीस॥
जो कुछ है सो माल हमारा। खूब करेंगे वारा-न्यारा॥
क्यों रोते हो तुम सब भाई। यदि लक्ष्मी मेरे घर आई॥
चाहे रचो कोट फरफन्द। देंगे नहिं कौड़ी हरचन्द॥
चाहे व्यर्थ जाय सब दाम। धर्म्महेतु नहिं एक छदाम॥

कान खड़े कर सुन लो बात। जो धन जैसा वैसे जात॥
है दुनिया की चाल अनूठी। जाता नहिं कोइ बाँधे मूठी॥
नहिं आवे नहिं जावे साथ। बहती गंगा धोलो हाथ॥
टम्मू आये लेव असीस। जीओ लड़के लाख बरीस॥

(म० १०,६०)

(ख)

अब देखो कलजुग का गौहर। उसके बाप न माँ के शौहर॥
पैदाइश है बाद हवाई। ईसा का है छोटा भाई॥
नाशकेतु औ करन वही है। हनूमान, सुत पवन वही है॥
मकरध्वज भी वही कहावे। कहाँ तलक कोइ नाम गिनावे॥
आफिस से जब घर को आया। छत पर दस्तरखान बिछाया॥
घरवाली भी आई पास। नाज दिखाती अपना खास॥
हँसते हँसते वह तब बोला। बड़े भाग यह पाया चोला॥
प्यारी मैं हूँ बड़ा दबंग। खूब जमा है मेरा रंग॥
बहुतों को बुत्ते में लाया। बाम्हनपन का ढङ्ग लगाया॥
जात पात पूछे नहिं कोई। हरि को भजे सो हरि का होई॥
डरता मुझसे सकल जहान। रहें सभी ढलकाये कान॥
बना एडीटर अब मैं पक्का। जिसको कहो लगाऊँ धक्का॥
कितने ज्ञानी, पंडित, कविवर। करें खुशामद मेरी आकर॥
राजनीत का बन गया सार। विद्या मेरी हुई अपार॥
उपन्यास का ढेर लगाया। जाल लयाकत का फैलाया॥
है हिन्दी में मेरी धाक। कर दूँ सबको शीघ्र अवाक॥
मेरा है अब ढङ्ग निराला। भाषा मेरी सबसे आला॥
कभी कवायद पढ़ी न जानी। घर ही बैठा हो गया ज्ञानी॥
दुनिया में जो गुन हैं आला। सबका मैं कर चुका निवाला॥
हुआ न होगा कोई ऐसा। राम कृपा से मैं हूँ जैसा।
तू भी अपना भाग सराह। मिला तुझे जो मुझसा नाह॥

तुझसी नारी मुझसा नाह। वाह्रे मैं भई वाह्रे वाह॥
टेसू झेंझी करें सगाई। लड़के खावें बैठ मिठाई॥
(सं० १९६१)

(ग)

वंगभूमि की कोयल कानी। विन्ध्याचल तट जाय ब्यानी॥
जिस दिन उसने अंडा दिया। सब चिड़ियों का न्योता किया॥
न्योता खाकर पंछी गये। उसने घर में जलसे किये॥
जब अंडा कुछ हुआ गरम। हर्ष हुआ तब उसको परम॥
लेकिन जिस दिन अंडा फूटा। मन बहुत ही उसका टूटा॥
अंडे से एक निकली नारी। जो थी अधवा सधवा क्वारी॥
बरस अठारह उसकी उमर। लंबे बाल औ पतली कमर॥
उड़ी खबर यह चारों ओर। हुआ जगत में भारी शोर॥
करने को उसके दरसन। आये कितने पंछीगन॥
आये कितने पंडित लेखक। चौबे, दूबे, पाँड़े, पाठक॥
जब निकले उसके दो पर। मन में उसके हुआ फखर॥
कलम पकड़ औ आँखें खोल। बोली तब वह वचन अमोल॥
यद्यपि मैं हूँ अबला जात। बोलूँ तो भी बढ़के बात॥
सब मर्दों के ऊपर चढ़ूँ। दोष सकल उन पर ही मढ़ूँ॥
नीचे रहना अब नहिं भला। फैलाऊँगी उलटी कला॥
लड़कों ने तब धूम मचाई। धन्य धन्य कोयल की जाई॥
कलजुग की गति देखो न्यारी। नीचे नर हैं ऊपर नारी॥
(सं० १९६१)

(घ)

विचित्र जीव

अलीपूर का चिड़ियाखाना। पड़ा वहाँ एक तख्त पुराना॥
उस पर है एक मोटा गद्दा। तकिया जिस पर रक्खा भद्दा॥

अगल बगल है जिसके टट्टी। एक कोने में रक्खी मट्टी॥
पड़ी पुस्तकें चारों ओर। कागज और कलम का जोर॥
देखा वहाँ अजब एक जीव। सड़ियल चेहरा शुतरी ग्रीव॥
लंबे दुबले उसके अंग। तंबाकू-सा उसका रंग॥
यद्यपि नहिं है उसके दुम। "एष" न समझो उसको तुम॥
जब हँसता है दाँत निकाल। सूरत बनती महा कराल॥
जिस दिन उसका हुआ जनम। मात पिता के खुले करम॥
जबहिं सम्हाला उसने होश। आया तब उसको कुछ जोश॥
जोश में आय किया उत्पात। खाये कितने जूते लात॥
अधिक मार खाने से डरकर। भागा घर से जान बचा कर॥
एक सज्जन ने देकर दाम। भेजा उसको काशी धाम॥
काशी जाकर खोदा कुआ। एक रात में पंडित हुआ॥
मिला वहाँ उसको एक लहरी। उसने उसे बनाया शहरी॥
शहरीपन का देखो रंग। बदल गये सब उसके ढंग॥
भाव बदल कर उड़ा अकास। जहाँ न कोई फटके पास॥
शुद्ध हवा जब उसको लगी। तब अँधियारी उसकी भगी॥
मन में उसने तब यह जाना। दुनिया पागल मैं हूँ स्याना॥
हैं सब झूठे बेईमान। मैं सच्चा औ ज्ञान-निधान॥
चलके सबका करूँ सुधार। कर दूँ सबका बेड़ा पार॥
यह विचार के पीछे फिरा। औंधे मुँह धरती पर गिरा॥
कुछ लोगों ने उसे उठाया। उस तख्ते पर आन लिटाया॥
जब फिर आया उसको होश। बोल उठा तब करके रोष॥
कलकत्ते में भारी पोल। छन में दूँगा उसको खोल॥
क्या कर लेगा मेरा कोई। कब का फेंक चुका हूँ लोई॥
जब तक मेरे तन में बल। बना रहूँगा खूब अटल॥
चाहे मारो जूते लात। नहिं छोड़ूँगा अपनी बात॥
रात दिवस बोलूँगा झूठ। सब पर अपनी छोड़ूँ मूँठ॥

लाखों सबको दूँगा गाली। माँ को कहूँ बाप की साली॥
जहँ बैठूँ वाँ करूँ उजाड़। जहाँ बाग वाँ कर दूँ झाड़॥
जिसको चाहूँ मैं लड़वा दूँ। जहाँ कहो जूते चलवा दूँ॥
मात पिता में जो हो द्वंद। उसमें मुझको बड़ा अनन्द॥
लड़कों ने तब शोर मचाया। सिर पर सारा शहर उठाया॥
भागा है भई भागा है। उसकी दुम में धागा है॥
टुकड़े तोड़े दिन बहलाये। अब रावन ने हैं बुलवाये॥

गुरु जी का हाल

कहो गुरु जी कैसा हाल। उड़ गई चोटी रह गई खाल॥
फैलाये कितने ही जाल। गली नहीं पर मेरी दाल॥
रही हमारी जो कुछ पोल। यारों ने सब डाली खोल॥
नाहक मैं उलझा बे तौर। किया नहीं कुछ पहले गौर॥
"टिड्डाणां" की ढाल बनाई। उलटी सीधी खूब सुनाई॥
पर आखिर को मुँह की खाई। अपनी करनी आगे आई॥
जान गये सब लड़के बच्चे। नौकर चाकर अक्ल के कच्चे॥
जान गई देखो घरवाली। नौकर चाकर पीटें ताली॥
जो चाकरनी पान लगाती। वह भी हमें देख मुसकाती॥
इससे सबको भेजा घर। तनहा करते यहाँ गुजर॥
बैठे थे हम मन को मारे। भाई बंद आ गये सारे॥
मोटे मोटे लट्ठ उठाये। बोले कल्लू कस बुलवाये॥
तो सँग को करि सकै मरोरि। अभी देहिं हम माथा फोरि॥
करने को तब मदद हमारी। लगी दौड़ने दुनिया सारी॥
सबके आगे जोड़े हाथ। खूब दिया भई तुमने साथ॥
आये पहले हाथीराम। कोई न जाने जिनका नाम॥
हैं कृतज्ञ हम सबके भाई। अंका बंका सजन कसाई॥
मरहट्टों ने रख ली लाज। इससे जान बची है आज॥

तो भी कुछ कुछ हैं गुर्राते । चुपके चुपके हैं चिचिआते ॥
स्पेनसर का लेकर नाम । बोलो लड़को सीताराम ॥

गुरु के पिट्ठू

बिना बुलाये हम थे आये । दोनों हाथों सहनक लाये ॥
संसकिरत की तोड़ी टाँग । घोट पीस के छानी भाँग ॥
पीकर भाँग हुए बेहोश । सरपट दौड़े सतरह कोस ॥
अजब रसायन तब है बना । जैसे गीदड़ वैसे धुना ॥
ली उतार पुरखों की पगड़ी । नाक पकड़ के सबकी रगड़ी ॥
पंडितप्रवर हुए तब हम । वाहरे भई वाहरे हम ॥
राजा जी का गुन था गाया । हाथ नहीं एक धेला आया ॥
टूट गई है सारी आस । इससे दिल है बहुत उदास ॥
चूक गये हम अपनी चाल । रह गई चोटी उड़ गई खाल ॥

(सं० १९६३)

(ङ)

स्वागत

बरसा बीती सरदी आई । टेसू जी की पड़ी दुहाई ॥
आओ आओ टेसू प्यारे । रहो न अब तुम हमसे न्यारे ॥
रोते रोते टेसू आये । आँखें बंद औ मुँह को बाये ॥
टेसू अब के ढीले ढाले । टेसू अब के भोले भाले ॥
देख देख दुनिया का ढंग । हुआ फक्क टेसू का रंग ॥
टेसू जी का सुन लो हाल । जैसे बीता अब का साल ॥

दरबार

टेसू ने दरबार लगाया । सब लोगों को पकड़ बुलाया ॥
रायबहादुर राजा आये । खान बहादुर मुल्ला आये ॥
आये सारे पदवीधारी । ऐरे गैरे मीर शिकारी ॥
सबने मिलकर यह फरमाया । रहै हुजुर का हम पर साया ॥

भक्त शिरोमनि हम हैं बाबा। हैं हुजूर ही काशी काबा॥
जो कुछ हुकम करें सरकार। हम करने को सब तैयार॥
शक मत करना हम पर भाई। कसम खुदा की राम दुहाई॥
हम जपते हैं नाम तुम्हारा। नहिं इसमें है दोष हमारा॥
माँ बहन औ भाई बाप। जो हैं सो सब आपी आप॥
हम हुजूर के रहें गुलाम। टेक हमारी रक्खे राम॥

अखबार

चल मेरे रहँटा चरख चूँ, कहाँ की बुढ़िया कहाँ का तूँ।
तुझसे मुझसे क्या संबंध, सूरज रहते तू है अंध।
अंधे धुंधे करें पुकार, बंद करो देसी अखबार।
अखबारों ने शोर मचाया, सिर पर सारा देश उठाया।
काले गोरे फ़क बतावें, जब देखो तब खरी सुनावें।
मन आवे सो बकते हैं, सदा दोष को तकते हैं।
अगर रहेंगे यह स्वाधीन, कर डालेंगे तेरह तीन।
इनका रहना नहीं है भला, दूर करो यह जल्दी बला।
रचके बढ़िया कोई कौशल, भेजो इनको तुरत रसातल।
बात हमारी है कानून, जैसा रेशम वैसी ऊन।
होगा जब इनका मुँह बन्द, हम सोवेंगे तब स्वच्छन्द।

गुरु चेला

सबसे ऊँचा सिमला सैल, उस पर बैठा बूढ़ा बैल।
बैलराम ने कही कहानी, मारवाड़ में बरसा पानी।
पानी पीकर चेला बोला, बड़े भाग यह पाया चोला।
कहो गुरु जी "अब के कराँ, के उपाय से खीसा भराँ।"
फैलाये कितने ही जाल, बिकता नहीं विदेसी माल।
सब लेते हैं वस्तु स्वदेशी, खपत उसी की होती बेशी।
दुर्गापूजा आई पास, टूट चली है सारी आस।

घाटा बढ़ता है दिन रैन, रहती है तबीयत बेचैन।
जब से बन्द विदेशी हाट, उलट गये कितनों के टाट।
अब तो बोलो सोच विचार, जिससे होवे बेड़ा पार।
गुरु महाशय यों उठ बोले, मेरा आसन कभी न डोले।
जो रखते मुझ पर विश्वास, उनकी पूरी होती आस।
नमकहलाली करते जाओ, मन में कुछ भी मत घबराओ।
धीरज धरे सो उतरे पारा, भला करे भगवान तुम्हारा।
आँखें मूँद करो व्यापार, दो खेवे में बेड़ा पार।
देशी के तुम निकट न जाओ, अपनी खिचड़ी अलग पकाओ।
बीत गया उसको मत सोचो, घर में बैठे छप्पर नोचो।

पुलिस और बंगाली

इमली की जड़ से निकली पतंग, उससे निकला गोरा रंग।
गोरा रंग बहुत है आला, उससे निकला गरम मसाला।
गरम मसाला ऐसा तेज, निकली उससे कुर्सी मेज।
कुर्सी से निकली है खाट, उस पर बैठे छोटे लाट।
छोटे लाट बड़े होशियार, उससे निकला पुलिस सवार।
पुलिस सवार की वर्दी काली, चौंक पड़े उससे बंगाली।
कुट पिटके पहुँचे मैदान, नई दिखाई अपनी शान।
बं बं भोला बं बं भोला, घोटो पीसो छानो गोला।
गोला गोली करें तमाशा, छन में रत्ती छन में माशा।
माशे से बन बैठा सेर, गंडक तीर लगाया ढेर।
फैल गया फिर चारों ओर, राजा, बाबू, पंडित, चोर।
टेसू ने जब भेद बताया, पकड़ पकड़ कर ढेर लगाया।
अब तो बात पहुँची दूर, दिल्ली ढाका मिदनापूर।
कलकत्ता है बना पलासी, करती घर घर पुलिस तलाशी।
पुलिस कमिश्नर जावें साथ, लेकिन आवें खाली हाथ।

देखो कैसा बढ़िया स्वांग, पड़ी यहाँ कूए में भाँग।
पीकर भाँग हुए बेहोस, सौ दिन चले अढ़ाई कोस।
पहले बोले वह है मीर, हम लें तुक्का तुम लो तीर।
टेसू जी की खैर मनाओ, अपने कपड़े आप बनाओ।
करके वस्तु विदेसी बन्द, खाओ पीओ करो अनन्द।
(सं० १९६५)

(च)

स्वागत

बहुत दिनों पर टेसू आये, सिर पर सारा शहर उठाये।
टेसू जी का ऐसा पेट, जैसे फोर्ट विलियम का गेट।
कोता गर्दन आँखें लाल, फूले-फाले दोनों गाल।
मोटी अकल औ कद है लंबा, टौनहाल का जैसे खंबा।
लेकर साँस चलावें भाथी, बिना सुंड के जैसे हाथी।
आओ आओ टेसू राजा, मारवाड़ का खाओ खाजा।

धर्म्म

टेसू ने जब संख बजाया, झेंझी ने तब नगर बसाया।
उसमें एक अनूठी रीत, बिना नींव के उठती भीत।
पड़ा वहाँ कुछ ऐसा जोग, आकर बसे बहुत से लोग।
आये वहाँ मुटक्करचन्द, आँखें उनकी दोनों बन्द।
दुर्गा देवी हीरा पन्ना, आये कितने बन्नी बन्ना।
आये दुबले पतले सेठ, सावन हरे न सूखे जेठ।
बोला बनकर वह सरदार, अमल हमारा दोनों पार।
"काको जी ने जो कुछ छोड़ा, उसको मार भगाया कोड़ा।"
अब बाकी है केवल नाम, जैसी बदली वैसी घाम॥
रहते थे पहले बीमार, था टट्टी का तब दरबार।

जल अनङ्ग ने काटी फुनसी, बजने लगी चैन की बंसी।
पहले अपना किया सफाया, पीछे सब पर डालूँ छाया।
यह वेदान्त का सच्चा सार, घर दर बेचो करो उधार।
छोड़े हमने सब ही कर्म्म, अब तो सिर्फ सनातन धर्म।
जपो निरंतर ब्रह्म नरायन, हो जाओ बस लट्टू परायन।
सुनकर सबने किया विचार, चले जल्द जूती पैजार।
उछली खूब फटाफट जूती, चौतल्ले पर बोले तूती।
जितने देखे रँगे सियार, वही धर्म के ठेकेदार।
बेचें सदा विदेसी खाँड़, खातों में लें रकमें माँड़।
हुआ न झगड़ा अब भी तै, बोलो धर्म्म सनातन जै।

समाजी

आगे बढ़े समाजी भाई, दिन दूने औ रात सवाई।
निराकार का करके ध्यान, समझें सब को एक समान।
जैसा ब्राह्मण वैसा नाई, जैसी जोड़ू वैसी ताई।
निराकार है सब जग छाया, नाहक मनुआ फिरै भुलाया।
जात पाँत पूछो मत कोई, होम करै सो आरज होई।
रोटी बेटी का व्योहार, करके कर दो बेड़ा पार।
है इससे क्या अच्छा काम, होता मीठा कलमी आम।
होते हैं खच्चर बलवान, काटे हैं घोड़ों के कान।
जिये बाप को करो सलाम, मुरदों के क्यों लेते नाम।
मुर्गपाल औ बिसकुट देवी, हिन्दू बनकर खायँ जलेबी।

विभक्ति

है विभक्ति का भारी रगड़ा, देव दनुज का जैसा झगड़ा।
अपनी डफली अपना राग, पहनो जाकेट फेंको पाग।
है विभक्ति की खैंचातानी, व्याकरण की मर गई नानी।

जैसे कर्जन वैसे तुम, उनके मूँछ न तुम्हरे दुम।
उनने किये बंग दो पाट, तुम विभक्ति को डालो काट।
सुनकर बोला एक हठीला, है अच्छा तो साग मठीला।
ब्रह्मा भी आकर समझावें, तो भी हम अपनी ही गावें।
सुनो हमारी, कुछ मत कहना, अब अच्छा है चुप ही रहना।
व्याकरण है बात हमारी, आई नर है, आया नारी।

राजनीति

आया एक स्वर्ग से नाई, उसने खोदी गहरी खाई।
खाई में जब निकला पानी, बड़े लाट ने बूटी छानी।
बूटी का जब आया रंग, तब रिफार्म का निकला ढंग।
ढंग देख दौड़े नरनारी, कहाँ का लुगरा कहाँ की सारी।
मुसलमान मन में इतरावें, अपनी खिचड़ी अलग पकावें।
अर्ज हमारी सुनो हुजूर, हिन्दुओं से रक्खो दूर।
हक्क हमारा हमको मिले, कली हमारे दिल की खिले।
बाहर चिकना भीतर खाली, करें नृपतिगण नमकहलाली।
नमकहलाली ऐसी तेज, हैं प्रसन्न जिससे अँगरेज।
अँगरेजों की मथुरा न्यारी, जैसी ब्याही वैसी क्वारी।
नरम गरम का नहीं विचार, जो बोले सो खावे मार।
नौका करके देस निकाला, पुलिस बनी माधू की खाला।
बड़े जज्ज हैं जिनकिन साहब, फ़्लेचर उनके बने मुसाहब।
हाइकोर्ट की रख ली लाज, जय जय जय जिनकिन महराज।
"हितवादी" का देखो रंग, गर्म पच्छ से करता जंग।
तो भी उसकी आई शामत, पुलिस कोर्ट में बनै हजामत।
यह देखो कुदरत के खेल, घुटी चाँद पर गिरते बेल।

(सं० १९६६)

(६)

स्वागत

भादों बीता आसिन आया, टेसू के घर बजा बधाया।
मुक्तिपुरी में है तैयारी, टेसू जी की चली सवारी।
बहुत दूर से टेसू आये, सुरती फाँके पान चबाये।
भर भर लोटे पीओ भंग, तब देखो टेसू के रंग।

पहला रङ्ग

पहला रंग बहुत है आला, गंगा में है गिरता नाला।
नाले से निकला है पानी, मेलट्रेन की सुनो कहानी।
काश्मीर से आई केसर, कव्वा भागा उसको लेकर।
उसके पीछे दौड़ी दुनियाँ, शर्मा, वर्मा, धोबी, धुनियाँ।
गिरजा, भोला, शिव के दास, केशव, कमला भट्ट निरास।
राम, श्याम औ नमोनरायन, सूर के स्वामी कामपरायन।
कितने दौड़े गेरे गैरे, मियाँ मदारी नत्थू खैरे।
सबने मिलकर उसको पाया, पलट गई तब उसकी काया।
बोला फिर वह आँखें खोल, आओ खूब बजावें ढोल।
करें अभी कुछ ऐसे काम, लगे न जिसमें अपना दाम।
नाम बढ़े औ पाकिट भरे, रिन की बला यहाँ से टरे।
हम चौधरी पोप सरदार, अमल हमारा दोनों पार।
होगा जो कुछ हुक्म हमारा, मानेगा उसको जग सारा।
हिन्दी के जितने हैं लेखक, सबके सब हैं पूरे अहमक।
हमें नहीं उनकी परवाह, सदा हमारी उलटी राह।
भारत शशि औ भारत जेवर, जिसको कहो खिलावें घेवर।
बुत्ता देकर सबको लाओ, पीछे उनको धता बताओ।
अपना घर है अपने लोग, लड्डुआ पूरी मोहनभोग।

बाधा डालें वह बेकूफ, चटपट करो उन्हें मौकूफ।
सुनकर सबने कहा यही, तुम कहते हो सो सब सही।
मन में अपने कुछ मत डरो, करना है सो जल्दी करो।
हम सब देंगे साथ तुम्हारा, पक्का समझो वचन हमारा।

दूसरा रङ्ग

रंग दूसरा ऐसा आया, तम्बू ताना भवन बनाया।
रक्खी उसमें कुर्सी मेज, और बिछायी सुन्दर सेज।
आय पड़ा कुछ ऐसा योग, हुए इकट्ठे आकर लोग।
आये उसमें राजा राव, बाबू आये चढ़कर नाव।
डिपटी, मुंसिफ और वकील, सखी सूम कंजूस बखील।
बी० ए०, एम० ए०, एल-एल० बी०, काव्यतीर्थ सम्पादक भी।
आये कितने बूढ़े ज्वान, पढ़े लिखे, मूरख, नादान।
देवी, दुर्गा, भैरव काली, सबने मिलकर पीटी ताली।
जब मोहन ने बंसी फूँकी, अपनी अपनी सबने बूँकी।
सबके मुँह पर छायी जरदी, पुलिस ने पहनी काली वर्दी।
काला नीला ऐसा रंग, हुआ न पूरा कोई ढंग।
हुई न पदवी दोनों वितरण, भारत शशि औ भारतभूषण।
जो बैठे थे आस लगाये, रह गये वह तो मुँह की खाये।
देखो कैसा हुआ तमाशा, बजी न खँजड़ी, बजा न ताशा।

तीसरा रङ्ग

खटमल का अब देखो जौहर, उसकी माँ के हुए न शौहर।
रामकृष्ण वैकुंठ बिहारी, पड़ी दुहाई उनकी भारी।
मिली आयकर एक कुमारी, हुए पाँव तब उसके भारी।
जच्चा ने जब देखा बच्चा, भेद बताया अपना सच्चा।
है खटमल का यही स्वभाव, चुपके से करता है घाव।
साँझ सबेरे दोनों जून, छिप छिपकर पीता है खून।

पीकर खून हुआ मतवाला, अदना से बन बैठा आला।
मुँह का मीठा, मन का मैला, घर में मजनू बाहर लैला।
मुँह पर बोले मीठी बात, पीछे करे सदा वह घात।
जितने देखे शंकर वर्ण, होते उनके लंबे कर्ण।
है टेसू की सच्ची बानी, समझे जिसको बिरला ज्ञानी।

चौथा रङ्ग

बोल बे मुर्गा कुकरूँ कूँ, बता कहाँ से आया तूँ।
मुर्गी एक स्वर्ग से आयी, हबड़े में वह गंगा न्हायी।
न्हाय धोय जब हुई तयार, अंडे उसने डाले चार।
दो अंडे उड़ गये अकास, पड़े रहे दो उसके पास।
जब वह दोनों अंडे फूटे, आसमान से तारे टूटे।
बड़े हुए जब दोनों चूजे, लगे ढूँढ़ने तब खरबूजे।
लगा नहीं जब कहीं ठिकाना, बंगाले में पाया दाना।
हुगली नदिया सूता नट्टी, इधर उधर की खोदी मट्टी।
कुछ दिन रहकर भागा एक, हुआ दूसरे का अभिषेक।
खुश होकर वह ऐसा फूला, पिछली बातें सबही भूला।
सर्दी गर्मी छाया धूप, भूल गया वह अपना रूप।
मनमौजी की ऐसी मौज, देखे दरिया समझे हौज।
जो थे उसके दादा बाप, सबको मारी उसने थाप।
ऐसा कुल में हुआ सुपूत, कहता है पुरखों को ऊत।
देवर भाभी करें अनंद, सुख से सोवें मूसरचंद।

आशीस

हिन्दीवाले करके मेल, उन्नति के ही खेलें खेल।
त्यागे अपना सब अभिमान, हठधर्मी की छोड़े बान।
जो हैं भाषाभाषी भिन्न, उन्हें करे नहिं कोई खिन्न।

उर्दू की अब तज कर प्रीत, हिन्दी के ही गावें गीत।
टेसू आये लेव असीस, जीओ लड़को! लाख बरीस।

(सं० १९६७)

(ञ)

देखो आये टेसू राम, झुक झुक उनको करो सलाम।
खाओ बेझर अथवा मिस्सा, टेसू जी का सुन लो किस्सा।
लड़कों ने इक बिल्ली पाली, छोटी मोटी भोली भाली।
की उसने कुत्ते से यारी, घूम फिरी वह दुनिया सारी।
हुआ एक ही उसके बच्चा, वह था बड़ा अकल का कच्चा।
जब कहता वह औंधी बात, तब लगती थी उसके लात।
खाकर लात हुआ सज्ञानी, दिखलाता है भाषादानी।
भाषादानी का है जोर, वन में बोले कौवे मोर।
कौवे ने तब नाक कटाई, सम्मेलन की पड़ी दुहाई।
बिन अंकुश हैं कालीदास, भूल गये वह सन्धि समास।
हैं कपिराज बड़े सज्ञान, कालिदास के काटे कान।
सत्यदेव की कथा पुरानी, अब के फेरा उस पर पानी।
अब देखो दुनिया का खेल, मारवाड़ में दौड़ी रेल।
रेल राँड़ ने किया बखेड़ा, ऊँटों का कर दिया निबेड़ा।
फिरें ऊँट जी मारे मारे, गरदन ताने दुम फटकारे।
ऊँटों ने फिर किया विचार, कलकत्ते को भेजो तार।
सेठों पर है हक्क हमारा, है मालवी कौन बेचारा।
उसे न देना एक छदाम, होगा इसमें बड़ा सुनाम।
कैसे हिन्दू, कैसा देस, हैं सब धोखे के उपदेश।
राय बहादुर परम उदार, ऊँटों की बस सुनो पुकार।
ऊँटभवन पहले बनवाओ, पीछे चर्चा और चलाओ।

कलकत्ते का बड़ा बजार, रहते हैं जहँ साहूकार।
साहूकार करें मनमानी, विद्यालय की ऐंचातानी।
तीन लाख औ तीन करोड़, दोनों में अब हो गइ होड़।
देखो किसकी होती जीत, अपने अपने गावें गीत।
खोलो पगड़ी बाँधो साफा, होगा इसमें बड़ा मुनाफा।
सागर में है गिरती गंगा, हुआ ईद पर भारी दंगा।
हाट बजार हुए सब बंद, घर में बैठे मूसरचन्द।
मूसरचन्द बड़े बकलोल, खाकर मार बजावें ढोल।
लुटे पिटे और खायी मार, गो माता की जै जैकार।
हुआ गजट में है गुन-गान, पुलिस कमिश्नर धन भगवान।
छोड़ी धोती पहनी सारी, तो भी हुई न कमीशन जारी।
आई देखो बड़ी बहार, होगा अब दिल्ली-दरबार।
हुआ न होगा जैसा कभी, होगा वैसा सचमुच अभी।
धूम-धाम है चारों ओर, हुआ जगत में भारी शोर
हीवेट साहब छोटे लाट, करते हैं दिल्ली में ठाट।
अब के शान बड़ी है आला, होगा निश्चय ठाट निराला।
राजा बाबू औ उमराव, सबको है जाने का चाव।
घर दर बेचो करो उधार, पर देखो दिल्ली-दरबार।
आवेंगे भारत-समराट, छोटे बड़े अनेकों लाट।
आवेंगी महरानी मेरी, संग लिये सखियाँ बहुतेरी।
आवेंगे कितने ही लोग, आन पड़ा कुछ ऐसा जोग।
सुन लो सारे नर औ नारी, यही हुक्म निकला सरकारी।
गाँव गाँव में कर दो धूम, नौचंदी का लगे हुजूम।
सब लड़कों को पकड़ बुलाओ, लड्डू पेड़े उन्हें खिलाओ।
करो रोशनी ऐसी तेज, पार करे जो नहर स्वेज।
राजभक्ति का चले प्रवाह, लगे न जिसकी कुछ भी थाह।
चार रोज की यह सब बातें, फिर तो वही अँधेरी रातें।

महाराज आवें या जावें, टेसू बैठे संख बजावें।
लड़को समझो करो खयाल, टेसू जी की है यह चाल।
टेसू को अब करो सलाम, बस होता है खतम कलाम।
(सं० १९६८)

(झ)

आओ आओ टेसूचन्द, बटन लगाओ खोलो बन्द।
फेंको कुरता पहनो कोट, छोड़ो किश्ती लाओ बोट।
टेसू जी की कथा निराली, सुनकर लड़को पीटो ताली।
कन्या एक कुँआरी आई, जो थी सब जग की भौजाई।
उसने अपना रंग जमाया, मुनशी जी को पकड़ बुलाया।
आकर मिला एक बंगाली, धोती जिसकी ढीली ढाली।
तीनों मिलकर नाचे नाँच, सच्ची झूठी जाने पाँच।
पाँच पंच का यही कलाम, खाओ पीओ करो सलाम।
जो कुछ निकला वह है सार, मार पीट जूती पैजार।
होता है जंगल में मंगल, हुआ अनोखा अब के दंगल।
दंगल ने फैलाये पैर, काशी जी की कर लो सैर।
अब दंगल की सुन लो लीला, आया पहले एक हठीला।
आये पीछे बूढ़े बाबा, खाते मक्खन मिसरी मावा।
गुत्थंगुत्था धींगा मुश्ती, हुई खूब दोनों में कुश्ती।
चेले से अपने कर मेल, हठीदास ने खेले खेल।
पर बुड्ढे की हो गई जीत, रहे हठी जी गाते गीत।
फिर बिहार की आई बारी, नूतन ताजा नया बिहारी।
लीडर के चिन्तामनि स्वामी, घटघट व्यापक अन्तर्यामी।
मेरी सुनो बिहारी भैया, भला करेंगे कुँवर कन्हैया।
बिना मुधोलकर सूनी सेज, टेबुल चेयर कुर्सी मेज।
औरों पर मत ध्यान लगाओ, मेरी खातिर उन्हें बुलाओ।
बोला सुनकर सिंह बिहारी, नहीं गलेगी दाल तुम्हारी।

है बिहार का जैसा हाल, बस गोखले कृष्णगोपाल।
उन पर ही हम सदके जावें, नहीं किसी को और बुलावें।
खरे और ईदल जी वाचा, कनवेनशन के ताऊ चाचा।
किया उन्होंने यह निरधार, "राव मुधलकर जायँ बिहार।
चाहे नाक कटे या कान, बनना है घुसकर मेहमान।"
सुनकर चले मुधलकर राव, बिना बुलाये करके चाव।
दो मुल्लों में मुर्ग हराम, सुन लो भैया सुन्दर श्याम।
कलकत्ते का हुआ सुधार, घर दर बेचो करो उधार।
इसको तोड़ो उसको फोड़ो, इसे लपेटो उसको मोड़ो।
यहाँ बिगाड़ो वहाँ बनाओ, इसे रुठाओ उसे मनाओ।
होगा इससे बेड़ा पार, सुन लो लड़को कान पसार।
देखो कैसे पुलिस कमिश्नर, रंडीगन से बैठे कुढ़कर।
कहते हैं उनसे हट जाओ, अपने डेरे अलग जमाओ।
हुआ न होगा ऐसा कभी, हैं कहते यह बाबू सभी।
पुलिस कमिश्नर हे महराज, बाबूगन की रख लो लाज।
देखो भाई धरम सनातन, बातें सच्ची नहीं पुरातन।
जितने देखे रँगे स्यार, वही धर्म के ठेकेदार।
देवर भाभी करें अनन्द, सुख से सोवे मूसरचन्द।
घर की देवी मार भगाई, बाहर की से प्रीत लगाई।
घर में ही कर लिया नियोग, लड्डुआ पूरी मोहनभोग।
चले विलायत टेसू भैया, डूब गई मोधू की नैया।
हुर्रे हुर्रे हिप हिप हुर्रे, धर्म्म भवन के उड़ गये धुर्रे।
(सं० १९६९)

(ञ)

भादों भागा आसिन आया, पलट गई टेसू की काया।
काया ने जब गाया गीत, मिल बैठे तब दोनों मीत।

मीतराम ने छानी भंग, बदल गया कैसर का ढंग।
बोला कैसर "अस्ट्रीयन सुनो, सर अपना अब तुम मत धुनो।
आगे बढ़कर मारो हाथ, हम तुम्हारा देंगे साथ।
कौन लड़ेगा हमसे भाई, हम हैं सबके सगे जमाई।
रूस बड़ा है मटियाफूस, फ्रांस विचारा है मनहूस।
हैं अँग्रेज हमारे नाना, उनसे कुछ नहिं होना जाना।
बस बोलो अब बं बं भोला, तोप तमंचा गोली गोला।"
कैसर के यह सुनकर बोल, अस्ट्रीयन ने पीटे ढोल।
बस फिर दोनों हुए तयार, काठ के घोड़े जीन सवार।
जीन सवार ने किया विचार, जा पहुँचे रूसी के द्वार।
जार यार ने मजा चखाया, आस्ट्रीयन का हुआ सफाया।
अब जर्मन की देखो जंग, हुए तोबड़े उसके तंग।
कमर बाँधकर कैसर चला, बेलजियम ने पकड़ा गला।
लस्टम पस्टम आगे बढ़ा, सबक सलोना उसने पढ़ा।
फ्रांसीसी फक्कड़ सरदार, अँग्रेजों का खुला बजार।
दोनों ने मिल खेले खेल, हुई खूब है रेलमपेल।
गुत्थमगुत्था हाथापाई, उड़े जहाज आकाश हवाई।
चूक गये जर्मन जी चाल, गली नहीं कुछ उनकी दाल।
रूसी को जब देखा आगे, पूँछ उठाकर जर्मन भागे।
ब्रिटिश राज की जै जैकार, दो खेवे में बेड़ा पार।
होती है यूरप में जंग, मारवाड़ का फीका रंग।
बंद हुआ सबका रुजगार, जारी हैं तो भी अखबार।
है कोयले की खान मनोहर, आये उसमें शेअर ब्रोकर।
दोनों की हो गई मिताई, ऊपर उजला भीतर काई।
कुछ दिन दोनों घूमे संग, चबूतरे का देखा रंग।
दोनों ने दोनों को जाना, जैसे नाती वैसे नाना।
उघरे अन्त न होय निबाहू, मिल बैठे जब केतू राहू।

राहू ने तब किया विचार, चलो निकालें हम अखबार।
पिता पुत्र औ गुरू पुजारी, मिलकर पहने लँहगा सारी।
भक्तों को बुत्ते में लाओ, नाचो कूदो मजे उड़ाओ।
सुनकर बोले संगी साथी, आओ खूब चलावें भाथी।
लालरंग है सबसे आला, कोयले ने कर डाला काला।
राम भरोसा हमको भारी, तीन लोक से मथुरा न्यारी।
अब केतू की सुनो कहानी, जै जै जै काली महरानी।
जो समझे सो शंख बजावे, नहिं समझे सो धक्के खावे।
धक्के मुक्के थप्पड़ खाये, तो भी डटा रहा मुँह बाये।
बाहर बने पंच सरदार, घर भीतर जूती पैजार।
राय बहादुर नये नवीन, सुनते हैं केतू की बीन।
पंचम सुर में बाजी बीन, कर दो सबको तेरह तीन।
पुलिस कमिश्नर जी महराज, पगड़ी की अब रख लो लाज।
भारत के जितने हैं यार, भेजो उनको पुल के पार।
सुनकर बोले श्री हुजूर, ले जाओ मुँह अपना दूर।
बहादुरों का नाम हँसाया, कुछ भी तेरे हाथ न आया।
नमकहरामी अब मत करो, मित्र पुराने से तो डरो।
कलकत्ते में भारी पोल, पुलिस डायरी देखो खोल।
सबके नाम हैं उसमें दर्ज, जैसा कर्तब वैसा फर्ज।
जाओ चाहे बर्मा चीन, घर बैठे पीओ शंपीन।
पर यूरप का लो मत नाम, ब्रह्मा बाबा तृप्यन्ताम।
देखो कैसा हुआ तमाशा, पंचों की सब टूटी आशा।
वध्यालय में देखो नाम, बोलो लड़को सीताराम।
निकला जब से 'पटनापूत', नये निकाले उसने सूत।
भगवत गीता मिली पुरानी, बनी सोमरस भंग भवानी।
बाबू मिस्टर जायसवाल, रखते हैं "छन्दस" का ख्याल।
महावीर विक्रम बजरंगी, आय बने हैं उनके संगी।

विष का कबहीं छोड़े धुआँ, पानी में फिर खोदें कुआँ।
मिलकर गहमर मिरजापूर, हैं "प्रताप" से रहते दूर।
सम्मेलन का देखो स्वाँग, टूट गई है उसकी टाँग।
बाहर भीतर का है रगड़ा, देव दनुज का-सा है झगड़ा।
अपनी अपनी सब हैं गाते, भानमती के जोड़े नाते।
मातमपुर्सी करना जाकर, पड़ा जोग है ऐसा आकर।
रोओ गाओ पीटो छाती, लगा सनीचर साढ़े साती।
है त्योहार मोहर्रम बड़ा, सबका जी है उसमें गड़ा।
जहाँ विराजें सुन्दर श्याम, गड़बड़ झाला उसका नाम।
नाचो कूदो तोड़ो तान, मिश्रबन्धु की देखो शान।
तीनों ने मिल तीन बनाये, मन्नन जी को वह पहनाये।
टेसू जी को करो सलाम, बस होता है खतम कलाम।

(सं० १९७१)

आये देखो टेसू राजा, बजता खूब जुझाऊ बाजा।
बाजे से निकली आवाज, उठी चाँद में सबकी खाज।
दाद खाज ने जोर दिखाया, पलट गई टेसू की काया।
काया ने माया फैलाई, सर्विया ने आग लगाई।
जर्मन ने जब धौंसा दिया, मित्रों ने तब एका किया।
उनके भी अब सुन लो नाम, जपो निरन्तर आठों जाम।
रूस, फ्रांस, अँग्रेज, इटाली, जिनके वार न जाते खाली।
बेलजियम ने बल दिखलाया, जस उसका सब जग में छाया।
उधर तुरुक असटिरिया आये, बलगर, जर्मन हाथ मिलाये।
बना त्रिशंकु ग्रीस विचारा, रानी से राजा है हारा।
कबहीं इधर तो कबहीं उधर, देखें अब वह जाता किधर।
कैसर बोला "आओ यार, चलो करें अब बंटाढार।"
हुई खूब तब नोंचा झपटी, उठा पटक औ लपटालपटी।
हैं जर्मन रावन के भाई, माया की नित लड़ें लड़ाई।

जेपलिन का भी हाल अजब है, पानी की सूरंग गजब है।
पर मित्रों की चाल निराली, लड़कर रखते अपनी लाली।
होती है मित्रों की जीत, टेसू जी हैं गाते गीत।
मरे जाय दुश्मन की नानी, मस्त रहें राजा और रानी।
झंझा की अब खिचरी चुरे, हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे।

प्रयागराज का अब्बेहूदा, जब्बलपुर में जाकर कूदा।
सम्मेलन की देख तयारी, आँखों में छाई अँधियारी।
बोला, भइअन मानो बात, नहिं तो चला अभी गुजरात।
क्यों करते हो खर्च फिजूल, होगी इसमें भारी भूल।
बड़े भाग से आये पैसे, उनको मत फेंको तुम ऐसे।
मंडप की मत करो सजावट, है कोरी यह बात दिखावट।
अच्छे नहीं दिखाऊ काम, जाने इसको सुन्दर श्याम।
सब लोगों को अवस बुलाओ, पर उनको मत याँ बैठाओ।
भोजन का मत लेना नाम, रहने को मत देना ठाम।
अपना डेरा आप करेंगे, नहीं तो उलटे पाँव फिरेंगे।
ठट्टा नहीं है हिन्दी - सेवा, कष्ट सहे सो पावे मेवा।
आये का आदर सत्कार, करता है उसको धिक्कार।
सभापती भी चुनना ऐसा, मेरे मन को भावे जैसा।
भूल चूक मत चुनो बिहारी, हुकुम चढ़ा है यह सरकारी।
सुन करके यह बात निराली, पीटी सबने बेढब ताली।

ऊँचा है परबत कैलास, मारवाड़ का उस पर वास।
जब से उस पर वास हुआ है, खाता वह तो मालपुआ है।
करे दवाई लेता दाम, तो भी उसको समझें राम।
आप बना उनकी बनवाई, सर होके संजाफ लगाई।
राय बहादुर उसको माने, पर लड़के देते हैं ताने।
जब से पकड़ गये हैं चार, तब से अधिक हुआ अधिकार।

नाम बदलवा काम बनाये, फाँसीदंड बने मुँह बाये।
समिति सहायक दूर हुई है, कुएँ की बन गई कुई है।
कष्ट निवारण नाम पड़ा है, गहरा इसमें अर्थ बड़ा है।
आसिन आया गये असाढ़, अब बलिया में आई बाढ़।
किया नाम है नूतन धारन, कर दो इसके कष्ट निवारन।
होगा नहिं तो झूठा नाम, सोचो समझो दौलतराम।

कलजुग में का नीन बड़ा है, देखो कैसा अकड़ खड़ा है।
पर जब आती उसको याद, क्वारी कन्या की फरियाद।
तब सबको है देता गाली, खोज ढूँढ़ कर आली आली।
तिलक बाल को धर्म सिखाया, धन्य धन्य है तेरी माया।
तेरी महिमा अपरंपार, जाने केवल मुन्शी यार।
मुनशी की जब फुनसी कटी, खेलें नाटक नट औ नटी।
गुप्त मैथिली प्रगट खड़ी है, सबकी उस पर नजर पड़ी है।
बोलचाल की बोली बोलै, ब्रजभाषा के पास न डोलै।
जो कहता है इसको मुरदा, उसका है लासानी गुर्दा।

नया साधु अमरीकागामी, परिव्राजक संन्यासी स्वामी।
गेरुआ बस्तर हाथ कमंडल, बगल बिराजे पुस्तक बंडल।
लेक्चर में विज्ञापन बाँटे, अखबारों को फिर फिर डाँटे।
पोथी बेचे करे कलेवा, लड्डू बरफी फल औ मेवा।
सब पर ही तुम्बा फटकारे, बाबा को भी पूत पुकारे।
मानसरोवर सुन्दर धाम, कर लो दरसन दे दो दाम।
भारत-सेवा इसका नाम, भर दे झोली पूरन काम।

(म० १९७३)

(ठ)

घृतान्दोलन

आये अब के टेसू पक्के, घीवालों के छूटे छक्के।
छक्के छूटे हुई बहार, चरबी बरसी मूसलधार।

डूबा उसमें धर्म सनातन, पोथी पत्रा वेद पुरातन।
ब्राह्मण बनिया सबने मिलकर, घी में चरबी डाली डटकर।
वही लगा ठाकुर को भोग, दूर हुआ कलयुग का रोग।
सत्यदेव के सगे पुजारी, छायी उन पर चरबी भारी।
हैं बुटबल गंटूर समान, दोनों हैं चरबी की खान।
खाया जिसने वाँ का घी, स्वर्ग गया वह जीते जी।
मारवाड़ की देखी चाल, ओढ़े सदा धर्म की खाल।
टीका चन्दन कंठी माला, गंगाजल है बड़ा मसाला।
मन आवे सो करते जाओ, चाहे जैसे टका कमाओ।
सब लोगों ने किया विचार, करो जल्द अब बेड़ा पार।
"एसोशियन" को अभी उठाओ, घीवालों को पकड़ बुलाओ।
होगा इससे इसका नाम, और बनेगा अपना काम।
पर लेने के देने पड़े, खोदे मुर्दे जो थे गड़े।
आया बसना आई वहीं, खुली पोल जो बाकी रही।
पुस्करमों ने राह दिखाई, गंगातट पर धूनी लगाई।
मिले उन्हें फिर साथी संगी, बनिया बाम्हन मोची भंगी।
तीन लोक से मथुरा न्यारी, वह भी पहुँची कर तैयारी।
फिर तो नौबत पहुँची ऐसी, हुई नहीं थी पहले जैसी।
होम हवन का भारी जोर, धूआँ धक्कड़ चारों ओर।
पञ्चों ने जब देखा रंग, बदल गया तब उनका ढंग।
जल्दी जल्दी काटी राँध, टूट गया बाम्हन का बाँध।
जेल और जुर्माना करके, बोले कुछ नहिं मारे डर के।
पञ्चों ने फिर किया प्रपंच, पीछे काम बनाकर टंच।
किया कसूर माफ है सबका, घर में ही हो बैठा दबका।
घी चीनी में बड़ी मिताई, हड्डी चर्बी दोनों आई।
जैसी चीनी वैसा घी, मन आवे सो जाकर पी।
अब छूटा पंचों का भय, बोला धर्म सनातन जय।

बड़ा बाजारू नेता

बड़े बाजार की सुन लो रीत, कुट पिट कर गाते हैं गीत।
मारवाड़ के नेता सारे, ऊपर उजले भीतर कारे।
मतलब की वह बात बिचारें, पंचायत कर पुरखे तारें।
सुसरा, साला समधी सगा, इनका चस्का सबको लगा।
बात बनावें घर में रहें, शहजोरों से कुछ ना कहें।
घरवालों पर रोब जमावें, बाहर से कुट पिट कर आवें।
सिर्फ़ नाम के हैं मरदाने, राय बहादुर बने जनाने।
पहन चूड़ियाँ घर में रहो, मारवाड़ का रस्ता गहो।
यहाँ नहीं है काम तुम्हारा, सच्चा मानो वचन हमारा।

स्वराज्य

अब स्वराज्य का देखो ढङ्ग, बिगड़ गया गोरों का रंग।
जब से छुटी वसन्ती रानी, मरी जाय गोरों की नानी।
छुत्रें ने है शोर मचाया, गला फाड़ के वह चिल्लाया।
भारतवासी हैं नादान, इनके नहीं है कुछ भी ज्ञान।
इन्हें स्वराज्य देना नहि चहिए, उलटी सीधी इनसे कहिये।
है कैसा यह अद्‌भुत खेल, मुसलमान हिन्दू में मेल।
मुसलमान हिन्दू जब लड़े, यारों की तब घी में पड़े।
इन दोनों को खूब लड़ाओ, अपना झंडा आप उड़ाओ।
आते हैं भारत के मंत्री, खड़ा करो फाटक पर संत्री।
मिले न कोइ उनसे जाकर, रह जावें दोनों मुँह बाकर।
सुनलो मित्रो राय बहादुर, सुनलो यारो खान बहादुर।
अपनी अगर भलाई चाहो, तो स्वराज्य को जल्दी ढाहो।
करो न इसमें कुछ भी देर, लायलटी का कर दो ढेर।
सुनो मुसद्दो और दलाल, बने रहो तुम नमकहलाल।

करो सदा तुम वोही काम, बनो न जिसमें नमकहराम।
हमने तुमको पोसा पाला, हमने तुमको टुकड़ा घाला।
हम हैं देव पितर तुम्हारे, हम ही राजा प्रभू तुम्हारे।
जो कुछ है सो हमीं तुम्हारे, हो गुलाम तुम सभी हमारे।
हुशियारी से करना काम, नये पुराने दोनों राम।

(संवत् १९७४)

(ड)

टेसू अबके कैसे आये, पेट फुलाये मुँह को बाये।
टेसू जी का सुन लो हाल, फीका बीता अब का साल।
मंगल ने जब दंगल ठाना, जी सुख पा घर भर इतराना।
फिर कल्याण हुआ है भाई, अंका बंका सदन कसाई।
रूप राम की देखो लीला, माँग मूँग कर खाया चीला।
चीले से निकला है तुक्कड़, कविता कामिनि लाल बुझक्कड़।
लाल बुझक्कड़ की करतूत, देखो चारों पूत सुपूत।
देवलोक से आई रंडा, डाला उसने गर्भ अंडा।
अंडे पर जब मारा डंडा, फूटा अंडा निकला संडा।
संडे की सूरत है काली, पीटो पेट बजाओ ताली।
ताली ने जब खोला ताला, कविता का हो गया दिवाला।
संडे का जब भंडा फूटा, मार दुहत्थड़ माथा कूटा।
नथा न माया डोकर राम, नहर खोदकर पहुँचा गाम।
दी पुत्रों ने उसको दुआ, कवि-कुल-कुमुद-कलाधर हुआ।
उछला कूदा दौड़ा फिरा, औंधे मुँह धरती पर गिरा।
बोला फिर वह गर्दन तान, देखो लोगो मेरी शान।
मैं हूँ काव्य कला का कुआ, मुझसा यहाँ न कोई हुआ।
तम्बाकू की खुली दुकान, रामरूप की मुझको आन।
लड़कों ने है शोर मचाया, सर पर सारा शहर उठाया।

आये दौड़े पाँचों संकर, ब्रजभाषा के शत्रु भयंकर।
बोली खड़ी करें मनमानी, 'अभिभाषण' से मर गई नानी।
उड़ें खूब अब उनके धुर्रे, हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे।
तीन लोक से मथुरा न्यारी, मैनपुरी में हुई तयारी।
महासभा का दफ्तर भारी, मेरठ से मथुरा की यारी।
बाबू मिस्टर चौबे आये, मिलकर सबने शंख बजाये।
चौबों की पंचायत कैसी, खाओ पीओ रुचि हो जैसी।
बिलपटेल का पास करेंगे, कभी किसी से नहीं डरेंगे।
जैसी पूरी वैसी रोटी, जैसी डाढ़ी वैसी चोटी।
गड्डम गड्डु औ एकाकार, महासभा का बेड़ा पार।
हुई बहस है दिन औ रात, वही ढाक के तीनों पात।
उड़े हमारे अब गुलछर्रे, हुर्रे हुर्रे हिप हिप हुर्रे।
कलकत्ते का बड़ा बजार, मनचेस्टर का खुला द्वार।
आया खूब विदेसी माल, राय बहादुर हुए निहाल।
मारवाड़ है देश हमारा, मनचेस्टर है तीर्थ हमारा।
हैं अँगरेज हमारे स्वामी, हम नहिं करते नमकहरामी।
वही हमारे पालन-कर्त्ता, वही हमारे दुख के हर्त्ता।
हम हैं उनके सगे गुलाम, झुक झुक करते उन्हें सलाम।
भारत से हमको क्या काम, हम क्यों जाने उसका नाम।
गान्धी जी जा बैठे जेल, आओ खेलें अपना खेल।
देश वेश चूल्हें में जाय, गर्म गर्म अब पीओ चाय।
सम्मेलन कलकत्ते आया, लेकिन पैसा एक न पाया।
जैसा आया वैसा गया, हुआ काम यह कैसा नया।
करो अनुग्रह नाथ विसम्भर, टालो मत अब केवल हँसकर।
है स्वतन्त्र मछुआ बाजार, आता रोज नया है तार।
है प्रताप की चाल निराली, दिन को हुआ शाम को गाली।
इसको भूँसो उसको मूँसो, जो कुछ मिले पेट में ठूँसो।

संपादक जी सफल हुए हैं, खाते नित ही मालपुए हैं।
जब तक पाओ मौज उड़ाओ, पीछे सूखे शंख बजाओ।
टेसू झेंझीं करें तमाशे, लड़के खावें खूब बताशे।
टेसू के सिर बाँधा तुर्रे, हुर्रे हुर्रे हिप हिप हुर्रे।

(संवत् १९७९)

———

नवम् प्रसून

विविध

(१)

तिलक और गांधी

तिलक मूल कौ होत है बाल तिलक है मूल ।
महाभाष्य गांधी भयौ जानि समय अनुकूल ॥

पशुपति शशिशेखर भयौ शशि को शीश चढ़ाय ।
गांधी गुन गरिमा बढ़ी तिलकहिं भाल लगाय ॥

कीन्हीं सृष्टि स्वराज की दादा तिलक-समान ।
लालन पालन करत हैं गांधी शान्ति-निधान ॥

गंगाधर के बाल औ कर्मचन्द सुत माँहि ।
चन्द्रोदय अरु मकरधुज बड़ो छोट कोउ नाँहि ॥

राखि लयौ प्रन भीष्म कौ प्रभु ने चक्र उठाय ।
भारत-पत गांधी रखत चरखा-चक्र चलाय ॥

(सं० १९७८)

(२)

नेटालप्रवासी*

भारत-अधिवासी, सुख की रासी, बुद्धि-विलासी, विज्ञवरो ।
आँखें अब खोलो, टेट टटोलो, कुछ तो बोलो, चेत करो ॥
प्रिय बन्धु तुम्हारे, सुख तजि सारे, सहें बिचारे, कष्ट बड़े ।
बालक नर नारी, हाय दुखारी, तकें तुम्हारी, राह खड़े ॥

* अफ़्रीका के निष्क्रिय प्रतिरोध के समय चन्दा माँगने के लिए लिखा गया ।

नेटालप्रवासी, भारतवासी, लै गल फाँसी, दास बने।
भोजन नहिं पावें, कोड़े खावें, क्लेश उठावें, नित्य घने॥
गांधी गुननायक, सब विधि लायक, बने सहायक, जेल गये।
पोलक अनुरागी, परहित लागी, सरबस त्यागी, कैद भये॥
नृप धनिक उदारो, साहूकारो, मन मत मारो, दान करो।
अवसर यह आया, वचन सुनाया, धन की माया, त्याग करो॥
हे कृष्ण मुरारे, जसुदा वारे, प्रभू हमारे, दया करो।
विनती यह मेरी, विपद घनेरी, करो न देरी, वेग हरो॥

(सं० १९७०)

(३)

हीरक जुबिली*

म—हरानी के राज की हीरक जुबिली होय।
हा—थ जोर विनती करैं बार बार सब कोय॥
रा—ज करत सुख सान्ति सों बीते बरिस सुसाठ।
नी—कौ अवसर जानिकैं साजत मंगल ठाठ॥
वि—लायत हू नंदन बनी जुबिली अवसर जान।
क—सि कसि कटि तूनीर सों सैनिक करत पयान॥
टो—लो टोली बाँधि कै गोरी करि करि देह।
रि—भवारन सँग डोलती जुवतीं सहित सनेह॥
या—उत्सव कों देखि कैं हरषित सकल जहान।
की—न्ह रोशनी विविध विध नाच गान अरु दान॥
ज—न धन सों पूरी रहै होय सदा कल्यान।
य—ही असीसति हैं सदा भारत की सन्तान॥

(सं० १९५४)

---

* सन् १८९७ ई०

(४)

असोस*

जय "अठावले" वीर की जय जय जय "जसवन्त"।
जय "पंजाबी" पत्र की कीरति जासु अनन्त॥
धन्य धन्य वह देस है धन्य धन्य वह ठौर।
प्रगटे जहँ जसवन्तजू बैस-वंस सिरमौर॥
महाराष्ट्र-कुल तिलकधन श्री अठावले वीर।
धन तव देशहितैपिता धन्य पुरुषवर धीर॥
छमा भीख माँगी नहीं यह कारज तव जोग।
दृढ़ता तुम्हरी देखि कै धन्य कहत सब लोग॥
तुम्हरे कारावास कौ आयो जा दिन तार।
सुनि कै भारत में छयौ घर घर सोग अपार॥
हाट बाट अरु घाट मँह जहँ लखियत जेहि ओर।
दुखित होइ सब ही कहत यह अनीति अति घोर॥
अंग्रेजन के न्याय कौ बहुत रह्यौ विश्वास।
काँप उठौ सो सुनत ही तुम्हरौ कारावास॥
न्याय पच्छ तुमने लयौ तापै पायी जेल।
समुझि परत नहिं यह कहा विधि कौ अद्भुत खेल॥
सकल जाति अरु देस में होत न्याय कौ मान।
तुम क्यों तब दंडित भये अचरज यही महान॥
नहिं अचरज की बात यह बुरे दिनन कौ फेर।
दुरदिन में ह्वै जात है रवि के रहत अँधेर॥

---

* "पंजाबी" पत्र के मालिक लाला यशवन्तराय और सम्पादक अठावले जी को क़ैद की सज़ा होने पर यह "भारतमित्र" में छपी थी। सन् १९०७ ई०।

हमरौ ही यह देस है हमरौ ही धन-धाम।
पराधीन हमहीं यहाँ हमहीं बने गुलाम॥

हमहीं भूखे रहत हैं हमहीं कौं है जेल।
आँख खोलिकै देखिये यह दुरदिन कौ खेल॥

कहा कहैं नहिं कहि सकत देखि समय कौ हाल।
रोअनहू पावत नहीं त्रासति पगड़ी लाल॥

जुरमाना अरु जेल सों, डरत रहे सब कोय।
निज दृढ़ता दिखराय तुम दूर कियौ डर सोय॥

तिलक बनर्जी आदि ने सहि सहि कारावास।
भारत-सेवा करन कौं कीन्हौं पथ परकास॥

ताकौं तुमने स्वच्छ करि दीन्हौं सुगम बनाय।
चलिहैं सेवक देस के संसय सोच विहाय॥

बिना कष्ट कछु होत नहिं कष्ट सहे सब होय।
कूपहुतें बिन कष्ट के नहिं निकसत है तोय॥

घटिहै नहिं बढ़िहै सदा तुम्हरौ मान अभंग।
खूब तपाये हेम कौ होत चौगुनौ रंग॥

देख्यौ है जा देस में कैद भये कल्यान।
कैद माहिं वसुदेव कौं मिले कृष्ण भगवान॥

आसा जातें होति है अब हमरे मन माहिं।
संकट अरु दुख कौ समय अधिक रहैगौ नाहिं॥

वही समय फिर होयगौ वही राम कौ राज।
वही प्रेम अरु एकता वही सुसाज समाज॥

चन्द सूर जौलों रहैं गंग जमुन की धार।
तौलौं तुम्हरौ विसद जस अटल रहै संसार॥

(सं० १९६४)

(५)

श्रीमालवीय जी

धन धन मालवीय महराज ।
मोहन मदन, सदन शुभ गुन को, हिन्दुन को सिरताज ॥
हम बालक अति भक्ति-भाव सों स्वागत करिहैं आज ।
बन सुपूत भारत माता को, राखी वाकी लाज ॥
देशभक्त अनुरक्त धर्म्म को पूजित सकल समाज ।
विश्वविदित विद्यालय हिन्दू, थाप्यौ तजि गृह काज ॥

(६)

प्रिन्स आफ़ वेल्स का स्वागत

दम्पति श्री जुवराज आज तुम इतहि पधारौ ।
स्वागत श्रद्धा-भक्ति-सहित हम करें तुम्हारौ ॥
आओ वेगि लाड़िले देर न तनिक लगाओ ।
हमरे हृदय पटल पै आसन अटल जमाओ ॥
राज-भक्त अनुरक्त प्रजा कौं सत्वर देखौ ।
भली भाँति सो वाके सब दुःखन कौं पेखौ ॥
भूमिकम्प पंजाब देश में भारी आयौ ।
दुसह दुःख पंजाबिन ने है तासों पायौ ॥
पुनि अकाल विकराल रूप हरसाल दिखावत ।
प्लेग पकड़ि पलमाँहि नरन कों नरक पठावत ॥
तापै कर्जनहू ने बहु विध सबहि सतायौ ।
बंग भंग करि बंगाली मन बहुत दुखायौ ॥
माटी में अधिकार हमारौ सकल मिलायौ ।
फुलर जंग ने पाछे फौजी ढङ्ग चलायौ ॥

हैं व्याकुल सब ठौर देश में नर अरु नारी।
बालकगण को होइ रही है दुरगति भारी॥
दरसन तुम्हरे पाय भये हम अति ही हरखित।
सोच फिकिर औ चिन्ता छन भर भई तिरोहित॥
बहुत दिननसों लागि रही मन मँह यह आसा।
श्री जुवराज पधारि दुःख कौ करिहैं नासा॥
करौ हमारी आसा यातें तुम अब पूरी।
फैलें चारों ओर तुम्हारी कीरति रूरी॥
हमहु तुम्हारे दरसन कौं अब फल कछु पावैं।
मन मँह मोद बढ़ाय आज यह बचन सुनावैं॥
सुखी रहौ सब भाँति सदा तुम उन्नति करियौ।
दूधन सों न्हाय नित सदा पूतन सों फरियौ॥
भारत के हित-साधन में नितही चित दीजौ।
कारी गोरी प्रजापुंज में भेद न कीजौ॥

(सं० १९६२)

(७)

स्वागत*

कलकत्ता कमनीय सदा शोभा सों पूरौ।
तहाँ तुम्हारौ आज करत है स्वागत रूरौ॥
आओ आओ वेगि महोदय विलम न कीजै।
हे बिहार के रत्न! आय अब दरसन दीजै॥
"दीपनरायनसिंह" आज हैं दीप हमारे।
लहि उनकौ परकाश होयगे कारज सारे॥
"सिंह कीर्त्यानन्द" सदा कीरत के सागर।
कालिज कौं दै दान कर्‌यौ है नाम उजागर॥

* लाट-सभा के बिहारी सभासदों के कलकत्ते पधारने पर।

हैं सतचित आनन्द सदा आरा के वासी।
पाय "सच्चिदानन्द" साँचहू गुन की रासी॥
बसी सकल के हिय "वसी अहमद" की मूरत।
इल्म तरक्की होय करौ कछु ऐसी सूरत॥
"अली माम" गुनधाम आम लोगन के प्यारे।
मुसलमान कौं करत नाहिं हिन्दुन सों न्यारे॥
लाट सभा के सभ्य महोदय जो हैं आये।
सबको स्वागत करैं आज हम मोद बढ़ाये॥
पै जब देखत हाय! आपुनी दसा निहारी।
मुख सों कढ़त न बैन ढरत नैनन सों वारी॥
जहँ प्रगटे महिपाल जनक से ज्ञानी नरवर।
चन्द्रगुप्त, चानक, अशोक, गौतम, बिम्बिसर॥
सोइ बिहार सब देसन सों विद्या में पाछे।
दरिद्रता की फटी काछनी कटि में काछे॥
भोग रह्यो है दुसह दुःख अज्ञातवास सम।
टूट गई है कमर और निकरन चाहत दम॥
यातें सब सों आज यही है विनय हमारी।
करि विद्या परचार हरौ सब सङ्कट भारी॥
जन्म लेत सो मरत रीत जग की चलि आई।
धन्य जन्म है तासु करत जो देश भलाई।
सब लोगन की लागि रही है तुम पै आसा।
सो अब पूरी करौ होय पौ बारह पासा॥

(सं० १९६६)

(८)

कर्ज़नविलाप

है सलाम अब तुझको भारत! लीजे याँ से चलता हूँ।
लाज शर्म सन्ताप शोक से पड़ा रात दिन जलता हूँ॥
सड़ी गन्ध मेरे कामों की फैल गई है चारों ओर।
हुआ अन्त को मेरी सारी पालिसी का भंडा फोर॥
पाँव रखा था जिस दिन याँ पर मन में करके व्यर्थ गुमान।
सपने में भी कभी न सोचा था होगा इतना अपमान॥
था दिमाग में मेरे तेरे हित करने का सिर्फ खयाल।
बना मुरब्बी फैला कर मीठे बचनों का भारी जाल॥
जो आया जी में कर डाला नहीं कभी कुछ किया खयाल।
तो भी इच्छा हुई न पूरी चूक गया मैं अपनी चाल॥
यह पद पाने से पहले खाली कर्ज़न कहलाता था।
लक़ब लाट का साथ नाम के तब नहिं जोड़ा जाता था॥
मेरे मुरब्बियों ने देखा होगी भूल बड़ी भारी।
वैसराय के पद का जो कोइ अदना होगा अधिकारी॥
झटपट मुझे सुफारिश करके "राइट बैरन" बनवाया।
बना अचानक लाट इसी से मन में अपने इतराया॥
बड़ा भरोसा मुझको अपनी अमित शक्ति का रहता था।
अपने को इक फूल मनोहर रत्न अनोखा कहता था॥
साथी और नायबों ने भी मुझको ऐसा जाना था।
कोई और न माने पर सर एंडरू ने तो माना था॥
है विभाग नहिं कोई ऐसा जिसमें लगा न मेरा हाथ।
कुछ दिन रहता और यहाँ तो औरों को भी लेता नाथ॥
जितने काम किये भारत में सब ही किये जोम के साथ।
पर अब तो जाना पड़ता है दाँत पीसते मलते हाथ॥

यद्यपि अन्नविहीन प्राण देती हैं भारत सन्तान।
तो भी अँगरेजों के माफिक सीख रही है विद्या ज्ञान॥
किन्तु बराबर अँगरेजों के क्या होगी भारत-सन्तान।
लोटे पड़ी गढ़े के भीतर क्यों बाहर आवे हैवान॥
वक्ता सम्पादक भारत के मुझे जरा नहिं भाते हैं।
कैसे गम खावे कोई जब मुँह पर खरी सुनाते हैं॥
इकजामिनेशन[१] उठवा के नामीनेशन[२] चलवाया।
बड़े पदों का पट्टा पूरा गोरों को ही दिलवाया॥
चाहे हों वह पूरे जाहिल मुझे नहीं इसका कुछ ख्याल।
गोरा चमड़ा हो जिसका बस पावे वह ओहदा तत्काल॥
भारतवासी हों चाहे कितने ही ढेर गुनों की खान।
कभी नहीं कर सकते हैं वह स्वेत मक्खियों का मधुपान॥
कितने पड़े अकाल और मारी ने धूम मचाई है।
लेकिन मैंने हिकमत करके खासी बचत बचायी है॥
दिल्ली में दरबार जुलूस बना के तूल कलाम किया।
दूर निकट के राजाओं ने झुक झुक मुझे सलाम किया॥
कितने राजा ऋणी हो गये कितने राजा हुए तबाह।
मेरा शौक हो गया पूरा कोई डूबे क्या परवाह॥
मुझे दबाने का किचनर ने बुरे वक्त में किया विचार।
बुरे समय में उसकी बातों पर मैंने छेड़ी तकरार॥
बराडरिक ने बुरे समय में छोड़ दिया है मेरा साथ।
बुरे समय में बंगपारटीशन में डाला मैंने हाथ॥
बुरा देश बंगाला है यह खूब बुरे हैं बंगाली।
सबसे बुरा आप मैं कर्जन सुनता हूँ सबकी गाली॥

(सं० १९६२) भारतमित्र,

---

१ Examination परीक्षा।
२ Nomination नामजदी।

(६)

बेलजियम के जातीय गीत का भाषान्तर

दासपने के दिन हैं बीते, आखिर बारी आयी है।
बेलजियम की ऊँची गर्दन, सुयशध्वजा फहरायी है।
अपने राजपाट की रक्षा, अपने बल से करो अभी।
तजो भीरुता करो वीरता, होगा सच्चा नाम तभी।
"नृप, स्वतंत्रता-विधि"* लिख, अपनी धजा पुरानी फहराओ
पद पीछे मत धरो भूलकर, विजय करो औ सुख पाओ।
राजमुकुट है जैसा वैसा, दिखलाओ साहस अनुपम।
श्रम से खुश भगवान तुम्हारे, और रक्षक वह हैं हरदम।
उपजाऊ है भूमि तुम्हारी, श्रम फल बहु गुन पाते हो।
"नृप, स्वतंत्रता, विधि" का आसन, जमा कला पर गाते हो।
वह रिपु जो थे सुहृद पुराने, प्रेम दिखाने आते हैं।
है स्वातंत्र्य जहाँ तक उसको, कंचन-सा अपनाते हैं।
बेलजियम बटेवियावासी, भातृभाव से बँध जावें।
"नृप, स्वतंत्रता-विधि" को मिलकर, ऊँचे सुर से सब गावें।
बेलजियम माता के आगे, आज प्रतिज्ञा करते हैं।
नहीं घटेगा प्रेम हमारा, दम उसका ही भरते हैं।
वह आशा औ कुशल हमारी, हृदय-रक्त उसके अर्पन।
प्रान तजें रक्षा में उसकी, है तुमसे विनती भगवन।
"नृप, स्वतंत्रता-विधि" का सब दिन करें चिह्न अब हम धारन।
घर बाहर, सुख दुख में निस दिन होय इन्हीं का उच्चारन॥

(सं १९७१)

---

* King, Liberty and Laws.

(१०)

भैरवी

प्रभु जी नृप की रच्चा कीजै ।
चिरंजीव ह्वै सब सुख भोगै,
कबहुँ न हमसों खीजै ॥
भारत को धन धान्य बढ़ै नित,
प्रजा न कबहूँ छीजै ।
जगन्नाथ राजा रानी कों,
अभयदान यह दीजै ॥

बनि आई भिखारिन तेरी ।
हिय में प्रेम भरो है मेरे मोहि बनावहु चेरी ॥
जबसों लगन लगी है तोसों खान पान बिसरे री ।
क्यों रोऊँ जब जानति दोनों बँधे प्रेम की डोरी ॥
और कछू नहिं चाहति तोसों केवल प्रीति घनेरी ।
मिलहु आय अब प्रानपियारे पूजै आसा मेरी ॥

(११)

गिलपिन*

रहता था लंदन में नामी गिलपिन नामक साहूकार ।
बड़ी थाप थी सबमें उसकी पल्टन का भी था सरदार ॥
एक रोज गिल्पिन की बीबी बोली पति से "सुनो पिया !
वत्सर बीस ब्याह को बीते नहीं कभी त्योहार किया ॥

---

* *Cowheris john Gilpin* की छाया पर ।

जिस दिन गाँठ जुड़ी थी मेरी तुमसे वह कल आता है।
इडमनटन होटल में चलकर भोजन करना भाता है॥
जीजी मेरी चिट्ठी पाते लड़के लेकर आवेगी।
फिर हम औरत बच्चों से ही गाड़ी तो भर जावेगी॥
इससे तुम तो पीछे आना घोड़े पर होकर असवार।
है इच्छा यह मेरी प्यारे! अब तुम अपना कहो विचार॥"
गिलपिन बोला "नारि जाति में तू ही मुझको है प्यारी।
कर डालूँगा इससे पूरी 'तेरी इच्छा मैं सारी॥
मैं बजाज हूँ बड़ा बहादुर जाहिर है दुनिया में नाम।
है रँगरेज मित्र इक उससे लूँगा घोड़ा और लगाम॥"
बीबी बोली "बहुत ठीक, पर है शराब का ऊँचा दाम।
घर की मदिरा ले जाऊँगी चल जावेगा जिससे काम॥"
कमखर्ची बीबी की लखकर गिलपिन मन में हुआ मगन।
बड़ी खुशी के मारे उसने किया तिया का मुख चुम्बन॥
हुआ सवेरा, आई बग्घी, हुई खड़ी पर घर से दूर।
जिससे कोई यह नहिं समझे बीबी के हो गया गरूर॥
जा बैठी सबको ले बीबी गाड़ी में करके उत्साह।
थी उतावली किसी तरह से तै करने को जल्दी राह॥
चाबुक लगते घोड़े दौड़े, दौड़ी गाड़ी उनके संग।
छह के छह थे परमानन्दित नहीं समाते फूले अंग॥
चढ़ा अश्व पर ज्यों ही गिलपिन आये त्यों ही ग्राहक तीन।
कूद पड़ा वह चटपट अपने मन को करके तनक मलीन॥
जरा देर होने के कारण यद्यपि दिल दुख पावेगा।
पर ग्राहक को तज कर जाना उससे अधिक सतावेगा॥
उतर पड़ा घोड़े से गिलपिन मन में करके यही विचार।
जो कुछ माँगा देकर उसने किया ग्राहकों को चट पार॥

(अपूर्ण सं० १९६७)

(१२)

प्रेम

प्रेम प्रेम सब कोइ कहै, प्रेम न जानै काय ।
बिना प्रेम जानै कहौ, मुक्ति कहाँ तैं होय ॥
"हम तौ जोगी प्रेम के, प्रेम हमारौ देस" ।
माला फेरत प्रेम की, करौं प्रेम उपदेस ॥
प्रेमाचारज कृष्ण हैं, प्रेमरूप नँदलाल ।
प्रेमरूप कौ ध्यान करि, गोपी भईं निहाल ॥
नेम नहीं है प्रेम में, यही प्रेम की रीत ।
भये प्रेम परभाव तें, कृष्ण गोप के मीत ॥
प्रेम पालिबो कठिन है, लोक कहनि यह ठीक ।
यातैं सोचि बिचारि कैं, प्रेम जोरिबौ नीक ॥
विरही विसम वियोग में, मरत कहौ क्यों रोय ।
अँसुआ डारे हीय की, आगहु सीतल होय ॥

(सं० १०५७)

(१३)

लोरियाँ

(क)

मामा घर लाला जाता है ।
रहना याँ न उसे भाता है ॥
माँ से उसकी हुई लड़ाई ।
भौहें उसने खूब चढ़ाई ॥
रो रो आँखें की हैं लाल ।
फरक रहे हैं दोनों गाल ॥

अब मामा के घर जावेगा।
मन मानेगा सो खावेगा॥
सुन्दर पहनेगा पोशाक।
जिसको देख लगेगी ताक॥
चढ़े पालकी लाला आये।
भूरी बिल्ली साथ बिठाये॥
मामा मामी नाना नानी।
वार वार के पीवें पानी॥
लाला खावे खूब मिठाई।
बिल्ली पीवे दूध मलाई॥
कोई चूँ भी नहिं करता है।
घर भर लाला से डरता है॥

(ख)

बोलो जी लाला जी बोलो।
टुक तो अपना मुखड़ा खोलो॥
लाओ एक मिट्ठी दो भैया।
आ लूँ तेरी खूब बलैया॥
आओ जी लाला जी आओ।
लो यह दूध जलेबी खाओ॥

(ग)

एक दो तीन।
रोज बजाओ बीन॥
दो तीन चार।
खाओ खूब अनार॥
तीन चार पाँच।
साँच में क्या आँच॥

चार पाँच छह।
अच्छी बातें कह॥
पाँच छह सात।
खाओ दूध औ भात॥
छह सात आठ।
घोखो अपना पाठ॥
सात आठ नौ।
खेत में उपजे जौ॥
आठ नौ दस।
खेल करो अब बस॥

(स० १९६३)

(१४)

कविकीर्त्तन*

रसिक हरीपरसाद सदा कविता-रस-भोगी।
गुरु के विसम वियोग बन्यौ है हरी वियोगी॥
"कवीकीर्त्तन" कृती लसत कलिका सम सुन्दर।
लहत अमित आनन्द निरखि जाकौं मन मधुकर॥

(सं० १९८०)

(१५)

"यशवन्त यशोभूषण"†

जस भूसन जसवन्त कौ रच्यौ मुरारीदान।
ताकौं धारन करन हित अभिलासी मम प्रान॥

(स० १९५७)

---

* श्री वियोगी हरि जी लिखित पद्यमयी पुस्तिका पर सम्मति।

† जोधपुर के कविराजा मुरारिदान ने यह दोहा पढ़ उक्त पुस्तक भेजी थी।

(१६)

रसकुसुमाकर*

"रसकुसुमाकर" की उड़ी मधुर गंध चहुँ ओर।
मतवारौ है, पानहित मधु मलिन्द मन मोर॥

सम्मति

'रसकुसुमाकर' कर करत मो मन भयौ अनन्द।
मधु कौ लोभी मधुप ज्यौं पाय मधुर मकरन्द।
लोचन श्रवनन में रह्यौ तुमुल जुद्ध महराज।
ताकौं मेट्यौ आनकरि 'रसकुसुमाकर' आज।
काव्य महोदधि अगम अति कोसलेस यहि हेतु।
परम परिश्रम करि रच्यौ यह कुसुमाकर सेतु।
परिपाटी नूतन सुभग संग्रह सरस ललाम।
छवि अनुपम दृष्टान्त जुत ग्रन्थ बन्यौ अभिराम॥

(सं० १९५७)

(१७)

कुण्डलियाँ†

श्री राधा बाधा हरनि नेह अगाधा साथ।
निसक्रिय नैन निकुंज में नचौ निरंतर नाथ।
नचौ निरंतर नाथ हाथ इक चरखा लीजै।
सादी खादी धारि सदा सत्याग्रह कीजै।

---

* अयोध्या-नरेश ने यह दोहा पढ़ कर स्वरचित "रसकुसुमाकर" की एक प्रति भेजी थी।

† दुलारे दोहावली पर।

लहि स्वराज सुख मूल ऐक्यमय प्रीति अगाधा।
सविनय आज्ञाभंग करौ मत तब श्रीराधा॥१॥

(सं० १९८९)

सतसैया के दोहरे चुने जौहरी हीर।
जोतिभरे तीछन खरे अरथ देत गंभीर।
अरथ देत गंभीर सरस भाषा अति सुन्दर।
ललित मनोरम भाव भरी रचनाहू रुचिकर।
सदा सराहत ताहि रसिक साँचे परखैया।
लहौ काव्य आनन्द पढ़ौ पूरी सतसैया॥२॥

सिन्धु मथैं सुरही लही नैक जु सतजुग माहिं।
सहज सुलभ सोई सुधा सबै समें सब काहिं।
सबै समैं सब काहि सुलभ वसुधा पै सोई।
सरस सुधा सरसाय जगत मोहति है जोई।
भेद भाव बिसराय लहत देवासुर सब ही।
है थोथी यह बात मथे सिन्धु सुरही लही॥३॥

(सं० १९९१)

(१८)

जय कन्हैयालाल की*

भादों बदी आठें निसि रोहिन नछत्र माँहि
नन्द घर भीर भई भारी ग्वालबाल की।
दूर्वा दधि अच्छत औ फूल फल पान लयैं
आरती उतारैं छवि छाई हेमथाल की।

* सम्मेलन-पत्रिका

बीन कौं बजावैं राग रागिनी अलापैं सब
गावैं अरु नाचैं गति देख सुरताल की।
गोपी-सुख-कन्द भयौ वृन्दावन चन्द भयौ
नन्द के अनन्द भयौ जय कन्हैयालाल की ॥१॥
(सं० १९७७)

जबतैं सिधारे श्याम खबर न लीन्ही कबौं
सुध बिसराई निज प्यारे ग्वालबाल की।
वृन्दावन भूलि गये कालिंदी-कदम्ब-कुञ्ज
बंसीवट पीतपट गति सुरताल की।
गीता के गयान भूले मुरली की तान भूले
राधिका के मान भूले हत्या शिशुपाल की।
कहाँलौं गिनाऊँ तुम सबही बिसारि बैठे
हम तौ अबहुँ कहें जय कन्हैयालाल की ॥२॥
(सं० १९७८)

साहस नहीं है अब, रन में जूझि जाने का,
मार मार मक्खी खाल, खैंचते हैं बाल की।
काकुल बनाते माँग, काढ़ते मुड़ाते मूँछ,
पौडर लगाते छवि, छीलते हैं गाल की।
साहब सलाम बस, याद रखते हैं सदा,
भूल जाते सचमुच बात जय गुपाल की।
स्वारथ में फँसे हम, कैसे कहें बार बार,
नन्द के अनन्द हुआ जय कन्हैयालाल की ॥३॥
(सं० १९७९)

WELCOME*

(१९)

वेलकम मिस्टर मेरियट, मजिस्ट्रेट मुंगेर
आवहु इतहि अनन्द सों करहु न तनिकौ देर
करहु न तनिकौ देर आय यह आसन लीजै
निज कर कमल बढ़ाय पारितोषिक यह दीजै
जगन्नाथपरसाद यही चाहत हैं हरदम
देय उच्च पद ईस होय नित तेरी वेलकम।

(सं० १९५०)

(२०)

मुबारकवाद†

दोहा

वैद्यनाथ औढर ढरन, रिद्ध सिद्ध के मूल
राजा पद्मानन्द के, रहैं सदा अनुकूल।
गुरु, वैद्य, भूपति निकट, रीतो हाथ न जाय
यातें कछु दोहे नये लायो रुचिर बनाय।
कहीं करन हरिचन्द्र की कथा पुरानन माँहि
पै तेरी समता करन उनहूँ छमता नाहिं।
बन्देली दरबार तें कोऊ विमुख न जाय
जो माँगे सोई मिले राखी रीत बनाय।

---

* मुंगेर जिला स्कूल के पारितोषिक वितरणोत्सव के समय पढ़ा गया। वेलकम-स्वागत।

† स्वर्गीय बन्देली-नरेश राजा पद्मानन्दसिंह बहादुर को "क़ैसर हिन्द" पदक मिलने पर।

कल्पवृक्ष कलिकाल कौ बन्देली भूपाल
जाकी शीतल छाँह में गुनिगन होत निहाल ।
लखि अकाल विकराल में तेरो दान विराट
तमगा "कैसर हिन्द" कौ पठयो करजन लाट ।
मन मेरो पुलकित भयो सुनि के यह संवाद
जगन्नाथ यातें तुमहिं देत मुबारकबाद ।

(सं० १९५७)

(२१)

सोरठा

कृष्णानन्द उदार, हिन्दी हित-साधन करत ।
दाता राजकुमार, गौरीनाथ सहाय हैं ॥
गुनिजन प्रेमाधार, जय जय कृष्णानन्द की ।
बन्देली परिवार, रहै सदा आनन्दमय ॥

(सं० १९९३)

(२२)

वैद्यनाथधाम*

उन्निस सौ अड़सठ विदित, संवत् विक्रम भूप ।
सोमवार फागुन बदी, दसमी तिथी अनूप ॥
जगन्नाथपरसाद है, चतुर्वेदि जुत नाम ।
आयौ दरसन करन हित, बैजनाथ के धाम ॥
जो कोउ मेरे बंस कौ, अब आवै यहि धाम ।
सो प्रताप द्वारिहिं सदा, पूजै सहित प्रनाम ॥
सिंहद्वार के जो अधिकारी, पंडा वही हमारे द्वारी ॥

---

* वैद्यनाथ धाम के पण्डे की वही से ।

(२३)

पुरी*

जगन्नाथ के दरस कों, जनन्नाथपरसाद ।
आये पुरी पवित्र में, मन में करि अहलाद ॥
माता, दारा, सुत, सुता, भागनेय वधु एक ।
दास भिखारी संग लै, पहुँचे सहित विवेक ॥
उन्निस सौ अड़सठ विदित, संवत विक्रम भूप ।
भौमवार फागुन सुदी, तृतिया तिथी अनूप ॥

(२४)

हरद्वार

पंडा मोतीराम जो, पोखरिया सरनाम ।
मानत हैं पंडा इनहिं, करिके विनय प्रनाम ॥
जो कोउ मेरे बंस को, अब आवै हरद्वार ।
पूजै सो इनकों सदा, बहु विध बारंबार ॥
(सं० १९९३)

(२५)

गया

पंडा नहीं हमारा मुर्दा । है उसका लासानी गुर्दा ॥†

(२६)

नित नवीन रचना रचौ, गाओ गोप गुपाल ।
मुदमंगल मंडित रहो, महतों मोहनलाल ॥

---

* जगन्नाथपुरी के पण्डे की वही से ।

† पण्डे का नाम रामलाल गुर्दा है ।

(२७)

कलकत्ता मारवारी एसोसियेशन

मा—र्त्तण्ड सम उदित है, करत अँधेरो दूर।
र—हन न देहै एकहू, मूरख हिय कौ सूर॥
वा—र वार उन्नति करै, ज्यौं दुतिया को चन्द।
री—ति सुनीति चलाइहै, करि कुरीति कों बन्द॥
ए—क कुरीति न राखिहै, करिहै प्रेम-प्रचार।
सो—भा वैश्य सुजाति की, करै सदा विस्तार॥
सि—च्छा दिच्छा देति है, सत्य धरम फैलाय।
ये—ते काज सँवारिहैं, जदुनन्दन ब्रजराय॥
श—क्ती भक्ती नित बढ़ै, बढ़ै बनिज कौ मूल।
न—टवर मुरली कर गहे, रहे सदा अनुकूल॥

धन्य धन्य यह दिवस है, धन्य धन्य यह ठौर।
जहाँ विराजत आज हैं, वैश्य बंस सिरमौर॥
वैश्य वंस सिरमौर, करी अति ही चतुराई।
निज उन्नति के हेतु, सभा यह सुभग बनाई॥
लखि युवकन उत्साह, भयो मन मेरो पुलकित।
यातें यही असीस होय, नित उन्नति समुचित॥

(स० १९५६)

(२८)

क्रिसमस कार्ड

आया क्रिसमस सुख का मूल,
सोच फिक्र सब जाओ भूल।
करो मुदित हो सुख औ चैन,
साँझ सवेरे दिन औ रैन।

नये साल की हुई अवाई,
हम देते हैं तुम्हें बधाई।
फले तुम्हें यह नूतन वर्ष,
मिलै विपुल वैभव उत्कर्ष।

(सं० १९६७)

(२९)

आलिङ्गन*

आलिङ्गन तव प्रेममय, भयो समय अनुकूल,
धन्यवाद यातें विपुल, कृपया करौ कबूल।
है अब मेरी ओर तें, आलिङ्गन बहु बार,
औ असीस सुभकामना, कीजै अंगीकार।

(सं० १९६७)

(३०)

"युवक"†

युवक हमारी शक्ति हैं, युवक हमारे प्रान।
'युवक' जगत में जस लहै, करे देस कल्यान॥
युवकों पर ही है लगा, भारत भू का ध्यान।
करें पूर्ण उद्देश्य सब, 'युवक' कृष्ण भगवान॥

(सं० १९८८)

---

* एक मित्र के "आलिङ्गन पत्र" के उत्तर में।
आलिङ्गन पत्र = क्रिसमस कार्ड।

† पटने से निकलनेवाले अस्तंगत "युवक" मासिक पत्र के लिए।

(३१)

"बालक"*

बालकगन विकसित करत, 'बालक' बीन बजाय।
विहँसत, बोलत वचनवर, बाल विनोद बढ़ाय॥
बढ़ै वीरता, बन्धुता, विद्या, बल, विज्ञान।
विजयी वर बालक बनें, करें देस कल्यान॥
ब्रह्मचर्य्य, बानी विमल, बाढ़ै विभव विहार।
व्रजवल्लभ विनती यही, बहु विधि बारंबार॥
"बालक" के पालक रहें, जगनायक जगदीस।
विचरें बाधा विघ्न विन, मेरी यही असीस॥
(स० १९८८)

बलशाली "बालक" बने, वर विजयी विद्वान।
विभव, बड़ाई, वीरता, बढ़ै बुद्धि विज्ञान॥
(स० १९९३)

(३२)

स्थान परिवर्त्तन

"प्रेम-पुष्प†" सम्पादक प्रियवर।
इतनी कृपा करौ तुम हम पर॥
'प्रेम-पुष्प' मत भेजियौ, नीचे के सिरनाम।
वाहि छाँड़ि सनिवार कौं, आयौ नूतन धाम॥

---

* लहेरियासराय (दरभंगा) से निकलनेवाले "बालक" मासिक पत्र के लिए।

† कलकत्ते से निकलनेवाला अस्तंगत पद्यमय साप्ताहिक पत्र। इसके सम्पादक और संचालक गोस्वामी गोवर्द्धनलालजी थे।

रोड हरीसन जानिये, सौ नम्बर परमान।
यातें इत ही भेजियौ, 'प्रेम पुष्प' कौ दान॥
मुदित होत मन मधुप है, 'प्रेम पुष्प' कों पेखि।
बिन जाके कल ना परै, कुसुम हजारन देखि॥
"प्रेम पुष्प" पुलकित करत, मन मधुकर कों आय।
जगन्नाथ याते लिखत, पत्री पद्य बनाय॥
(सं० १९७५)

(३३)

"प्रेम पुष्प" सम्पादक प्यारे।
दिली दोस्त तुम सदा हमारे॥
करो कृपा अब इतनी हम पर।
नया ठिकाना रक्खो लिखकर॥
छोड़ हरीसन रोड को, आये मुक्ताराम।
नम्बर पूरे पाँच हैं, काली तल्ला धाम॥
(सं० १९७५)

(३४)

थियेटर के गीत

(बँगला नाटक से)

हाँ हाँ तेरी किसमत फिरी।
सुख से रहेगी, गाड़ी चढ़ेगी, बेगम बनेगी, तू तो निरी॥
गाना सुना तू, नखरे दिखा तू, उल्लू बना तू, रह के घिरी।
यारी करेगी, पाकिट भरेगी, सौतन जरेगी, कदमों गिरी॥

(३५)

पीलू

अद्‌भुत नारि की मुसकान।
सुधा गरल जामें हैं दोनों, जाको बहुत प्रमान॥
जिअत बचत है कोऊ जासों तजत कोऊ है प्रान।
जो जानत हम समझत नारिन सो है निपट नदान॥
लागी नजर नारि सों जाकी सो फिरि करै कहा न॥

(३६)

झिंझोटी—बिहाग।

सखीरी मन मेरो घबरात।
भोली भाली गौरी मेरी कल कैलासहिं जात॥
रवि शशि को नहिं उदय जहां है अँधियारो दिनरात।
भूत पिशाच रहें नित घेरे बाहन बैल लखात॥
माँगत भीख, रहत नित नंगा भसम लपेटे गात।
कैसे भोला रखिहै जाको भांग धतूरा खात॥

(३७)

(डी० एल० राय के बँगला मेवाड़पतन नाटक से)

अद्‌भुत प्रेम को व्योहार।
प्रेम किये नर परवश होवै,
पर पै निज अधिकार॥
प्रेम लिये नहिं बिगरत कछु है,
दिये नाहिं संहार।
प्रेमहि सों रवि शशी उगत हैं,
फूलत फूल हजार॥

पौन चलत, प्रेमहि को गावत,
पंछी जय जयकार।
नभ सों सागर मिलत और नभ
सागर मिलत अपार॥
प्रेमहि सों पत्थर हूँ पिघलत,
बहत नदी की धार।
सरग लोग पृथिवी पै उतरत,
पृथी चढ़त सुर द्वार॥
प्रेम गीत गूँजत नभ, छाई,
प्रेम किरन संसार।
प्रेमी बनहु वेग अब प्यारे,
प्रेम जगत को सार॥

(३८)

बन बंसी बजावत बनवारी।
देह गेह को नेह न राखत,
नीर छीर की सुधि बिसरावत,
वंशी सुनि बन कों ही धावत,
हैं व्याकुल ब्रज की नारी॥
चहक उठीं कुंजन में चिरियाँ,
लागी चलन वायु यहि बिरियाँ,
चटक उठीं फूलन की कलियाँ,
खूब बनी हैं मतवारी॥
चन्द किरन जमना में गेरत,
राधा राधा वंशी टेरत,
राधा भौचक इत उत हेरत,
कोयल कूक रही डारी॥

ह्वै व्याकुल निकसीं सब वामा,
तजि तजि के निज घर को कामा,
देखन चलीं चतुर घनश्यामा,
है कैसो वंशीधारी ॥

(३६)

दरसन सों पुलकित जग सारो।
कोमल कर परसत ही तेरो
हुलसत हृदय हमारो ॥
शुन्य लोक सब पुण्य भरित हैं
गुंजित हैं दिशि चारो।
गगन मगन ह्वै बरसत मधु है
मधुकर मन मतवारो ॥
फूलत फूल विपिन है विकसित
नदियन नीर निहारो।
सुधा सार शतधा ह्वै टपकत
रवि शशि को उजियारो ॥
अरुन बरन है कमल चरन पुनि
केश दाम है कारो।
लागो रहत देह में मारुत
नित मलयागिर वारो ॥
कर सोहत फूलन की माला,
अधर माधुरी डारो।
नव वसन्त को भवन भव्य है,
सुन्दर सुखद सँवारो ॥

(४०)

सोच करहु अब मत मनमाँहीं ।
सोच किये कछु बनिहै नाहीं ॥
देश गये दुख है कछु नाहीं ।
बनहु मनुष्य फेर जग माहीं ॥
औरन पै क्यों दोष लगावत ।
घर ही में जब बैर बढ़ावत ॥
जौ चाहत निज दशा सुधारन ।
फूट बैर छल करहु निवारन ॥
मिलि रहहु भाइन सों भाई ।
भूलहु अपनी और पराई ॥
सबकों अपनो भाई मानहु ।
सकल जगत कों निज घर जानहु ॥
रिपहू में जो होय महाजन ।
वाको करहु सु तन मन अरपन ॥
मित्रन में जेहि कपटी पावहु ।
ताको तुरतहि दूर भगावहु ॥
यातें बड़ा शत्रु जग नाहीं ।
यासों बचि के रहहु सदा ही ॥
जग में पाप पुण्य की सेना ।
इन दोउन में कबहु बनेना ॥
पुण्य सैन्य सों करहु मिताई ।
पाप सैन्य को देहु भगाई ॥
पक्ष सदा धर्महि को गहिये ।
शरण सदा ईश्वर की रहिये ॥
देश जाय कछु चिन्ता नाहीं ।
बनहु मनुष्य फेर जग माहीं ॥

(४१)

सोइ चन्द्रबदन मोहि भावत है।

करत प्रकाशित जो बसुधा कों,
मधुर रूप दरसावत है॥
पास रहत जब, खिलत चाँदनी,
दूर भये तम छावत है।
चन्दा जात, जातना सौरभ
फूलन सों जो आवत है॥
समझ परत नहिं भेद कहा है,
कोयल कूक सुनावत है।
वाको बिना लगत जग सूनो,
मन रहि रहि घबरावत है॥

(४२)

प्यारे कहि न सकी कछु हाय।

कितनों मैं चाहति तोहि प्रीतम,
सकी न सोउ बताय॥
लगी कहन, गरौ भरि आयो,
मौन रही पछताय।
मन की बात रही है मन में
करौं सु कौन उपाय॥
मुँह नहिं खुल्यो, फटति जो छाती,
तौ मैं देति दिखाय।
तेरी मोहन मूरति मेरे
हिय में रही समाय॥

(४३)

डोलकिन स्वागत*

दोहा

रेली ब्रादर फर्म है, जाहिर सकल जहान।
तामें ए० सी० डोलकिन, सज्जन चतुर सुजान ॥१॥
चपड़ा, चावल औ चिनी, तथा बटन कौ काम।
है जिम्में इनके सदा, इनके हाथ लगाम ॥२॥
निकलायगी[1], इसकर[2] मगा, साथी इनके दोय।
वे ऊ सज्जन अति चतुर, मुदित रहत सब कोय ॥३॥
मिस्टर निउमन[3] हैं भले, लेत नमूना जाय।
पास करावत वेग ही, लेते माल तुलाय ॥४॥
रेली ब्रादर फर्म सों, काम करत जो कोय।
वाको काहू भाँत कौ, कष्ट कबहुँ नहिं होय ॥५॥
होत रह्यो पहले हियाँ, खूब रजन कौ काम।
भये धनी कितने जने, करि करि पूरो काम ॥६॥
नफा भयौ छोटेन कों, बड़े सहे नुकसान।
ताकों तुमने रोकि के, कीन्हीं कृपा महान ॥७॥
तुम्हरे सदव्योहार सों, सुखी रहत सब कोय।
जो आवत तव सरन में, विमुख गयौ नहिं सोय ॥८॥
मामा गिरिधरलाल जब, पड़े रहे बीमार।
तब भ्राता ने करि कृपा, देख्यो तिन्हें पधार ॥९॥

* A. C. Dulcken—राली ब्रादर्स (कलकत्ता) के Shellac Dept. का बड़ा साहब।

(1) A. P. Necolaidies. (2) C. M. Scaramanga. (3) Newman.

सौंप्यो मामा ने हमें, तव भ्राता के हाथ।
लगे करन वह जबहितें, सौदा हमरेहु साथ ॥१०॥
तुमहूँ हियाँ पधारि के, कीन्हीं उचित सहाय।
धन्यवाद यातें तुमहिं, देत सदा हरखाय ॥११॥
(सं० १९६३)

(४४)

मिलत एक दुख होत है, बिछुरत इक दुख होय।
दुलकिन तुम्हरो गमन सुनि, भई अवस्था सोय ॥१॥
सीधो सरल सुभाव है, नहिं जानत छल छन्द।
जबतें तुम आये हियाँ, दीन्हों सबहि अनन्द ॥२॥
उपकारी, उत्साह जुत, धीर, चतुर, गुनवान।
साँचो, न्यायी, निष्कपट, सुजन, सुशील, सुजान ॥३॥
व्योपारी, दल्लाल अरु, जो आये तव पास।
सो नहिं लौटे विमुख ह्वै, पूजी तिनकी आस ॥४॥
मँझले मामा जब पड़े, पारसाल बीमार।
देख्यो तिन्हें मकान पर, तुमने स्वयं पधार ॥५॥
मोकों शोक-समुद्र में, मामा गये विहाय।
तुमने हाथ बढ़ाइ के, लीन्हों मोहि बचाय ॥६॥
मैं कृतज्ञ तुम्हरो बहुत, कहूँ सत्य यह बैन।
माला तुम्हरे नाम की, फेरत हूँ दिन रैन ॥७॥
जन धन सों पूरे रहहु, होइ सदा कल्यान।
सुखी रहहु सब भाँत सों, उन्नति होइ महान ॥८॥
ऊपर बैठि जहाज के, पाइ वायु अनुकूल।
जगन्नाथपरसाद कों, मत जइयो तुम भूल ॥९॥
(सं० १९६४)

(४१)

यह परिवर्तनशील जगत नित, रंग नवीन बदलता है।
जो सूरज पच्छिम में छिपता, पूरब वही निकलता है॥
बिगड़े बनते, बिछुड़े मिलते, अवनत उन्नत होते हैं।
दुख सुख का चक्कर है चलता, हँसते वह जो रोते हैं॥
मंजुल मधुर मिलन का स्वागत, करके निज कर्तव्य करो।
नहीं कामना फल की रखो, देश-प्रेम को चित्त धरो॥

इति शुभम्।